RAJASTHAN
CET 10+2
सम्पूर्ण कोर्स
RAJASTHAN CLASSES
YouTube Website
- AADARSH SIR

CET 10+2 Level
निशुल्क कोर्स
अब करें दमदार तैयारी
LIVE / PDF / NOTES
Free Online Platform

सभी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए
राजस्थान क्लासेज

राजस्थान सामान्य ज्ञान
वन लाइनर प्रश्न-उत्तर
500+ क्लिक करें एवं पढ़ें

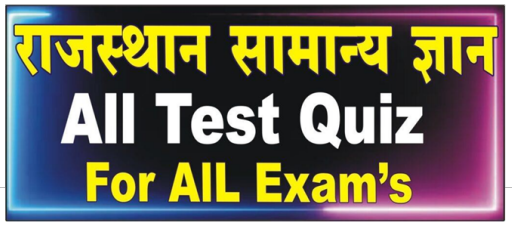

Visit Website

www.rajasthanclasses.in

Hindi Grammar

भाषा एवं व् याकरण

सामाजिक प्राणी होने के नाते मनुष्य को परस्पर सर्वदा विचार विनिमय करना पड़ता है । कभी वह सिर हिलाने या संकेतों के माध्यम से अपने विचारों या भावों को अभिव्यक्त कर देता है तो कभी उसे ध्वनियों , शब्दों एवं वाक्यों का सहारा लेना पड़ता है । इस प्रकार यह प्रमाणित हैं कि भाषा ही एक मात्र ऐसा साधन है , जिसके माध्यम से मनुष्य अपने हृदय के भाव एवं मस्तिष्क के विचार दूसरे मनुष्यों के समक्ष प्रकट कर सकता है और इस प्रकार समाज में पारस्परिक जुड़ाव की स्थिति बनती है । यदि भाषा का प्रचलन न हुआ होता तो बहुत संभव है कि मनुष्य इतना भौतिक , वैज्ञानिक एवं आत्मिक विकास भी नहीं कर पाता । भाषा न होती तो मानव अपने सुख - दुःख का इजहार भी नहीं कर सकता । भाषा के अभाव में मनुष्य जाति अपने पूर्वजों के अनुभवों से लाभ नहीं उठा सकती ।

भाषा शब्द संस्कृत के ' भाष् ' से व्युत्पन्न है । ' भाष् धातु से अर्थ ध्वनित होता है - प्रकट करना । जिस माध्यम से हम अपने मन के भाव एवं मस्तिष्क के विचार बोलकर प्रकट करते हैं , उसे ' भाषा ' संज्ञा दी गई है । भाषा ही मनुष्य की पहचान होती है । उसके व्यापक स्वरूप के सम्बन्ध में कहा जा सकता है कि - " भाषा वह साधन है जिसके माध्यम से हम सोचते हैं और अपने भावों / विचारों को व्यक्त करते हैं । "

परिवर्तन प्रकृति का नियम है । समय के साथ - साथ भाषा में भी परिवर्तन आता रहता है । इसी कारण संस्कृत , पालि , प्राकृत , अपभ्रंश आदि आर्य भाषाओं के स्थान पर आज हिन्दी , राजस्थानी , गुजराती , पंजाबी , सिंधी , बंगला , उड़िया , असमिया , मराठी आदि अनेक भाषाएँ प्रचलित हैं । भारत की राजभाषा हिन्दी स्वीकारी गई है ।

✺ वर्ण विचार

किसी भाषा के व्याकरण ग्रंथ में इन तीन तत्त्वों की विशेष एवं आवश्यक रूप से चर्चा / विवेचना की जाती है।

1. वर्ण
2. शब्द
3. वाक्य

हिन्दी विश्व की सभी भाषाओं में सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा है। हिन्दी में **44 वर्ण** हैं, जिन्हें दो भागों में बांटा जा सकता है - स्वर और व्यंजन।

✸ स्वर

ऐसी ध्वनियाँ जिनका उच्चारण करने में अन्य किसी ध्वनि की सहायता की आवश्यकता नहीं होती, उन्हें स्वर कहते हैं। स्वर ग्यारह होते हैं - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, ऋ। इन्हें दो भागों में बांटा जा सकता है-

- ह्रस्व
- दीर्घ

ह्रस्व स्वर - जिन स्वरों के उच्चारण में अपेक्षाकृत कम समय लगे, उन्हें *ह्रस्व स्वर* कहते हैं।

दीर्घ स्वर - जिन स्वरों को बोलने में अधिक समय लगे उन्हें *दीर्घ स्वर* कहते हैं। इन्हें मात्रा द्वारा भी दर्शाया जाता है। ये दो स्वरों को मिला कर बनते हैं, अतः इन्हें संयुक्त स्वर भी कहा

जाता है।

आ , ई , ऊ , ए , ऐ , ओ , औ दीर्घ स्वर हैं।

स्वरों के मात्रा रूप

अ - कोई मात्रा नहीं

आ - ा

इ - ि

ई - ी

उ - ु

ऊ - ू

ए - े

ऐ - ै

ओ - ो

औ - ौ

ऋ - ृ

✺ व्यंजन

जो ध्वनियाँ स्वरों की सहायता से बोली जाती हैं , उन्हें *व्यंजन* कहते हैं। जब हम क बोलते हैं तब उसमें क् + अ मिला होता है। इस प्रकार हर व्यंजन स्वर की सहायता से ही बोला जाता है। इन्हें पाँच वर्गों तथा स्पर्श , अन्तस्थ एवं ऊष्म व्यंजनों में बाँटा जा सकता है।

✸ स्पर्श व्यंजन

क वर्ग - क , ख , ग , घ , (ङ)

च वर्ग - च् , छ , ज , झ , (ञ)

ट वर्ग - ट , ठ , ड , ढ , (ण)

त वर्ग - तु , थ , द , ध् , (न्)

प वर्ग - प , फ , ब , भ् , (म्)

✸ अन्तस्थ व्यंजन

य , र , ल , व

✸ ऊष्म व्यंजन

श् , ष , स् , ह

✸ संयुक्ताक्षर व्यंजन

इसके अतिरिक्त हिन्दी में तीन संयुक्त व्यंजन भी होते हैं |

क्ष - क् + ष्

त्र - त् + र्

ज्ञ - ज् + ञ्

हिन्दी वर्णमाला में **11 स्वर** और **33 व्यंजन** अर्थात् कुल 44 वर्ण हैं तथा तीन संयुक्ताक्षर हैं |

✺ वर्णों के उच्चारण स्थान

भाषा को शुद्ध रूप में बोलने और समझने के लिए विभिन्न वर्णों के उच्चारण स्थानों को जानना आवश्यक है ।

क्र.सं.	वर्ण	उच्चारण स्थान	वर्ण ध्वनि का नाम
1.	अ , आ , क वर्ग और विसर्ग	कंठ कोमल तालु	कंठ्य
2.	इ , ई , च वर्ग , य , श	तालु	तालव्य
3.	ऋ , ट वर्ग , र् , ष	मूर्धा	मूर्द्धन्य
4.	लृ , त वर्ग , ल , स	दन्त	दन्त्य
5.	उ , ऊ , प वर्ग	ओष्ठ	ओष्ठ्य
6.	अं , ङ , ञ , ण , न् , म्	नासिका	नासिक्य
7.	ए , ऐ	कंठ तालु	कंठ - तालव्य
8.	ओ , औ	कंठ ओष्ठ	कठोष्ठ्य
9.	व	दन्त ओष्ठ	दन्तोष्ठ्य |
10.	ह	स्वर यन्त्र	अलिजिह्वा

अनुनासिक ध्वनियों के उच्चारण में वर्ण विशेष का उच्चारण स्थान के साथ - साथ नासिका का भी योग रहता है । अतः अनुनासिक वर्णों का उच्चारण स्थान उस वर्ग का उच्चारण स्थान और नासिका होगा ।

जैसे अं में कंठ और नासिका दोनों का उपयोग होता है अतः इसका उच्चारण स्थान कंठ नासिका होगा ।

उच्चारण की दृष्टि से व्यंजनों को आठ भागों में बांटा जा सकता है।

1. स्पर्शी : जिन व्यंजनों के उच्चारण में फेफड़ों से छोड़ी जाने वाली हवा वाग्यंत्र के किसी अवयव का स्पर्श करती है और फिर बाहर निकलती हैं। निम्नलिखित व्यंजन स्पर्शी हैं :

क् ख् ग् घ्; ट् ठ् ड् ढ्
त् थ् द् ध्; प् फ् ब् भ्

2. संघर्षी :जिन व्यंजनों के उच्चारण में दो उच्चारण अवयव इतनी निकटता पर आ जाते हैं कि बीच का मार्ग छोटा हो जाता है तब वायु उनसे घर्षण करती हुई निकलती है। ऐसे संघर्षी व्यंजन हैं - श्, ष्, स्, ह्, ख्, ज्, फ्।

3. स्पर्श संघर्षी : जिन व्यंजनों के उच्चारण में स्पर्श का समय अपेक्षाकृत अधिक होता है और उच्चारण के बाद वाला भाग संघर्षी हो जाता है, वे स्पर्श संघर्षी कहलाते हैं - च्, छ्, ज्, झ्

4. नासिक्य :जिनके उच्चारण में हवा का प्रमुख अंश नाक से निकलता है ङ्, ञ्, ण्, न्, म्।

5. पार्श्विक :जिनके उच्चारण में जिह्वा का अगला भाग मसूड़े को छूता है और वायु पार्श्व आस - पास से निकल जाती है, वे पार्श्विक हैं जैसे - 'ल्'।

6. प्रकम्पित : जिन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा को दो तीन बार कंपन करना पड़ता है, वे प्रकंपित कहलाते हैं। जैसे - 'र'।

7 . उत्क्षिप्त : जिनके उच्चारण में जिव्हा की नोक झटके से नीचे गिरती है तो वह उत्क्षिप्त (फेंका हुआ) ध्वनि कहलाती है । ड् , ढ् उत्क्षिप्त ध्वनियाँ हैं ।

8 . संघर्ष हीन : जिन ध्वनियों के उच्चारण में हवा बिना किसी संघर्ष के बाहर निकल जाती है वे संघर्षहीन ध्वनियाँ कहलाती हैं । जैसे — य , व । इनके उच्चारण में स्वरों से मिलता जुलता प्रयत्न करना पड़ता है , इसलिए इन्हें अर्धस्वर भी कहते हैं ।

इसके अतिरिक्त स्वर तन्त्रियों की स्थिति और कम्पन के आधार पर वर्णों को घोष और अघोष श्रेणी में भी बांटा जा सकता है ।

घोष : घोष का अर्थ है नाद या गुंज । जिन वर्णों का उच्चारण करते समय गूंज (स्वर तंत्र में कंपन) होती है , उन्हें घोष वर्ण कहते हैं । क वर्ग , च वर्ग आदि सभी वर्गों के अन्तिम तीन वर्ण ग् , घ् , ङ् , ज् , झ् , ञ् आदि तथा य् र् ल् व् ह् घोष वर्ण कहलाते हैं । इसके अतिरिक्त सभी स्वर भी घोष वर्ण होते हैं । इनकी कुल संख्या तीस है ।

अघोष : इन वर्णों के उच्चारण में प्राणवायु में कम्पन नहीं होता अतः कोई गुंज न होने से ये अघोष वर्ण होते हैं । सभी वर्णों के पहले और दूसरे वर्ण क् ख् च् छ् श् , ष् , स् , आदि सभी वर्ण अघोष हैं , इनकी संख्या तेरह है ।

श्वास वायु के आधार पर वर्णों के दो भेद हैं : अल्पप्राण और महाप्राण ।

अल्पप्राण : जिन वर्णों के उच्चारण में श्वास वायु कम मात्रा में मुख विवर से बाहर निकलती है । क वर्ग च वर्ग आदि वर्गों का पहला , तीसरा और पाँचवाँ वर्ण (क् , ग् , ङ् , च् , ज् ,ञ् ,ट् , ड् , ण् , त् , द् , न् , प् , ब् , म् आदि) तथा य् , र् , ल् , व् और सभी स्वर अल्पप्राण हैं ।

महाप्राण : जिन वर्णों के उच्चारण में श्वास वायु अधिक मात्रा में मुख विवर से बाहर निकलती है , उन्हें महाप्राण ध्वनियाँ कहते हैं । प्रत्येक वर्ण का दूसरा और चौथा वर्ण (ख् , घ् , छ् , झ् , ठ् , ढ् , थ् , ध् , फ् , भ्) तथा श् , ष् , स् , ह् महाप्राण हैं ।

अनुनासिक :अनुनासिक ध्वनियों के उच्चारण में नाक का सहयोग रहता है , जैसे - अँ , आँ , ईं , ऊँ आदि ।

✺ देवनागरी लिपि तथा हिन्दी वर्तनी का मानकीकरण

भारतीय संविधान में हिन्दी को भारतीय संघ की राष्ट्रभाषा के साथ राजभाषा भी स्वीकार किया गया तथा उसकी लिपि के रूप में देवनागरी लिपि को मान्यता दी गई है । भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय (मानव संसाधन विकास मंत्रालय) के अन्तर्गत केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के तत्त्वावधान में भाषाविदों , पत्रकारों , हिन्दी सेवी संस्थाओं तथा विभिन्न मन्त्रालयों के प्रतिनिधियों के सहयोग से देवनागरी लिपि तथा हिन्दी वर्तनी का एक मानक रूप तैयार किया गया है । यह स्वरूप ही आधिकारिक तौर पर मान्य है अतः इसका ही प्रयोग करें ।

✷ देवनागरी लिपि का निर्धारित मानक रूप

स्वर - अ , आ , इ , ई , उ , ऊ , ऋ , ए , ऐ , ओ , औ

मात्राएँ- ा ि ी ु ू े ै ो ौ

अनुस्वार - अं

विसर्ग - अः

अनुनासिकता चिह्न - ँ

व्यंजन - क , ख , ग , घ , ङ , च , छ , ज , झ , ञ , ट , ठ , ड , ढ (ढ) , ण , त , थ , द , ध , न , प , फ , ब , भ , म , य , र , ल , व , श , ष , स , ह ।

संयुक्त व्यंजन - क्षे , त्र , ज्ञ , श्र ।

हल चिह्न - (्)

गृहीत स्वर - ऑ ( ) ख़ , ज़ , फ़ ।

✺ हिन्दी वर्तनी का मानकीकरण

✷ 1 . संयुक्त वर्ण

खड़ी पाई वाले व्यंजन : खड़ी पाई वाले व्यंजनों का संयुक्त रूप खड़ी पाई को हटाकर ही बनाया जाना चाहिए ; यथा : ख्याति , लग्न , विघ्न , कच्चा , छज्जा , नगण्य , कुत्ता , पथ्य , ध्वनि , न्यास , प्यास , डिब्बा , सभ्य , रम्य , उल्लेख , व्यास , श्लोक , राष्ट्रीय , यक्ष्मा आदि ।

✷ 2 . विभक्ति चिह्न

(क) हिन्दी के विभक्ति चिह्न सभी प्रकार के संज्ञा शब्दों में प्रातिपदिक से पृथक् लिखे जाये ; जैसे - राम ने , राम को , राम से आदि तथा स्त्री ने , स्त्री को , स्त्री से आदि ।
सर्वनाम शब्दों में ये चिह्न प्रातिपदिक के साथ मिलाकर लिखे जाये
जैसे - उसने , उसको , उससे ।

(ख) सर्वनाम के साथ यदि दो विभक्ति चिह्न हों तो उनमें से पहला मिलाकर और दूसरा पृथक् लिखा जाये

जैसे - उसके लिए , इसमें से ।

✷ 3 . क्रिया पद

संयुक्त क्रियाओं में सभी अंगीभूत क्रियाएँ पृथक् - पृथक् लिखी जाये , जैसे - पढ़ा करता है , बढ़ते चले जा रहे हैं , आ सकता है , खाया करता है , खेला करेगा , घूमता रहेगा आदि ।

✷ 4 . संयोजक चिह्न (हाइफन)

संयोजक चिह्न का विधान अर्थ की स्पष्टता के लिए किया गया है । यथा -

(क) द्वन्द्व समास में पदों के बीच संयोजक चिह्न रखा जाए ,जैसे - दिन - रात , देख - रेख , चाल - चलन , हँसी - मजाक , लेन - देन , शिव - पार्वती - संवाद , खाना - पीना , खेलना - कूदना ।

(ख) सा , जैसा आदि से पूर्व संयोजक चिह्न रखा जाए , जैसे - तुम – सा , मोटा - सा , कौन - सा , कपिल - जैसा , चाकू - से तीखे ।

(ग) तत्पुरुष समास में संयोजक चिह्न का प्रयोग वहीं किया जाए , जहाँ उसके बिना अर्थ के स्तर पर भ्रम होने की संभावना हो , अन्यथा नहीं , जैसे भू - तत्त्व (पृथ्वी तत्त्व) । संयोजक चिह्न न लगाने पर भूतत्त्व लिखा जाएगा और इसका अर्थ भूत होने का भाव भी लगाया जा सकता है । सामान्यतः तत्पुरुष समास में संयोजक चिह्न लगाने की आवश्यकता नहीं है , अतः शब्दों को मिलाकर ही लिखा जाए , जैसे रामराज्य , राजकुमार , गंगाजल , ग्रामवासी , आत्महत्या आदि । किन्तु अ - नख (बिना नख का) , अ नति (नम्रता का अभाव) अ -

परस (जिसे किसी ने छुआ न हो) आदि शब्दों में संयोजक चिह्न लगाया जाना चाहिए अन्यथा अनख , अनति , अपरस शब्द बन जाएँगे ।

✸ 5 . अव्यय

तक , साथ आदि अव्यय सदा पृथक् लिखे जाये ;
जैसे - आपके साथ , यहाँ तक ।

✸ अन्य नियम

अंग्रेजी के जिन शब्दों में अर्द्ध विवृत ऑ ध्वनि का प्रयोग होता है , उनके शुद्ध रूप का हिन्दी में प्रयोग अभीष्ट होने पर आ की मात्रा के ऊपर अर्द्ध चन्द्र (ॅ) का प्रयोग किया जाये । जैसे - कॉलेज , डॉक्टर , कॉपरेटिव आदि ।

हिन्दी में कुछ शब्द ऐसे हैं जिनके दो - दो रूप बराबर चल रहे हैं । विद्वत्समाज में दोनों रूपों की एक - सी मान्यता है ; जैसे गरदन / गर्दन , गरमी / गर्मी , बरफ / बर्फ , बिलकुल / बिल्कुल , सरदी / सर्दी , कुरसी / कुर्सी , भरती / भर्ती , फुरसत / फुर्सत , बरदाश्त / बर्दाश्त , वापिस / वापस , आखीर / आखिर , बरतन / बर्तन , दोबारा / दुबारा , दूकान / दुकान आदि ।

✸ पूर्वकालिक प्रत्यय

पूर्वकालिक प्रत्यय - कर ' क्रिया से मिलाकर लिखा जाएः जैसे मिलाकर , खा - पीकर , पढ़कर ।

शिरोरेखा का प्रयोग प्रचलित रहेगा ।

पूर्ण विराम को छोड़कर शेष विराम आदि चिह्न वही ग्रहण कर लिए जाये जो अंग्रेजी में प्रचलित हैं , जैसे , ; ? ! : - = |

पूर्ण विराम के लिए खड़ी पाई (।) का प्रयोग किया जाये ।

अंग्रेजी हिन्दी अनुवाद कार्य तथा अन्य प्रशासनिक साहित्य में विषय के विभाजन , उपविभाजन तथा अवतरणों , उप अवतरणों का क्रमांकन करते समय अंग्रेजी के A , B , C , अथवा a , b , c , के स्थान पर सर्वत्र क , ख , ग , का प्रयोग किया जाए (अ , ब , स , अथवा अ , आ , इ , आदि का नहीं) आवश्यकतानुसार 1 , 2 , 3 , अथवा रोमन i , ii , iii का प्रयोग किया जा सकता है ।

हिन्दी के संख्यावाचक शब्दों का मानक रूप एक दो तीन चार पाँच छह सात आठ नौ दस ग्यारह बारह तेरह चौदह पंद्रह सोलह सत्रह अठारह उन्नीस बीस इक्कीस बाईस तेईस चौबीस पच्चीस छब्बीस सत्ताईस अट्ठाईस उनतीस तीस इकतीस बत्तीस तैतीस चौतीस पैतीस छत्तीस सैंतीस अड़तीस उनतालीस चालीस इकतालीस बयालीस तैतालीस चवालीस पैंतालीस छियालीस सैंतालीस अड़तालीस उनचास पचास इक्यावन बावन तिरपन चौवन पचपन छप्पन सतावन अठावन उनसठ साठ इकसठ बासठ तिरसठ चौंसठ पैंसठ छियासठ सड़सठ अड़सठ उनहत्तर सत्तर इकहत्तर बहत्तर तिहत्तर चौहत्तर पचहत्तर छिहत्तर सतहत्तर अठहत्तर उन्यासी अस्सी इक्यासी बयासी तिरासी चौरासी पचासी छियासी सतासी अठासी नवासी नब्बे इक्यानवे , बानवे , तिरानवे , चौरानवे पचानवे छियानवे सतानवे अठानवे निन्यानवे सौ ।

उपसर्ग

✳ परिभाषा : वे शब्दांश जो किसी मूल शब्द के पूर्व में लगकर नये शब्द का निर्माण करते हैं अर्थात् नये अर्थ का बोध कराते हैं , उन्हें उपसर्ग कहते हैं ।

ये शब्दांश होने के कारण वैसे इनका स्वतन्त्ररूप से अपना कोई महत्त्व नहीं होता किन्तु शब्द के पूर्व संश्लिष्ट अवस्था में लगकर उस शब्द विशेष के अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं ।
जैसे 'हार' एक शब्द है , इसके साथ शब्दांश प्रयुक्त होने पर कई नये शब्द बनते हैं यथा आहार (भोजन) , उपहार (भेंट) प्रहार (चोट) विहार (भ्रमण) , परिहार (त्यागना) , प्रतिहार (द्वारपाल) संहार (मारना) , उद्धार (मोक्ष) आदि । अतः 'हार' शब्द के साथ प्रयुक्त क्रमशः आ , उप , प्र , वि , परि , प्रति , सम् , उत् शब्दांश उपसर्ग की श्रेणी में आते हैं ।

✺ उपसर्ग के प्रकार

हिन्दी में उपसर्ग तीन प्रकार के होते हैं -
(i) संस्कृत के उपसर्ग
(ii) हिन्दी के उपसर्ग
(iii) विदेशी उपसर्ग

✺ (I) संस्कृत के उपसर्ग

संस्कृत में उपसर्ग की संख्या 22 होती है । ये उपसर्ग हिन्दी में भी प्रयुक्त होते हैं इसलिए इन्हें संस्कृत के उपसर्ग कहते हैं ।

उपसर्ग	अर्थ	उपसर्गयुक्त शब्द
1.अति	अधिक / परे	अतिशय , अतिक्रमण , अतिवृष्टि , अतिशीघ्र अत्यन्त , अत्यधिक , अत्याचार , अतीन्द्रिय अत्युक्ति , अत्युत्तम , अत्यावश्यक , अतीव
2 . अधि	प्रधान / श्रेष्ठ	अधिकरण , अधिनियम , अधिनायक अधिकार , अधिमास , अधिपति , अधिकृत अध्यक्ष , अधीक्षण , अध्यादेश , अधीन अध्ययन , अधीक्षक , अध्यात्म , अध्यापक
3 . अनु	पीछे / समान	अनुकरण , अनुकूल , अनुचर , अनुज , अनुशासन , अनुरूप , अनुराग , अनुक्रम , अनुनाद , अनुभव , अनुशंसा , अन्वय , अन्वीक्षण , अन्वेषण , अनुच्छेद , अनूदित
4 . अप	बुरा / विपरीत	अपकार , अपमान , अपयश , अपशब्द अपकीर्ति , अपराध , अपव्यय , अपहरण , अपकर्ष , अपशकुन , अपेक्षा
5 . अभि	पास / सामने	अभिनव , अभिनय , अभिवादन , अभिमान , अभिभाषण , अभियोग , अभिभूत , अभिभावक अभ्युदय , अभिषेक , अभ्यर्थी , अभीष्ट अभ्यन्तर , अभीप्सा , अभ्यास
6 . अव	बुरा / हीन	अवगुण , अवनति , अवधारण , अवज्ञा , अवगति , अवतार , अवसर , अवकाश , अवलोकन , अवशेष , अवतरण
7 . आ	तक / से	आजन्म , आहार , आयात , आतप , आजीवन , आगार , आगम , आमोद

		आशंका , आरक्षण , आमरण , आगमन आकर्षण , आबालवृद्ध , आघात
8 . उत्	ऊपर / श्रेष्ठ	उत्पन्न , उत्पत्ति , उत्पीड़न , उत्कंठा उत्कर्ष , उत्तम , उत्कृष्ट , उदय , उन्नत , उल्लेख , उद्धार , उच्छ्वास उvuवल , उच्चारण , उच्छृखल , उद्गम
9 . उप	पास / सहायक	उपकार , उपवन , उपनाम , उपचार , उपहार , उपसर्ग , उपमन्त्री , उपयोग , उपभोग , उपभेद , उपयुक्त , उपभोग उपेक्षा , उपाधि , उपाध्यक्ष
10 . दुर्	कठिन / बुरा / विपरीत	दुराशा , दुराग्रह , दुराचार , दुरवस्था , दुरुपयोग , दुरभिसंधि , दुर्गुण , दुर्दशा दुर्घटना , दुर्भावना , दुरुह
11 . दुस्	बुरा / विपरीत / कठिन	दुश्चिन्त , दुश्शासन , दुष्कर , दुष्कर्म , दुस्साहस , दुस्साध्य ,
12 . नि	बिना / विशेष	निडर , निगम , निवास , निदान , नित्थ , निबन्ध , निदेशक , निकर , निवारण , न्यून , न्याय , न्यास , निषेध , निषिद्ध
13 . निर्	बिना / बाहर	निरपराध , निराकार , निराहार , निरक्षर , निरादर , निरहंकार , निरामिष , निर्जर , निर्धन , निर्यात , निर्दोष , निरवलम्ब , नीरोग , नीरस , निरीह , निरीक्षण
14 . निरा	बिना / बाहर	निश्चय , निश्छल , निष्काम , निष्कर्म निष्पाप , निष्फल , निस्तेज , निस्सन्देह

15 . प्र	आगे / अधिक	प्रदान , प्रबल , प्रयोग , प्रचार , प्रसार , प्रहार , प्रयत्न , प्रभंजन , प्रपौत्र , प्रारम्भ , प्रोज्ज्वल , प्रेत , प्राचार्य , प्रायोजक , प्रार्थी
16 . परा	विपरीत / पीछे / अधिक	पराजय , पराभव , पराकम , परामर्श , परावर्तन , पराविद्या , पराकाष्ठा
17 . परि	चारों ओर / पास	परिक्रमा , परिवार , परिपूर्ण , परिमार्जन , परिहार , परिक्रमण , परिभ्रमण , परिधान , परिहास , परिश्रम , परिवर्तन , परीक्षा , पर्याप्त , पर्यटन , परिणाम , परिमाण , पर्यावरण , परिच्छेद , पर्यन्त
18 . प्रति	प्रत्येक / विपरीत	प्रतिदिन , प्रत्येक , प्रतिकूल , प्रतिहिंसा , प्रतिरूप , प्रतिध्वनि , प्रतिनिधि , प्रतीक्षा , प्रत्युत्तर , प्रत्याशा , प्रतीति
19 . वि	विशेष / भिन्न	विजय , विज्ञान , विदेश , वियोग , विनाश , विपक्ष , विलय , विहार , विख्यात , विधान , व्यवहार , व्यर्थ , व्यायाम , व्यंजन , व्याधि , व्यसन , व्यूह
20 . सु	अच्छा / सरल	सुगन्ध , सुगति , सुबोध , सुयश , सुमन , सुलभ , सुशील , सुअवसर , स्वागत , स्वल्प , सूक्ति
21 . सम्	अच्छी तरह / पूर्ण शुद्ध	संकल्प , संचय , सन्तोष , संगठन , संचार , संलग्न , संयोग , संहार , संशय , संरक्षा
22 . अन्	नहीं / बुरा	अनन्त , अनादि , अनेक , अनाहूत , अनुपयोगी , अनागत , अनिष्ट , अनीह

अनुपयुक्त अनुपम , अनुचित , अनन्य

उपर्युक्त उपसर्गों के अतिरिक्त संस्कृत के निम्न उपसर्ग भी हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं

1 . अन्तर् - अन्तर्गत , अन्तरात्मा , अन्तर्धान , अन्तर्दशा अन्तर्राष्ट्रीय , अन्तरिक्ष , अन्तर्देशीय

2 . पुनर् - पुनर्जन्म , पुनरागमन , पुनरुदय , पुनर्विवाह पुनर्मूल्यांकन , पुनर्जागरण

3 . प्रादुर - प्रादुर्भाव , प्रादुर्भूत

4 . पूर्व - पूर्वज , पूर्वाग्रह , पूर्वार्द्ध , पूर्वाह्न पूर्वानुमान

5 . प्राक - प्राक्कथन , प्राक्कलन , प्रागैतिहासिक , प्राग्देवता , प्रामुख , प्राक्कर्म

6 . पुरस् - पुरस्कार , पुरश्चरण , पुरस्कृत

7 . बहिर् - बहिरागत , बहिर्जात , बहिर्भाव , बहिरंग , बहिर्गमन

8 . बहिस् - बहिष्कार , बहिष्कृत

9 . आत्म - आत्मकथा , आत्मघात , आत्मबल , आत्मचरित , आत्मज्ञान

10 . सह - सहपाठी , सहकर्मी , सहोदर , सहयोगी सहानुभूति , सहचर

11 . स्व - स्वतन्त्र , स्वदेश , स्वराज्य , स्वाधीन , स्वरचित , स्वनिर्मित , स्वार्थ

12 . पुरा - पुरातन , पुरातत्त्व , पुरापथ , पुराण , पुरावशेष

13 . स्वयं - स्वयंभू , स्वयंवर , स्वयंसेवक , स्वयंपाणि , स्वयंसिद्ध

14 . आविस् - आविष्कार , आविष्कृत

15 . आविर् - आविर्भाव , आविर्भूत

16 . प्रातर् - प्रातः काल , प्रातः वन्दना , प्रातः स्मरणीय

17 . इति - इतिश्री , इतिहास , इत्यादि , इतिवृत्त

18 . अलम् - अलंकरण , अलंकृत , अलंकार

19 . तिरस् - तिरस्कार , तिरस्कृत

20 . तत् - तल्लीन , तन्मय , तद्धित , तदनन्तर , तत्काल , तत्सम , तद्भव , तद्रूप

27 . अमा - अमावस्या , अमात्य

22 . सत् - सत्कर्म , सकार , सद्गति , सज्जन , सच्चरित्र , सद्धर्म , सदाचार

✺ (II) हिन्दी के उपसर्ग

1 . अन - (नहीं) अनपढ़ , अनजान , अनबन , अनमोल अनहोनी , अनदेखी , अनचाहा , अनसुना

2 . अध - (आधा) अधमरा , अधपका , अधजला , अधगला , अधकचरा , अधखिला , अधनंगा

3 . उ - उचक्का , उजड़ना , उछलना , उखाड़ना , उतावला

4 . उन - (एक कम) उन्नीस , उनतीस , उनचालीस , उनचास उनसठ , उन्नासी

5 . औ - (अब) औगुन , औगढ़ , औसर , औघट , औतार

6 . कु - (बुरा) कुरूप , कुपुत्र , कुकर्म , कुख्यात , कुमार्ग कुचाल , कुचक्र , कुरीति

7 . चौ - (चार) चौराहा , चौमासा , चौपाया , चौरंगा , चौकन्ना , चौमुखा , चौपाल

8 . पच - (पॉच) पचरंगा , पचमेल , पचफूटा , पचमढ़ी

9 . पर - (दूसरा) परहित , परदेसी , परजीवी , परकोटा , परदादा , परलोक , परकाज , परोपकार

10 . भर - (पूरा) भरपेट , भरपूर , मरकम , भरसक , भरमार , भरपाई

11 . बिन - (बिना) बिनखाया , बिनब्याहा बिनबोया बिन माँगा , बिन बुलाया , बिनजाया

12 . ति - (तीन) तिरंगा , तिराहा , तिपाई , तिकोन , तिमाही

13 . दु - (दो / बुरा) दुरंगा , दुलत्ती , दुनाली , दुराहा दुपहरी , दुगुना , दुकाल , दुबला

14 . का - (बुरा) कायर , कापुरुष , काजल

15 . स - (सहित) सपूत , सफल , सबल , सगुण , सजीव , सावधान , सकर्मक

16 . चिर - (सदैव) चिरकाल , चिरायु , चिरयौवन , चिरपरिचित चिरस्थायी , चिरस्मरणीय , चिरप्रतीक्षित

17 . न - (नहीं) नकुल , नास्तिक , नग , नपुंसक , नगण्य , नेति

18 . बहु - (ज्यादा) बहुमूल्य , बहुवचन , बहुमत , बहुभुज ,बहुविवाह , बहुसंख्यक , बहूपयोगी

19 . आप - (स्वयं) आपकाज , आपबीती , आपकही , आपसुनी

20 . नाना - (विविध) नानाप्रकार , नानारूप , नानाजाति , नानाविकार

21 . क - (बुरा) कपूत , कलंक , कठोर

22 . सम - (समान) समतल , समदर्शी , समकोण , समकक्ष , समकालीन , समचतुर्भुज , समग्र

✺ (III) विदेशी उपसर्ग

हिन्दी भाषा में अन्य भाषाओं के शब्द भी प्रयुक्त होते हैं फलतः उनके उपसर्गों को हिन्दी में विदेशी उपसर्ग की संज्ञा दी जाती है ।

1 . बे	रहित	बेघर , बेवफा , बेदर्द , बेसमझ , बेवजह , बेहया , बेहिसाब
2 . दर	में	दरअसल , दरबार , दरखास्त , दरहकीकत , दरम्यान
3 . बा	सहित	बाइज्जत , बामुलायजा , बाअदब , बाकायदा
4 . कम्	अल्प	कमअक्ल , कमउम्र , कमजोर , कम समझ , कमबख्त
5 . ला	परे / बिना	लाइलाज , लावारिस , लापरवाह , लापता , लाजवाब
6 . ना	नहीं	नापसन्द , नाकाम , नाबालिग , नाजायज , नालायक , नाराज , नादान
7 . हर	प्रत्येक	हरदम , हरवक्त , हररोज , हरहाल हर मुकाम , हर घड़ी
8 . खुश	श्रेष्ठ	खुशनुमा , खुशहाल , खुशबू , खुशखबरी खुशमिजाज
9 . बद	बुरा	बदबू , बदचलन , बदमाश , बदमिजाज , बदनाम , बदकिस्मत
10 . सर	मुख्य / प्रधान	सरपंच , सरदार , सरताज , सरकार

11 . ब	सहित	बखूबी , बतौर , बशर्त , बदौलत
12 . बिला	बिना	बिलाकसूर , बिलावजह , बिलाकानून
13 . बेश	अत्यधिक	बेश कीमती , बेश कीमत
14 . नेक	भला	नेकराह , नेकनाम , नेकदिल , नेकनीयत
15 . ऐन	ठीक	ऐनवक्त , ऐनजगह , ऐन मौके
16 . हम	साथ	हमराज , हमदम , हमवतन , हमसफर , हमदर्द
17 . अल	निश्चित	अलगरज , अलविदा , अलबत्ता , अलबेता
18 . गैर	रहित भिन्न	गैर हाजिर , गैरमर्द , गैर वाजिब
19 . हैड	प्रमुख	हैडमास्टर , हैड ऑफिस , हैडबॉय
20 . हाफ	आधा	हाफकमीज , हाफटिकट , हाफपेन्ट , हाफशर्ट
21 . सब	उप	सब रजिस्ट्रार , सबकमेटी , सब इन्स्पेक्टर
22 . को	सहित	को - आपरेटिव , को - आपरेशन , को - एजूकेशन

प्रत्यय

✳ परिभाषा : वे शब्दांश जो किसी शब्द के अन्त में लगकर उस शब्द के अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं , अर्थात् नये अर्थ का बोध कराते हैं , उन्हें **प्रत्यय** कहते हैं । जैसे -

समाज + इक = सामाजिक

सुगन्ध + इत = सुगन्धित

भूलना + अक्कड़ = भुलक्कड़

मीठा + आस = मिठास

अतः प्रत्यय लगने पर शब्द एवं शब्दांश में सन्धि नहीं होती बल्कि शब्द के अन्तिम वर्ण में मिलने वाले प्रत्यय के स्वर की मात्रा लग जायेगी , व्यंजन होने पर वह यथावत रहता है जैसे -

लोहा + आर = लुहार

नाटक + कार = नाटककार

✺ प्रत्यय के प्रकार

हिन्दी में प्रत्यय मुख्यत : दो प्रकार के होते हैं -

(i) कृदन्त प्रत्यय (ii) तद्धित प्रत्यय

1 . कृदन्त प्रत्यय : वे प्रत्यय जो धातुओं अर्थात् क्रिया पद के मूल रूप के साथ लगकर नये शब्द का निर्माण करते हैं कृदन्त या कृत प्रत्यय कहलाते हैं । हिन्दी क्रियाओं में अन्तिम वर्ण

'ना' का लोपकर शेष शब्द के साथ प्रत्यय का योग किया जाता है। कृदन्त या कृत प्रत्यय 5 प्रकार के होते हैं -

(i) कर्तृवाचक : वे प्रत्यय जो कर्त्तवाचक शब्द बनाते हैं जैसे -

अक - लेखक , नायक , गायक , पाठक

अक्कड़ - भुलक्कड़ , घुमक्कड़ , पियक्कड़ , कुदक्कड़

आक - तैराक , लड़ाक

आलू - झगड़ालू

आकू - लड़ाकू

आड़ी - खिलाड़ी

इयल - अड़ियल , मरियल

एरा - लुटेरा , बसेरा

ऐया - गवैया

ओड़ा - भगोड़ा

ता - दाता

वाला - पढ़नेवाला

हार - राखनहार , चाखनहार

(ii) कर्मवाचक : वे प्रत्यय जो कर्म के अर्थ को प्रकट करते हैं।

औना - खिलौना (खेलना)

नी - सूँघनी (सूँघना)

(iii)करणवाचक : वे प्रत्यय जो क्रिया के कारण को बताते हैं।

आ - झूला (झूलना)

ऊ - झाड़ू (झाड़ना)

न - बेलन (बेलना)

नी - कतरनी (कतरना)

(iv)भाववाचक : प्रत्यय जो क्रिया से भाववाचक संज्ञा का निर्माण करते हैं ।

अ - मार , लूट , तोल , लेख

आ - पूजा

आई - लड़ाई , कटाई , चढ़ाई , सिलाई

आन - मिलान , चढान , उठान , उड़ान

आप - मिलाप , विलाप

आव - चढ़ाव , घुमाव , कटाव

आवा बुलावा

आवट सजावट , लिखावट , मिलावट

आहट घबराहट , चिल्लाहट

ई - बोली

औता - समझौता

औती - कटौती , मनौती

ती - बढ़ती , उठती , चलती

त - बचत , खपत , बढ़त

न - फिसलन , ऐंठन

नी - मिलनी

(v) क्रिया बोधक : वे प्रत्यय जो क्रिया का ही बोध कराते हैं ।

हुआ - चलता हुआ , पढ़ता हुआ

2 . तद्धित प्रत्यय : वे प्रत्यय जो क्रिया पदों के अतिरिक्त संज्ञा , सर्वनाम , विशेषण आदि शब्दों के साथ लगकर नये शब्द का निर्माण करते हैं उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं । जैसे -

छात्र + आ = छात्रा

देव + ई = देवी

मीठा + आस = मिठास

अपना + पन = अपनापन

तद्धित प्रत्यय 6 प्रकार के होते हैं ।

(i) कर्तृवाचक तद्धित प्रत्यय : वे प्रत्यय जो किसी संज्ञा , सर्वनाम या विशेषण शब्द के साथ जुड़कर कर्त्तवाचक शब्द का निर्माण करते हैं ।

आर - लुहार , सुनार

इया - रसिया

ई - तेली

एरा - घसेरा

(ii) भाववाचक तद्धित प्रत्यय : वे प्रत्यय जो संज्ञा , सर्वनाम या विशेषण के साथ जुड़कर भाववाचक संज्ञा बनाते हैं ।

आई - बुराई

आपा - बुढ़ापा

आस - खटास , मिठास

आहट - कड़वाहट

इमा - लालिमा

ई - गर्मी

ता - सुन्दरता , मूर्खता , मनुष्यता

त्व - मनुष्यत्व , पशुत्व

पन - बचपन , लड़कपन , छुटपन

(iii) सम्बन्धवाचक तद्धित प्रत्यय : इन प्रत्ययों के लगने से सम्बन्ध वाचक शब्दों की रचना होती है ।

एरा - चचेरा , ममेरा

इक - शारीरिक

आलु - दयालु , श्रद्धालु

इत - फलित

ईला - रसीला , रंगीला

ईय - भारतीय

ऐला - विषैला

तर - कठिनतर

मान - बुद्धिमान

वत् - पुत्रवत , मातृवत्

हरा - इकहरा

जा- भतीजा , भानजा

ओई - ननदोई

(iv) अप्रत्यवाचक तद्धित प्रत्यय : संस्कृत के प्रभाव के कारण संज्ञा के साथ अप्रत्यवाचक प्रत्यय लगाने से सन्तान का बोध होता है ।

अ - वासुदेव , राघव , मानव

ई - दाशरथि , वाल्मीकि , सौमित्रि

एय - कौन्तेय , गांगेय , भागिनेय

य - दैत्य , आदित्य

ई - जानकी , मैथिली , द्रोपदी , गांधारी

(v) ऊनतावाचक तद्धित प्रत्यय : संज्ञा , सर्वनाम या विशेषण के साथ प्रयुक्त होकर ये उनके लघुता सूचक शब्दों का निर्माण करते हैं ।

इया - खटिया , लुटिया , डिबिया

ई - मण्डली , टोकरी , पहाड़ी , घण्टी

ओला - खटोला , संपोला

(vi) स्त्रीबोधक तद्धित प्रत्यय : वे प्रत्यय जो संज्ञा , सर्वनाम या विशेषण के साथ लगकर उनके स्त्रीलिंग का बोध कराते है ।

आ - सुता , छात्रा , अनुजा

आइन - ठकुराइन , मुंशियाइन

आनी - देवरानी , सेठानी , नौकरानी

इन - बाघिन , मालिन

नी - शेरनी , मोरनी

✺ उर्दू के प्रत्यय

हिन्दी की उदारता के कारण उर्दू के कतिपय प्रत्यय हिन्दी में भी प्रयुक्त होने लगे हैं । जैसे -

गर - जादूगर , बाजीगर , कारीगर , सौदागर

ची - अफीमची , तबलची , बाबरची , तोपची

नाक - शर्मनाक , दर्दनाक

दार - दुकानदार , मालदार , हिस्सेदार , थानेदार

आबाद - अहमदाबाद , इलाहाबाद , हैदराबाद

इन्दा - परिन्दा , बाशिन्दा , शर्मिन्दा , चुनिन्दा

इश - फरमाइश , पैदाइश , रंजिश

इस्तान - कब्रिस्तान , तुर्किस्तान , अफगानिस्तान

खोर - हरामखोर , घूसखोर , जमाखोर , रिश्वतखोर

गाह - ईदगाह , बंदरगाह , दरगाह , आरामगाह

गार - मददगार , यादगार , रोजगार , गुनाहगार

गीर - राहगीर , जहाँगीर

गी - दीवानगी , ताजगी , सादगी

गीरी - कुलीगीरी , मुंशीगीरी

नवीस - नक्शानवीस , अर्जीनवीस

नामा - अकबरनामा , सुलहनामा , इकरारनामा

बन्द - हथियारबन्द , नजरबन्द , मोहरबन्द

बाज - नशेबाज , चालबाज , दगाबाज

मन्द - अकलमन्द , जरूरतमंद , ऐहसानमंद

साज - जिल्दसाज , घड़ीसाज , जालसाज

विशेष : कई बार प्रत्यय लगने पर मूलशब्द के आदि मध्य या अन्त में प्रयुक्त स्वरों में परिवर्तन हो जाता है । जैसे -

इक - समाज – सामाजिक , इतिहास - ऐतिहासिक , नीति - नैतिक , पुराण - पौराणिक , भूगोल - भौगोलिक , लोक - लौकिक

य - मधुर - माधुर्य , दिति - दैत्य , सुन्दर - सौन्दर्य , शूर - शौर्य

इ - दशरथ - दाशरथि , सुमित्रा - सौमित्रि

एय - गंगा - गांगेय , कुन्ती – कौन्तेय

आइन - ठाकुर-ठकुराइन , मुंशी - मुंशियाइन

इनी - हाथी - हथिनी

एरा - चाचा - चचेरा , लूटना – लुटेरा

आई - साफ - सफाई , मीठा - मिठाई , बोना - बुवाई

अक्कड़ - भूलना-भुलक्कड़ , पीना – पियक्कड़

आरी - पूजना –पुजारी , भीख - भिखारी

ऊटा - काला कलूटा

आव - खींचना - खिंचाव , घूमना - घुमाव

आस - मीठा - मिठास

आपा - बूढा - बुढ़ापा

आर - लोहा - लुहार , सोना - सुनार

इया - चूहा - चुहिया , लोटा - लुटिया

वाड़ी - फूल - फुलवाड़ी

वास - रानी –रनिवास

पन - छोटा - छुटपन , बच्चा - बचपन , लड़का - लड़कपन

हारा - मनी - मनिहारा

एल - नाक - नकेल

आवना - लोभ - लुभावना

कारक

✳ परिभाषा : ' कारक ' शब्द का शाब्दिक अर्थ होता है ' करनेवाला ' किन्तु व्याकरण में यह एक पारिभाषिक शब्द है । जब किसी संज्ञा या सर्वनाम पद का सम्बन्ध वाक्य में प्रयुक्त अन्य पदों विशेषकर क्रिया के साथ जाना जाता है , उसे *कारक* कहते हैं ।

✳ विभक्ति : कारक को प्रकट करने के लिए संज्ञा या सर्वनाम के साथ , जो चिह्न लगाया जाता है , उसे *विभक्ति* कहते हैं । प्रत्येक कारक का विभक्ति चिह्न होता है , किन्तु हर कारक के साथ विभक्ति चिह्न का प्रयोग हो यह आवश्यक नहीं है ।

✳ कारक के प्रकार

हिन्दी में कारक आठ प्रकार के होते हैं ।

1 . कर्ता कारक
2 . कर्म कारक
3 . करण कारक
4 . सम्प्रदान कारक
5 . अपादान कारक
6 . सम्बन्ध कारक
7 . अधिकरण कारक
8 . सम्बोधन कारक

✺ 1 . कर्ता कारक : (ने)

संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप जो क्रिया (कार्य) के करने वाले का बोध कराता है , अर्थात् क्रिया के करने वाले को *कर्ता कारक कहते हैं । कर्ता कारक का विभक्ति चिह ने है । ' **ने** ' विभक्ति का प्रयोग कर्ता कारक के साथ केवल भूतकालिक क्रिया होने पर होता है । अतः वर्तमान काल , भविष्यत्काल तथा क्रिया के अकर्मक होने पर ' ने ' विभक्ति का प्रयोग नहीं होगा । जैसे -*

अभिषेक पुस्तक पढ़ता है ।

गुंजन हँसती है ।

वर्षा गाना गाती है ।

आलोक ने पत्र लिखा ।

✺ 2 . कर्म कारक : (को)

वाक्य में जिस शब्द पर क्रिया का फल पड़ता है , उसे *कर्म कारक कहते हैं । कर्म कारक का विभक्ति चिन्ह है - ' **को** ' । कर्मकारक शब्द सजीव हो तो उसके साथ ' को ' विभक्ति लगती है , **निर्जीव** कर्म कारक के साथ नहीं । जैसे -*

राम ने रावण को मारा ।

नंदन दूध पीता है ।

✺ 3 . करण कारक :(से)

वाक्य में कर्ता जिस साधन या माध्यम से क्रिया करता है अर्थात क्रिया के साधन को *करण कारक* कहते है । करण कारक का विभक्ति चिह ' **से** ' है । जैसे -

ज्योत्स्ना चाकू से सब्जी काटती हैं।

मैं पेन से लिखता हूँ।

✺ 4 . सम्प्रदान कारक : (के लिए , को , के वास्ते)

सम्प्रदान शब्द का अर्थ है ' **देना** ' । वाक्य में कर्ता जिसे कुछ देता है अथवा जिसके लिए क्रिया करता है , उसे *सम्प्रदान कारक* कहते हैं । सम्प्रदान कारक का विभक्ति चिन्ह ' **के लिए** ' हैं , किन्तु जब क्रिया द्विकर्मी हो तथा देने के अर्थ में प्रयुक्त हो वहाँ ' **को** ' विभक्ति भी प्रयुक्त होती है | जैसे -

(i) आलोक माँ के लिए दवाई लाया ।

(ii) मीनाक्षी ने कविता को पुस्तक दी ।

अतः द्वितीय वाक्य में ' कविता ' सम्प्रदान कारक होगा क्योंकि **दी** क्रिया **द्विकर्मी** है ।

(iii) भिखारी को भीख दो ।

यहाँ ' को 'शब्द के लिए के अर्थ में आया है ।

✺ 5 . अपादान कारक : (से पृथक् / से अलग)

वाक्य में जब किसी संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से एक वस्तु या व्यक्ति का दूसरी वस्तु या व्यक्ति से अलग होने या तुलना करने के भाव का बोध होता है । जिससे अलग हो या जिससे तुलना की जाय , उसे *अपादान कारक* कहते हैं । इसकी विभक्ति भी ' **से** 'है किन्तु यहाँ ' से ' **पृथक** या **अलग** का बोध कराता है ।

(i) पेड़ से पत्ता गिरता है ।

(ii) कविता सविता से अच्छा गाती है ।

✺ 6 . सम्बन्ध कारक : (का , की , के / रा , री , रे , ना , ने , नी)

जब वाक्य में किसी संज्ञा या सर्वनाम का अन्य किसी संज्ञा या सर्वनाम से सम्बन्ध हो , जिससे सम्बन्ध हो , उसे *सम्बन्ध कारक* कहते हैं । इसके विभक्ति चिह्न **का , के , को , रा , रा , रे , ना , ने , नी** आदि हैं । यथा -

अजय की पुस्तक गुम गई ।

तुम्हारा चश्मा यहाँ रखा है ।

अपना कार्य स्वयं करें ।

✺ 7 . अधिकरण कारक : (में , पर , पे)

वाक्य में प्रयुक्त , संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के आधार का बोध होता है , उसे *अधिकरण कारक* कहते हैं । इसके विभक्ति चिन्ह ' **में , पे , पर**' हैं ।

पक्षी आकाश में उड़ रहे हैं ।

मेज पर पुस्तक पड़ी है ।

✺ 8 . सम्बोधन कारक : (हे , ओ , अरे)

वाक्य में , जब किसी संज्ञा या सर्वनाम को पुकारा या बुलाया जाता है , अर्थात् जिसे सम्बोधिति किया जाय , उसे सम्बोधन कारक कहते हैं । सम्बोधन कारक के विभक्ति चिह्न हैं - ' **हे , ओ !**

अरे ! ' सम्बोधन कारक के बाद **सम्बोधन चिह्न (;)** या **अल्प विराम (,)** लगाया जाता है ।

जैसे -

हे प्रभु ! रक्षा करो ।

अरे , मोहन यहाँ आओ ।

✳ विशेष : सर्वनाम में कारक सात ही होते हैं । इसका ' सम्बोधन कारक ' नहीं होता है ।

पर्यायवाची शब्द

(अ)

अतिथि- मेहमान, अभ्यागत, आगन्तुक, पाहूना।

अमृत- सुरभोग सुधा, सोम, पीयूष, अमिय, जीवनोदक ।

अग्नि- आग, ज्वाला, दहन, धनंजय, वैश्वानर, रोहिताश्व, वायुसखा, विभावसु, हुताशन, धूमकेतु, अनल, पावक, वहनि, कृशानु, वह्नि, शिखी।

अनुपम- अपूर्व, अतुल, अनोखा, अनूठा, अद्वितीय, अदभुत, अनन्य।

अर्थ- हय, तुरङ, वाजि, घोडा, घोटक।

असुर-यातुधान, निशिचर, रजनीचर, दनुज, दैत्य, तमचर, राक्षस, निशाचर, दानव, रात्रिचर।

अलंकार- आभूषण, भूषण, विभूषण, गहना, जेवर।

अहंकार- दंभ, गर्व, अभिमान, दर्प, मद, घमंड, मान।

अतिथि- मेहमान, अभ्यागत, आगन्तुक, पाहूना।

अर्थ- धन्, द्रव्य, मुद्रा, दौलत, वित्त, पैसा।

अश्व- हय, तुरंग, घोड़ा, घोटक, हरि, तुरग, वाजि, सैन्धव।

अंधकार- तम, तिमिर, तमिस्र, अँधेरा, तमस, अंधियारा।

अंग- अंश, अवयव, हिस्सा, भाग।

अभिमान- अस्मिता, अहं, अहंकार, अहंभाव, अहम्मन्यता, आत्मश्लाघा, गर्व,

घमंड, दर्प, दंभ, मद, मान, मिथ्याभिमान।

अरण्य- जंगल, वन, कानन, अटवी, कान्तार, विपिन।

अनी- कटक, दल, सेना, फौज, चमू, अनीकिनी।

अनादर- अपमान, अवज्ञा, अवहेलना, अवमानना, परिभव, तिरस्कार।

अंकुश- नियंत्रण, पाबंदी, रोक, दबाव।

अंजाम- नतीजा, परिणाम, फल।

अंत- समाप्ति, अवसान, इति, इतिश्री, समापन।

अंतर- भिन्नता, असमानता, भेद, फर्क।

अंतरिक्ष- खगोल, नभमंडल, गगनमंडल, आकाशमंडल।

अंतर्धान- गायब, लुप्त, ओझल, अदृश्य।

अंदर- भीतर, आंतरिक, अंदरूनी, अभ्यंतर।

अंदाज- अंदाजा, अटकल, कयास, अनुमान।

अंधा- सूरदास, आँधरा, नेत्रहीन, दृष्टिहीन।

अंबर- आकाश, आसमान, गगन, फलक, नभ।

अंबु- जल, पानी, नीर, क्षीर, सलिल, वारि।

अंबुज- कमल, पंकज, नीरज, वारिज, जलज, सरोज, पदम।

अंबुद- मेघ, बादल, घन, घनश्याम, अंबुधर, घटा।

अंबुनिधि- समुंदर, सागर, सिंधु, जलधि, उदधि, जलेश।

अंशु- रश्मि, किरन, किरण, मयूख, मरीचि।

अंशुमान- सूरज, सूर्य, रवि, दिनकर, दिवाकर, प्रभाकर, भास्कर।

अकड़बाज- ऐंठू, गर्वीला, घमंडी, अकड़ूखाँ, अहंकारी।

अकिंचन- गरीब, निर्धन, दीनहीन, दरिद्र।

अकृतज्ञ- अहसान- फ़रामोश, बेवफा, नमकहराम।

अक्ल- प्रज्ञा, मेधा, मति, बुद्धि, विवेक।

अखिलेश्वर- ईश्वर, परमात्मा, परमेश्वर, भगवान, खुदा।

अगम- दुष्कर, कठिन, दुःसाध्य, अगम्य।

अच्छा- बढ़िया, बेहतर, भला, चोखा, उत्तम।

अजनबी- अनजान, अपरिचित, नावाकिफ।

अजीब- अदभुत, अनोखा, विचित्र, विलक्षण।

अटल- अविचल, अडिग, स्थिर, अचल।

अड़ंगा- बाधा, रुकावट, विघ्न, व्यवधान।

अतीत- भूतकाल, विगत, गत, भूत।

अत्याचारी- जालिम, आततायी, नृशंस, बर्बर।

अदालत- कचहरी, न्यायालय, दंडालय।

अधीन- मातहत, आश्रित, पराश्रित, परवश, परतंत्र।

अधीर- आतुर, धैर्यहीन, व्यग्र, बेकरार, उतावला।

अध्ययन- पठन-पाठन, पढ़ना, पढ़ाई, पठन।

अनपढ़- निरक्षर, अशिक्षित, अपढ़।

अनमोल- अमूल्य, बहुमूल्य, बेशकीमती।

अनाज- अन्न, गल्ला, नाज, खाद्यान्न।

अनाड़ी- अकुशल, अनभिज्ञ, अपटु।

अनाथ- तीम, लावारिस, बेसहारा, अनाश्रित।

अनिवार्य- अत्यावश्यक, अपरिहार्य, अवश्यंभावी, परमावश्यक।

अनुज- छोटा भाई, अनुभ्राता, अवरज, कनिष्ठ।

अनुभवी- तजुर्बेकार, जानकार, अनुभवप्राप्त।

अनुमति- इजाजत, सहमति, स्वीकृति, अनुमोदन।

अनुरोध- विनय, विनती, आग्रह, प्रार्थना।

अनूठा- अदभुत, अनोखा, विलक्षण, अपूर्व।

अन्न- अनाज, गल्ला, नाज, दाना।

अपराधी- गुनहगार, कसूरवार, मुलजिम।

अपवित्र- अशुद्ध, नापाक, अस्वच्छ, दूषित।

अफवाह- गप्प, किंवदंती, जनश्रुति, जनप्रवाद।

अभद्र- असभ्य, अविनीत, अकुलीन, अशिष्ट।

अभिनंदन- स्वागत, सत्कार, आवभगत, अभिवादन।

अमन- शांति, सुकून, सुख-चैन, अमन-चैन।

अमर- चिरंजीवी, अनश्वर, अजर-अमर।

अमीर- धनी, मालदार, रईस, दौलतमंद, धनवान।

अर्चना- आराधना, पूजा, पूजन, अर्चन।

अलि- भौंरा, मधुकर, भ्रमर, भृंग, मिलिंद, मधुप, अलिंद।

असत्य- झूठ, मिथ्या, मृषा, असत।

असभ्य- गँवार, असंस्कृत, उजड्ड।

अहि- साँप, नाग, फणी, फणधर, सर्प।

(आ)

आँख- लोचन, अक्षि, नैन, अम्बक, नयन, नेत्र, चक्षु, दृग, विलोचन, दृष्टि, अक्षि।

आकाश- नभ, गगन, द्यौ, तारापथ, पुष्कर, अभ्र, अम्बर, व्योम, अनन्त, आसमान, अंतरिक्ष, शून्य, अर्श।

आनंद- हर्ष, सुख, आमोद, मोद, प्रसन्नता, आह्लाद, प्रमोद, उल्लास।

आश्रम- कुटी, स्तर, विहार, मठ, संघ, अखाड़ा ।

आम- रसाल, आम्र, अतिसौरभ, मादक, अमृतफल, सहकार, च्युत (आम का पेड़), सहुकार।

आंसू- नेत्रजल, नयनजल, चक्षुजल, अश्रु।

आत्मा- जीव, देव, चैतन्य, चेतनतत्तव, अंतःकरण।

आँगन- अँगना, अजिरा, प्राङ्गण।

आँधी- तूफान, बवंडर, झंझावत, अंधड़।

आईना- दर्पण, आरसी, शीशा।

आकाश- आसमान, नभ, गगन, व्योम, फलक।

आक्रोश- क्रोध, रोष, कोप, रिष, खीझ।

आखेटक- शिकारी, बहेलिया, अहेरी, लुब्धक, व्याध।

आगंतुक- मेहमान, अतिथि, अभ्यागत।

आग- पावक, अनल, अग्नि, बाड़व, वहि।

आचरण- चाल-चलन, बर्ताव, व्यवहार, चरित्र।

आचार्य- शिक्षक, अध्यापक, प्राध्यापक, गुरु।

आजादी- स्वाधीनता, स्वतंत्रता, मुक्ति।

आजीविका- व्यवसाय, रोजी-रोटी, वृत्ति, धंधा।

आज्ञा- हुक्म, फरमान, आदेश।

आतिथ्य- मेहमानदारी, मेजबानी, मेहमाननवाजी, खातिरदारी।

आत्मा- रूह, जीवात्मा, जीव, अंतरात्मा।

आदत- स्वभाव, प्रकृति, प्रवृत्ति।

आदमी- मानव, मनुष्य, मनुज, मानुष, इंसान।

आनन- चेहरा, मुखड़ा, मुँह, मुखमंडल, मुख।

आबंटन- विभाजन, वितरण, बाँट, वंटन।

आबरू- सम्मान, प्रतिष्ठा, इज्जत।

आयु- उम्र,वय, जीवनकाल।

आयुष्मान- दीर्घायु, दीर्घजीवी, चिरंजीवी, चिरायु।

आरंभ- श्रीगणेश, शुभारंभ, प्रारंभ, शुरुआत, समारंभ।

आरसी- दर्पण, आईना, मुकुर, शीशा।

आवास- निवास-स्थान, घर, निलय, निकेत, निवास।

आवेदन- प्रार्थना, याचना, निवेदन।

आशीर्वाद- शुभकामना, आशीष, आशिष, दुआ।

(इ)

इन्द्र- सुरेश, अमरपति, वज्रधर, वज्री, शचीश, वासव, वृषा, सुरेन्द्र, देवेन्द्र, सुरपति, शक्र, पुरंदर, देवराज, महेन्द्र, मधवा, शचीपति, मेघवाहन, पुरुहूत, यासव।

इन्द्राणि- इन्द्रवधू, मधवानी, शची, शतावरी, पोलोमी।

इच्छा- अभिलाषा, अभिप्राय, चाह, कामना, ईप्सा, स्पृहा, ईहा, वांछा, लिप्सा, लालसा, मनोरथ, आकांक्षा, अभीष्ट।

इंतकाल- देहांत, निधन, मृत्यु, अंतकाल।

इंदु- चाँद, चंद्रमा, चंदा, शशि, राकेश, मयंक, महताब।

इंसान- मनुष्य, आदमी, मानव, मानुष।

इंसाफ- न्याय, फैसला, अद्‌ल।

इजाजत- स्वीकृति, मंजूरी, अनुमति।

इज्जत- मान, प्रतिष्ठा, आदर, आबरू।

इनाम- पुरस्कार, पारितोषिक, बख्शीश।

इलजाम- आरोप, लांछन, दोषारोपण, अभियोग।

(ई)

ईश्वर- परमपिता, परमात्मा, प्रभु, ईश, जगदीश, भगवान, परमेश्वर, जगदीश्वर, विधाता।

ईख- गन्ना, ऊख, इक्षु।

ईप्सा- इच्छा, ख्वाहिश, कामना, अभिलाषा।

ईमानदारी- सच्चा, सत्यपरायण, नेकनीयत, सत्यनिष्ठ।

ईर्ष्या- विद्वेष, जलन, कुढ़न, ढाह।

ईसा- यीशु, ईसामसीह, मसीहा।

ईहा- मनोकामना, अभिलाषा, इच्छा, आकांक्षा, कामना।

(उ)

उपवन- बाग़, बगीचा, उद्यान, वाटिका, गुलशन।

उक्ति- कथन, वचन, सूक्ति।

उग्र- प्रचण्ड, उत्कट, तेज, महादेव, तीव्र, विकट।

उचित- ठीक, मुनासिब, वाज़िब, समुचित, युक्तिसंगत, न्यायसंगत, तर्कसंगत, योग्य।

उच्छृंखल- उद्दंड, अक्खड़, आवारा, अंडबंड, निरकुंश, मनमर्जी, स्वेच्छाचारी।

उजड्ड- अशिष्ट, असभ्य, गँवार, जंगली, देहाती, उद्दंड, निरकुंश।

उजला- उज्ज्वल, श्वेत, सफ़ेद, धवल।

उजाड- जंगल, बियावान, वन।

उजाला- प्रकाश, रोशनी, चाँदनी।

उत्कष- समृद्धि, उन्नति, प्रगति, प्रशंसा, बढ़ती, उठान।

उत्कृष्ट- उत्तम, उन्नत, श्रेष्ठ, अच्छा, बढ़िया, उम्दा।

उत्कोच- घूस, रिश्वत।

उत्पति- उद्गम, पैदाइश, जन्म, उद्भव, सृष्टि, आविर्भाव, उदय।

उद्धार- मुक्ति, छुटकारा, निस्तार, रिहाई।

उपाय- युक्ति, साधन, तरकीब, तदबीर, यत्न, प्रयत्न।

उज्र- ऐतराज, विरोध, आपत्ति।

उत्थान- उत्कर्ष, प्रगति, उन्नयन।

उत्साह- उमंग, जोश, उछाह।

उदार- फ़राख़दिल, क्षीरनिधि, दरियादिल, दानशील, दानी।

उदाहरण- मिसाल, नजीर, दृष्टांत।

उद्दंड- ढीठ, अशिष्ट, बेअदब, गुस्ताख़।

उद्देश्य- लक्ष्य, प्रयोजन, मकसद।

उद्यान- बगीचा, बाग, वाटिका, उपवन।

उन्नति- प्रगति, तरक्की, विकास, उत्कर्ष।

उपकार- भेंट, नजराना, तोहफा।

उपहास- परिहास, मजाक, खिल्ली।

उपानह- खड़ाऊँ, पनही, पादुका, पदत्राण।

उमा- गौरी, गौरा, गिरिजा, पार्वती, शिवा, शैलजा, अपर्णा।

उम्मीद- आशा, आस, भरोसा।

उर- हृदय, दिल, वक्षस्थल।

उरग- सर्प, साँप, नाग, फणी, फणधर, मणिधर, भुजंग।

उलूक- उल्लू, चुगद, खूसट, कौशिक, घुग्घू।

उषा- सुबह, भोर, भिनसार, अलस्सुबह, ब्रह्ममुहूर्त।

उष्णीष- मुंड़ासा, पगड़ी, साफा, पाग, मुरेठा।

(ऊ)

ऊँचा- तुंग, उच्च, बुलंद, गगनस्पर्शी।

ऊँट- करभ, उष्ट्र, लंबोष्ठ, साँड़िया।

ऊखल- ओखली, उलूखल, कूँडी।

ऊसर- अनुपजाऊ, बंजर, अनुर्वर, वंध्य।

ऊधम- उपद्रव, उत्पात, धूम, हुल्लड़, हुड़दंग, धमाचौकड़ी।

(ऋ)

ऋक्ष- भालू, रीछ, भीलूक, भल्लाट, भल्लूक।

ऋक्षेश- चंद्रमा, चंदा, चाँद, शशि, राकेश, कलाधर, निशानाथ।

ऋण- कर्ज, कर्जा, उधार, उधारी।

ऋतुराज- बहार, मधुमास, वसंत, ऋतुपति, मधुऋतु।

ऋषभ- वृष, वृषभ, बैल, पुंगव, बलीवर्द, गोनाथ।

ऋषि- साधु, महात्मा, मुनि, योगी, तपस्वी।

ऋष्यकेतु- कामदेव, मकरकेतु, मकरध्वज, मदन, मनोज, मन्मथ।

(ए)

एकतंत्र- राजतंत्र, एकछत्र, तानाशाही, अधिनायकतंत्र।

एकदंत- गणेश, गजानन, विनायक, लंबोदर, विघ्नेश, वक्रतुंड।

एतबार- विश्वास, यकीन, भरोसा।

एषणा- इच्छा, आकांक्षा, कामना, अभिलाषा, हसरत।

एहसान- कृपा, अनुग्रह, उपकार।

(ऐ)

ऐंठ- कड़, दंभ, हेकड़ी, ठसक।

ऐब- खामी, खराबी, कमी, अवगुण।

ऐयार- धूर्त, मक्कार, चालाक।

ऐहिक- सांसारिक, लौकिक, दुनियावी।

ऐक्य- एकत्व, एका, एकता, मेल।

ऐश्वर्य- समृद्धि, विभूति।

(ओ)

ओज- तेज, शक्ति, बल, चमक, कांति, दीप्ति, वीर्य।

ओंठ- ओष्ठ, अधर, लब, होठ।

ओला- हिमगुलिका, उपल, करका, हिमोपल।

ओस- नीहार, तुहिन, शबनम।

ओहार- आवरण, परदा, आच्छादन।

(औ)

औचक- अचानक, यकायक, सहसा।

औरत- स्त्री, जोरू, घरनी, महिला, मानवी, तिरिया, नारी, वनिता, घरवाली।

औचित्य- उपयुक्तता, तर्कसंगति, तर्कसंगतता।

औलाद- संतान, संतति, आसऔलाद, बाल-बच्चे।

औषधालय- चिकित्सालय, दवाखाना, अस्पताल।

(क)

कमल- नलिन, अरविन्द, उत्पल, अम्भोज, तामरस, पुष्कर, महोत्पल, वनज, कंज, सरसिज, राजीव, पद्म, पंकज, नीरज, सरोज, जलज, जलजात, शतदल, पुण्डरीक, इन्दीवर।

किरण- गभस्ति, रश्मि, अंशु, अर्चि, गो, कर, मयूख, मरीचि, ज्योति, प्रभा।

कामदेव- मदन, मनोज, अनंग, आत्मभू, कंदर्प, दर्पक, पंचशर, मनसिज, काम, रतिपति, पुष्पधन्वा, मन्मथ।

कपड़ा- मयुख, वस्त्र, चीर, वसन, पट, अंशु, कर, अम्बर, परिधान।

कुबेर- किन्नरेश, यक्षराज, धनद, धनाधिप, राजराज।

किस्मत- होनी, विधि, नियति, भाग्य।

कच- बाल, केश, कुन्तल, चिकुर, अलक, रोम, शिरोरूह।

कबूतर- कपोत, रक्तलोचन, पारावत, कलरव, हारिल।

कण्ठ- ग्रीवा, गर्दन, गला, शिरोधरा।

कृपा- प्रसाद, करुणा, अनुकम्पा, दया, अनुग्रह।

किताब- पोथी, ग्रन्थ, पुस्तक।

किनारा- तीर, कूल, कगार, तट।

किसान- कृषक, भूमिपुत्र, हलधर, खेतिहर, अन्नदाता।

कृष्ण- राधापति, घनश्याम, वासुदेव, माधव, मोहन, केशव, गोविन्द, मुरारी, नन्दनन्दन, राधारमण, दामोदर, ब्रजवल्लभ, गोपीनाथ, मुरलीधर, द्वारिकाधीश, यदुनन्दन, कंसारि, रणछोड़, बंशीधर, गिरधारी।

कान- कर्ण, श्रुति, श्रुतिपटल, श्रवण, श्रोत, श्रुतिपुट।

कोयल- कोकिला, पिक, काकपाली, बसंतदूत, सारिका, कुहुकिनी, वनप्रिया।

क्रोध- रोष, कोप, अमर्ष, गुस्सा, आक्रोश, कोह, प्रतिघात।

कार्तिकेय- कुमार, षडानन, शरभव, स्कन्द।

कुत्ता- श्वा, श्रवान, कुक्कुर। शुनक, सरमेव।

कल्पद्रुम- देवद्रुम, कल्पवृक्ष, पारिजात, मन्दार, हरिचन्दन।

काक- कौआ, वायस, काग, करठ, पिशुन।

कंगाल- निर्धन, गरीब, रंक, धनहीन।

कंचन- स्वर्ण, सोना, कनक, कुंदन, हिरण्य।

कंजूस- कृपण, सूम, मक्खीचूस।

कंटक- काँटा, खार, सूल।

कंदरा- गुफा, खोह, विवर, गुहा।

कछुआ- कच्छप, कमठ, कूर्म।

कटक- फौज, सेना, पलटन, लश्कर, चतुरंगिणी।

कद्र- मान, सम्मान, इज्जत, प्रतिष्ठा।

कमजोर- निर्बल, बलहीन, दुर्बल, मरियल, शक्तिहीन।

कमला- लक्ष्मी, महालक्ष्मी, श्री, हरप्रिया।

कर्ज- उधार, ऋण, कर्जा, उधारी, कुसीद।

कलानाथ- चंद्रमा, कलाधर, सुधाकर, सोम, सुधांशु, हिमांशु, तारापति।

कल्याण- भलाई, परहित, उपकार, भला।

कष्ट- तकलीफ, पीड़ा, वेदना, दुःख।

काग- कौआ, कागा, काक, वायस।

कातिल- खूनी, हत्यारा, घातक।

कामधेनु- सुरभि, सुरसुरभि, सुरधेनु।

कायर- कापुरुष, डरपोक, बुजदिल।

काल- समय, वक्त, वेला।

कालकूट- जहर, विष, गरल, हलाहल।

काला- श्याम, कृष्ण, कलूटा, साँवला, स्याह।

किनारा- तट, तीर, कगार, कूल, साहिल।

किरण- किरन, अंशु, रश्मि, मयूख।

किरीट- ताज, मुकुट, शिरोभूषण।

किश्ती- कश्ती, नाव, नौका, नैया।

कीर- तोता, सुग्गा, सुआ, शुक।

कुंभ- घड़ा, गागर, घट, कलश।

कुसुम- पुष्प, फूल, प्रसून, पुहुप।

कृश- दुबला, क्षीणकाय, कमजोर, दुर्बल, कृशकाय।

कृषि- किसानी, खेतीबाड़ी, काश्तकारी।

केतन- ध्वज, झंडा, पताका, परचम।

केवट- मल्लाह, माँझी, खेवैया, नाविक।

केसरी- शेर, सिंह, नाहर, वनराज, मृगराज, मृगेंद्र।

कोकिल- कोकिला, कोयल, पिक, श्यामा।

कोविद- विद्वान, पंडित, विशारद।

कुद्ध- नाराज, कुपित, क्रोधित, क्रोधी।

क्रूर- बेरहम, बेदर्द, बेदर्दी, बर्बर।

क्षिप्र- तीव्र, तेज, द्रुत, शीघ्र, तुरंत।

क्षीण- कमजोर, कृश, दुर्बल, अशक्त।

क्षीर- दूध, गोरस, दुग्ध।

कीर्ति- यश, ख्याति, प्रतिष्ठा, शोहरत, प्रसिद्धि।

(ख)

खाना- भोज्य सामग्री, खाद्यय वस्तु, आहार, भोजन।

खग- पक्षी, द्विज, विहग, नभचर, अण्डज, शकुनि, पखेरू।

खंभा- स्तूप, स्तम्भ, खंभ।

खंड- अंश, भाग, हिस्सा, टुकड़ा।

खटमल- मत्कुण, खटकीट, खटकीड़ा।

खद्योत- जुगनू, सोनकिरवा, पटबिजना, भगजोगिनी।

खर- गधा, गर्दभ, खोता, रासभ, वैशाखनंदन।

खरगोश- शशक, शशा, खरहा।

खल- दुष्ट, बदमाश, दुर्जन, गुंडा।

खलक- दुनिया, जगत, जग, विश्व, जहान।

खादिम- नौकर, चाकर, भृत्य, अनुचर।

खाविंद- पति, मियाँ, भर्तार, बालम, साजन, सैयाँ।

खिल्ली- मखौल, ठिठोली, उपहास।

खुदगर्ज- स्वार्थी, मतलबी, स्वार्थपरायण।

खुदा- राम, रहीम, रहमान, अल्लाह, परवरदिगार।

खौफ- डर, भय, दहशत, भीति।

खून- रक्त, लहू, शोणित, रुधिर।

(ग)

गणेश- विनायक, गजानन, गौरीनंदन, मूषकवाहन, गजवदन, विघ्ननाशक, भवानीनन्दन, विघ्नराज, मोदकप्रिय, मोददाता, गणपति, गणनायक, शंकरसुवन, लम्बोदर, महाकाय, एकदन्त।

गंगा- देवनदी, मंदाकिनी, भगीरथी, विश्नुपगा, देवपगा, ध्रुवनंदा, सुरसरिता, देवनदी, जाह्नवी, सुरसरि, अमरतरंगिनी, विष्णुपदी, नदीश्वरी, त्रिपथगा।

गज- हाथी, हस्ती, मतंग, कूम्भा, मदकल ।

गाय- गौ, धेनु, सुरभि, भद्रा, दोग्धी, रोहिणी।

गृह- घर, सदन, गेह, भवन, धाम, निकेतन, निवास, आगार, आयतन, आलय,

आवास, निलय, मंदिर।

गर्मी- ताप, ग्रीष्म, ऊष्मा, गरमी, निदाघ।

गुरु- शिक्षक, आचार्य, उपाध्याय।

गणेश- विनायक, गणपति, लंबोदर, गजानन्।

गंगा- भगीरथी, मंदाकिनी,सुरसरिता, देवनदी, जाहनवी।

गरुड़- खगेश, पत्रगारि, उरगारि, हरियान, वातनेय, खगपति, सुपर्ण, विषमुख।

गँवार- अशिष्ट, असभ्य, उजड्ड।

गऊ- गैया, गाय, धेनु।

गगन- आसमान, आकाश, नभ, व्योम, अंतरिक्ष।

गज- हाथी, गय, गयंद, गजेंद्र, मतंग, मराल, फील।

गजानन- गणेश, एकदंत, विनायक, विनायक, विघ्नेश, लंबोदर।

गन्ना- ईख, इक्षु, उक्षु, ऊख।

गरदन- गला, कंठ, ग्रीवा, गलई।

गल्ला- अन्न, अनाज, फसल, खाद्यान्न।

गाँव- ग्राम, देहात, खेड़ा, पुरवा, टोला।

गाथा- कथा, कहानी, किस्सा, दास्तान।

गाना- गान, गीत, नगमा, तराना।

गाफिल- बेखबर, बेपरवाह, असावधान।

गिरि- पहाड़, मेरु, शैल, महीधर, धराधर, भूधर।

गिरिराज- हिमालय, पर्वतराज, पर्वतेश्वर, शैलेंद्र, गिरीश, गिरींद्र।

गीदड़- श्रृंगाल, सियार, जंबुक।

गुनाह- अपराध, कसूर, खता, दोष।

गुलामी- दासता, परतंत्रता, परवशता।

गेहूँ- कनक, गोधूम, गंदुम।

गोद- अंक, क्रोड़, गोदी।

गोधूलि- साँझ, संध्या, शाम, सायंकाल।

ग्रामीण- ग्राम्य, ग्रामवासी, देहाती।

ग्राह- मगरमच्छ, घड़ियाल, मगर, झषराज।

गदहा- खर, गर्दभ, धूसर, रासभ, बेशर, चक्रीवान, वैशाखनन्दन।

(घ)

घट- घड़ा, कलश, कुम्भ, निप।

घर- आलय, आवास, गेह, गृह, निकेतन, निलय, निवास, भवन, वास, वास-स्थान, शाला, सदन।

घृत- घी, अमृत, नवनीत।

घटना- हादसा, वारदात, वाक्या।

घन- मेघ, बादल, घटा, अंबुद, अंबुधर।

घपला- गड़बड़ी, गोलमाल, घोटाला।

घमंड- दंभ, दर्प, गर्व, गरूर, गुमान, अभिमान, अहंकार।

घुड़सवार- अश्वारोही, तुरंगी, तुरंगारूढ़।

घुमक्कड़- भ्रमणशील, पर्यटक, यायावर।

घूँस- घूस, रिश्वत, उत्कोच।

घोड़ा- तुरंग, हय, घोट, घोटक, अश्व।

घास- तृण, दूर्वा, दूब, कुश, शाद।

(च)

चन्द्र- चाँद, सुधांशु, सुधाधर, राकेश, सारंग, निशाकर, निशापति, रजनीपति, मृगांक, कलानिधि, हिमांशु, इंदु, सुधाकर, विधु, शशि, चंद्रमा, तारापति।

चंद्रमा- चाँद, हिमांशु, इंदु, सुधांशु, विधु, तारापति, चन्द्र, शशि, कलाधर, निशाकर, मृगांक, राकापति, हिमकर, राकेश, रजनीश, निशानाथ, सोम, मयंक, सारंग, सुधाकर, कलानिधि।

चरण- पद, पग, पाँव, पैर, पाद।

चतुर- विज्ञ, निपुण, नागर, पटु, कुशल, दक्ष, प्रवीण, योग्य।

चोर- तस्कर, दस्यु, रजनीचर, मोषक, कुम्भिल, खनक, साहसिक।

चाँदनी- चन्द्रिका, कौमुदी, ज्योत्स्ना, चन्द्रमरीचि, उजियारी, चन्द्रप्रभा, जुन्हाई।

चाँदी- रजत, सौध, रूपा, रूपक, रौप्य, चन्द्रहास।

चन्द्रिका- चाँदनी, ज्योत्स्ना, कौमुदी।

चंट- चालाक, घाघ, काइयाँ।

चंडी- दुर्गा, अंबा, काली, कालिका, जगदंबिका, भगवती।

चंदन- गंधराज, गंधसार, मलयज।

चंद्रशेखर- महादेव, शिव, शंभु, शंकर, महेश्वर, नीलकंठ, आशुतोष।

चक्षु- नैन, आँख, दीदा, लोचन, नेत्र, नयन।

चतुरानन- विधाता, ब्रह्मा, सृष्टा, सृष्टिकर्ता।

चना- चणक, रहिला, छोला।

चर्मकार- मोची, चमार, पादुकाकार।

चारबाग- बाग, बगीचा, उपवन, उद्यान।

चारु- कमनीय, मनोहर, आकर्षक, खूबसूरत।

चावल- तंदुल, धान, भात।

चिट्ठी- पत्र, पाती, खत।

चिराग- दीया, दीपक, दीप, शमा।

चूहा- मूसा, मूषक, मुसटा, उंदुर।

चेरी- दासी, सेविका, बाँदी, नौकरानी, अनुचरी।

चेला- शागिर्द, शिष्य, विद्यार्थी।

चेहरा- शक्ल, आनन, मुख, मुखड़ा।

चोरी- स्तेय, चौर्य, मोष, प्रमोष।

चौकन्ना- सचेत, सजग, सावधान, जागरूक, चौकस।

चौकीदार- प्रहरी, पहरेदार, रखवाला।

चौमासा- वर्षाकाल, वर्षाऋतु, बरसात।

चोटी- मूर्धा, शीश, सानु, शृंग।

छतरी- छत्र, छाता, छत्ता।

छली- छलिया, कपटी, धोखेबाज।

छवि- शोभा, सौंदर्य, कान्ति, प्रभा।

छानबीन- जाँच, पूछताछ, खोज, अन्वेषण, शोध, गवेषण।

छैला- सजीला, बाँका, शौकीन।

छँटनी- कटौती, छँटाई, काट-छाँट।

छटा- शोभा, छवि, सुंदरता, खूबसूरती।

छल- दगा, ठगी, फरेब, छलावा।

छाछ- मही, मठा, मट्ठा, लस्सी, छाछी।

छाती- सीना, वक्ष, उर, वक्षस्थल।

छींटाकशी- ताना, व्यंग्य, फब्ती, कटाक्ष।

छुटकारा- मुक्ति, रिहाई, निजात।

छेरी- बकरी, छागी, अजा।

छोर- नोक, कोर, किनारा, सिरा।

(ज)

जल- मेघपुष्प, अमृत, सलिल, वारि, नीर, तोय, अम्बु, उदक, पानी, जीवन, पय, पेय।

जहर- गरल, कालकूट, माहुर, विष ।

जगत- संसार, विश्व, जग, जगती, भव, दुनिया, लोक, भुवन।

जीभ- रसना, रसज्ञा, जिह्वा, रसिका, वाणी, वाचा, जबान।

जंगल- विपिन, कानन, वन, अरण्य, गहन, कांतार, बीहड़, विटप।

जेवर- गहना, अलंकार, भूषण, आभरण, मंडल।

ज्योति- आभा, छवि, द्युति, दीप्ति, प्रभा, भा, रुचि, रोचि।

जहाज- पोत, जलयान।

जानकी- सीता, वैदही, जनकसुता, मिथिलेशकुमारी, जनकतनया, जनकात्मजा।

जंग- लड़ाई, संग्राम, समर, युद्ध।

जईफी- वृद्धावस्था, बुढ़ापा, बुजुर्गी।

जत्था- गुट, दल, समूह, टोली, गिरोह।

जनक- तात, बाप, पिता, बप्पा, बापू, वालिद।

जननी- माँ, माता, मम्मी, अम्मा, वालिदा।

जन्नत- स्वर्ग, सुरधाम, बैकुंठ, सुरलोक, हरिधाम।

जन्मांध- सूरदास, अंधा, आँधरा, नेत्रहीन।

जबह- वध, हत्या, कत्ल, खून।

जम्हूरियत- प्रजातंत्र, लोकतंत्र, लोकशाही, जनताशासन।

जमाई- दामाद, जामाता, जँवाई।

जमीन- धरती, भू, भूमि, पृथ्वी, धरा, वसुंधरा।

जय- जीत, फतह, विजय।

जरठ- वृद्ध, बुड्ढा, बूढ़ा।

जलाशय- तालाब, तलैया, ताल, पोखर, सरोवर।

जवान- तरुण, युवक, नौजवान, नौजवाँ, युवा।

जवानी- युवावस्था, यौवन, तारुण्य, तरुणाई।

जहन्नुम- नरक, दोजख, यमपुरी, यमलोक।

जहाज- पोत, बेड़ा, जलयान, जलपोत।

जहीन- बुद्धिमानी, अक्लमंद, मेधावी, मेधावान, तीक्ष्ण बुद्धि।

जाँघ- उरु, जानु, जघन, जंघा, रान।

जाई- बेटी, कन्या, पुत्री, लड़की।

जासूस- गुप्तचर, भेदिया, खुफिया।

जिंदगी- जिंदगानी, जीवन, हयात।

जिल्लत- अपमान, तिरस्कार, अनादर, तौहीन, बेइज्जती।

जिस्म- देह, बदन, शरीर, काया, वपु।

जीव- रूह, प्राण, आत्मा, जीवात्मा।

जीविका- रोजी-रोटी, रोजी, आजीविका, वृत्ति।

जुल- धोखा, फरेब, दगा, छल।

जुलाहा- बुनकर, कोली, कोरी।

जोहड़- तालाब, तलैया, तड़ाग, सरोवर, जलाशय।

ज्ञानी- विद्वान, सुविज्ञ, आलिम, विवेकी, ज्ञानवान।

ज्योत्स्ना- चाँदनी, चंद्रप्रभा, कौमुदी, जुन्हाई।

(झ)

झरना- उत्स, स्रोत, प्रपात, निर्झर, प्रस्त्रवण।

झण्डा- ध्वजा, पताका, केतु।

झंझा- अंधड़, आँधी, बवंडर, झंझावत, तूफान।

झाँसा- दगा, धोखा, फरेब, ठगी।

झींगुर- घुरघुरा, झिल्ली, जंजीरा, झिल्लिका।

झूठ- असत्य, मिथ्या, मृषा, अनृत।

(ट)

टक्कर- मुठभेड़, लड़ाई, मुकाबला।

टहलुआ- नौकर, सेवक, खिदमतगार।

टाँग- पाँव, पैर, टंक।

टीका- तिलक, चिह्न, दाग, धब्बा।

टोना- टोटका, जादू, यंत्रमंत्र, लटका।

टंटा- झगड़ा, लफ़ड़ा, पचड़ा, झंझट।

टसुआ- अश्क, अश्रु, आँसू।

टहनी- डाल, डाली, वृंत, उपशाखा, प्रशाखा।

टहल- सेवा, परिचर्या, खिदमत, सुश्रूषा।

टेर- बुलावा- गुहार, पुकार, आह्वान।

(ठ)

ठंड- ठंड, शीत, सर्दी।

ठग- छली, छलिया, फ़रेबी, वंचक, धूर्त, धोखेबाज।

ठाँव- स्थान, जगह, ठिकाना।

ठिंगना- बौना, वामन, नाटा।

ठीक- उपयुक्त, उचित, मुनासिब।

ठेठ- निपट, निरा, बिल्कुल।

ठटरी- कंकाल, पंजर, अस्थिपंजर, ठठरी।

ठठोली- मजाक, परिहास, ठट्ठा, ठिठोली, दिल्लगी।

ठन-ठन गोपाल- निर्धन, गरीब, दरिद्र, अकिंचन।

ठहाका- कहकहा, अट्टहास, खिलखिलाना।

ठाकुरद्वारा- मंदिर, देवालय, शिवाला, देवस्थान।

ठाली- बेरोजगार, ठलुआ, बेकार।

ठिल्ली- गगरी, गागर, घड़ा, मटकी।

ठुड्डी- ठुड्डी, हनु, चिबुक, ठोड़ी।

ठेस- चोट, आघात, धक्का।

(ड)

डंडा- सोंटा, छड़ी, लाठी।

डाली- भेंट, उपहार।

डंका- नगाड़ा, भेरी, दुंदभि, धौंसा।

डंस- मच्छर, मस, डाँस, मच्छड़।

डगर- राह, रास्ता, पथ, मार्ग, पंथ।

डर- खौफ, भय, दहशत, भीति।

डाकू- दस्यु, लुटेरा, डकैत, बटमार, राहजन।

डाल- डाली, टहनी, वृंत, शाखा।

डाह- द्वेष, ईर्ष्या, जलन, कुढ़न।

डोली- पालकी, डोला, मियाना।

(ढ)

ढब- ढंग, रीति, तरीका, ढर्रा।

ढाँचा- पंजर, ठठरी।

ढील- शिथिलता, सुस्ती, अतत्परता।

ढूँढ- खोज, तलाश।

ढँग- शऊर, सलीका, कायदा, तौरतरीका।

ढिंढोरा- मुनादी, ढँढोरा, डुगडुगी, डौंड़ी।

ढिग- समीप, निकट, पास, आसन्न।

ढिबरी- दीया, चिराग, डिबिया, लैंप।

ढीठ- धृष्ट, उद्दंड, दुस्साहसी।

ढोंग- पाखंड, प्रपंच, आडम्बर, ढोंगबाजी।

ढोल- ढोलकी, ढोलक, पटह, प्रणव।

ढोर- चौपाया, मवेशी।

(त)

तालाब- सरोवर, जलाशय, सर, पुष्कर, ह्रद, पद्याकर , पोखरा, जलवान, सरसी, तड़ाग।

तोता- सुग्गा, शुक, सुआ, कीर, रक्ततुण्ड, दाड़िमप्रिय।

तरुवर- वृक्ष, पेड़, द्रुम, तरु, विटप, रूंख, पादप।

तलवार- असि, कृपाण, करवाल, खड्ग, शमशीर चन्द्रहास।

तरकस- तूण, तूणीर, त्रोण, निषंग, इषुधी।

तामरस- कमल, पंकज, सरसिज, नीरज, पुण्डरीक, इन्दीवर।

तिमिर- तम, अंधकार, अंधेरा, तमिस्त्रा।

तंगदस्त- तंगहाल, गरीब, फटेहाल, निर्धन।

तंज- कटाक्ष, ताना, व्यंग्य, फबती, छींटाकशी।

तंदुल- धान, चावल, अक्षत, चाउर।

तकदीर- किस्मत, मुकद्दर, नसीब, भाग्य, प्रारब्ध।

तट- कगार, किनारा, कूल, तीर, साहिल।

तटिनी- नदी, सरिता, दरिया, सलिला, तरंगिणी।

तड़ाग- जलाशय, सरोवर, तालाब, पोखर।

तड़ित- विद्युत, बिजली, दामिनी, सौदामिनी, गाज।

तथागत- बुद्ध, सिद्धार्थ, बोधिसत्व, गौतम।

तदबीर- तरकीब, उपाय, युक्ति।

तन- काया, देह, शरीर, बदन, तनु।

तपस्वी- तापस, मुनि, संन्यासी, तपसी, बैरागी।

तपेदिक- टी.बी., दिक, यक्ष्मा, राजयक्ष्मा।

तबाह- ध्वस्त, नष्ट, बरबाद।

तम- अँधेरा, अंधकार, तिमिर, अँधियारा।

तमा- रजनी, रात, निशा, रात्रि।

तमारि- सूरज, सूर्य, दिवाकर, दिनकर, आदित्य, भानु, भास्कर।

तरनी- नौका, नाव, किश्ती, नैया।

तरुण- युवक, युवा, जवान, नौजवान।

तरुणाई- युवावस्था, यौवन, जवानी, जोबन।

तहजीब- संस्कृति, सभ्यता, तमद्दुन।

तिजारत- व्यवसाय, व्यापार, सौदागरी।

तिरिया- स्त्री, औरत, महिला, ललना।

तीमारदारी- सेवाटहल, परिचर्या, सेवासुश्रूषा।

तुरंग- घोड़ा, अश्व, हय, घोटक, तुरग।

तुला- तराजू, काँटा, धर्मकाँटा।

त्वचा- चर्म, चमड़ा, चमड़ी, खाल।

तीर- शर, बाण, विशिख, शिलीमुख, अनी, सायक।

(थ)

थोड़ा- अल्प, न्यून, जरा, कम।

थाती- जमापूँजी, धरोहर, अमानत।

थाक- ढेर, समूह।

थप्पड़- तमाचा, झापड़।

थकान- थकावट, श्रांति, क्लांति।

थल- स्थान, स्थल, भूमि, जगह।

थवई- राज, राजगीर, मिस्त्री, राजमिस्त्री।

थोथा- सारहीन, खोखला, खाली।

थोबड़ा- मुखड़ा, मुँह, थूथन।

थंभ- खंभ, खंभा, स्तम्भ।

(द)

दूध- दुग्ध, दोहज, पीयूष, क्षीर, पय, गौरस, स्तन्य।

दास- नौकर, चाकर, सेवक, परिचारक, अनुचर, भृत्य, किंकर।

दुःख- पीड़ा, कष्ट, व्यथा, वेदना, संताप, संकट, क्लेश, यातना, यन्तणा, शोक, खेद, पीर,।

देवता- सुर, देव, अमर, वसु, आदित्य, निर्जर, त्रिदश, गीर्वाण, अदितिनंदन, अमर्त्य, अस्वप्न, आदितेय, दैवत, लेख, अजर, विबुध।

द्रव्य- धन, वित्त, सम्पदा, विभूति, दौलत, सम्पत्ति।

दैत्य- असुर, इंद्रारि, दनुज, दानव, दितिसुत, दैतेय, राक्षस।

दधि- दही, गोरस, मट्ठा, तक्र।

दरिद्र- निर्धन, ग़रीब, रंक, कंगाल, दीन।

दिन- दिवस, याम, दिवा, वार, प्रमान, वासर, अह्न।

दीन- ग़रीब, दरिद्र, रंक, अकिंचन, निर्धन, कंगाल।

दीपक- दीप, दीया, प्रदीप।

दुष्ट- पापी, नीच, दुर्जन, अधम, खल, पामर।

दाँत- दशन, रदन, रद, द्विज, दन्त, मुखखुर।

दर्पण- शीशा, आरसी, आईना, मुकुर।

दुर्गा- चंडिका, भवानी, कुमारी, कल्याणी, सिंहवाहिनी, कामाक्षी, सुभद्रा, महागौरी, कालिका, शिवा, चण्डी, चामुण्डा।

दया- अनुकंपा, अनुग्रह, करुणा, कृपा, प्रसाद, संवेदना, सहानुभूति, सांत्वना।

देव-अमर, देवता, सुर, निर्जर, वृन्दारक, आदित्य।

दंगल- कुश्ती, मल्लयुद्ध, पहलवानी, बाहुयुद्ध।

दक्ष- निपुण, प्रवीण, चतुर, कुशल, होशियार।

दनुज- असुर, दानव, दैत्य, राक्षस, निशाचर।

दम- ताकत, बल, शक्ति, दमखम।

दर- भाव, मूल्य, रेट, कीमत।

दरख्त- वृक्ष, तरु, पेड़, विटप, द्रुम।

दरियादिल- उदार, दानी, दानशील, फ़राख़दिल।

दरीचा- खिड़की, गवाक्ष, झरोखा।

दशकंधर- दशानन, लंकापति, दशकंठ, रावण।

दशरथ- अवधेश, कौशलपति, दशस्यंदन, रावण।

दस्तूर- रीति-रिवाज, प्रथा, परंपरा, चलन।

दादा- पितामह, बाबा, आजा।

दादुर- मेंढक, मंडूक, भेक।

दारा- बीवी, पत्नी, अर्धांगिनी, वामांगिनी, गृहणी।

दिनकर- सूरज, सूर्य, भानु, भास्कर, दिवाकर, रवि, दिवेश, दिनेश।

दिवंगत- स्वर्गीय, मृत, मरहूम, परलोकवासी।

दीदा- नेत्र, नयन, आँख, चक्षु।

दुनिया- जग, जगत, खलक, जहान, विश्व, संसार, भव।

दुर्गुण- अवगुण, ऐब, बुराई, खामी।

दुर्जन- दुष्ट, खल, शठ, असज्जन।

दुर्भिक्ष- अकाल, दुकाल, दुष्काल, सूखा।

दुर्लभ- अलभ्य, दुष्प्राप्य, अप्राप्य।

दुविधा- कशमकश, पशोपेश, असमंजस, अनिश्चय।

दुश्मन- रिपु, वैरी, अरि, शत्रु, बैरी।

दुष्कर- कठिन, दुसाध्य, दूभर, मुश्किल।

देश- राष्ट्र, राज्य, मुल्क।

देशज- देशजात, देशीय, देशी, मुल्की, वतनी।

देशाटन- यात्रा, विहार, पर्यटन, देशभ्रमण।

देहाती- ग्रामवासी, ग्रामीण, ग्राम्य।

द्राक्षा- अंगूर, दाख, रसा, रसाला।

द्वेषी- विद्वेषी, ईर्ष्यालु, विरोधी।

द्वैत- जोड़ा, युगल, द्वय, यमल, युग, युति।

द्वैपायन- वेदव्यास, व्यास, पाराशर, कृष्ण।

देह- काया, तन, शरीर, वपु, गात।

(ध)

धन- दौलत, संपत्ति, सम्पदा, वित्त।

धरती- धरा, धरती, वसुधा, ज़मीन, पृथ्वी, भू, भूमि, धरणी, वसुंधरा, अचला, मही, रत्नवती, रत्नगर्भा।

धंधा- आजीविका, उद्योग, कामधंधा, व्यवसाय।

धनंजय- अर्जुन, सव्यसाची, पार्थ, गुड़ाकेश, बृहन्नला।

धनु- धनुष, पिनाक, शरासन, कोदंड, कमान, धनुही।

धराधर- पर्वत, पहाड़, शैल, मेरु, महीधर, भूधर।

धराधीश- सम्राट, शहंशाह, नृप, नरेश, महीप, महीपति।

धात्री- धाय, उपमाता, आया, दाई।

धान- चावल, चाउर, तंदुल, शालि, व्रीहि।

धी- अक्ल, दिमाग, बुद्धि, मति, प्रज्ञा, मेधा, विवेक।

धीरज- सब्र, संतोष, तसल्ली, धैर्य, दिलासा।

धीवर- मछुहारा, मछुआरा, मत्स्यजीवी।

धेनु- गऊ, गाय, गैया, गौ, गोमाता, सुरभि।

ध्येय- प्रयोजन, अभिप्राय, लक्ष्य, मकसद, उद्देश्य।

ध्वज- झंडा, ध्वजा, केतन, केतु।

ध्वनि- नाद, रव, स्वर, ताल, आवाज।

धनुष- चाप्, शरासन, कमान, कोदंड, पिनाक, सारंग, धनु।

(न)

नदी- तनूजा, सरित, शौवालिनी, स्रोतस्विनी, आपगा, निम्नगा, कूलंकषा, तटिनी, सरि, सारंग, जयमाला, तरंगिणी, दरिया, निर्झरिणी।

नौका- नाव, तरिणी, जलयान, जलपात्र, तरी, बेड़ा, डोंगी, तरी, पतंग।

नाग- विषधर, भुजंग, अहि, उरग, काकोदर, फणीश, सारंग, व्याल, सर्प, साँप।

नर्क- यमलोक, यमपुर, नरक, यमालय।

नर- जन, मानव, मनुष्य, पुरुष, मर्त्य, मनुज।

निंदा- दोषारोपण, फटकार, बुराई, भर्त्सना।

नेत्र- चक्षु, लोचन, नयन, अक्षि, चख, आँख।

नंदकुमार- नंदलाल, नंदकिशोर, नंदनंदन, कृष्ण, मुरारी, मोहन।

नंदिनी- बेटी, पुत्री, अंगजा, तनुजा, सुता, धी, दुहिता।

नक्षत्र- उडु, तारिका, नखत, जुन्हाई।

नगपति- हिमालय, पर्वतराज, पर्वतेश्वर, नगेश, नगेंद्र, शैलेन्द्र।

नजीर- मिसाल, दृष्टांत, उदाहरण।

नशेमन- होंसला, आशियाना, नीड़।

नश्वर- नाशवान, फानी, क्षयी, क्षर, भंगुर, मर्त्य।

नसीहत- शिक्षा, सीख, उपदेश।

नसैनी- जीना, सीढ़ी, सोपान।

नाऊ- हज्जाम, हजाम, क्षौरकार, नाई, नाऊठाकुर।

नामर्द- क्लीव, नपुंसक, पुंसत्वहीन।

नारी- स्त्री, वनिता, महिला, मानवी।

नाविक- केवट, खेवट, मल्लाह, खिवैया।

नाहर- शेर, सिंह, मृगराज, मृगेंद्र, केसरी, केहरी।

निभृत- एकांत, निर्जन, जनशून्य, विजन, वीरान, सुनसान।

नियम- उसूल, सिद्धांत, विधि, रीति।

निरक्षर- अनपढ़, अपढ़, अशिक्षित, लाइल्म।

निराला- अनूठा, अनोखा, अपूर्व, अद्भुत, अद्वितीय।

निवेदन- विनय, अनुनय, विनती, प्रार्थना, गुजारिश, इल्तजा।

निशा- रात्रि, रैन, रात, निशि, विभावरी।

निष्ठुर- निर्दयी, निर्मम, संगदिल, क्रूर, कठोर।

नीरस- फीका, बेरस, बेजायका, अस्वाद।

नूतन- नव, नवल, नव्य, नवीन।

नूर- आभा, आलोक, कांति, तेज, प्रकाश।

नौकर- भृत्य, चाकर, किंकर, मुलाजिम, खादिम।

न्यौता- निमंत्रण, आमंत्रण, बुलावा।

नया- नूतन, नव, नवीन, नव्य।

(प)

पति- भर्ता, वल्लभ, स्वामी, प्राणाधार, प्राणप्रिय, प्राणेश, आर्यपुत्र।

पत्नी- भार्या, दारा, बेगम, कलत्र, प्राणप्रिया, वधू, वामा, अर्धांगिनी, सहधर्मिणी, गृहणी, बहु, वनिता, जोरू, वामांगिनी।

पक्षी- खेचर, दविज, पतंग, पंछी, खग, विहग, परिन्दा, शकुन्त, अण्डज, चिडिया, गगनचर, पखेरू, विहंग, नभचर।

पर्वत- पहाड़, गिरि, अचल, भूमिधर, तुंग आद्रि, शैल, धरणीधर, धराधर, नग, भूधर, महीधर।

पण्डित- सुधी, विद्वान, कोविद, बुध, धीर, मनीषी, प्राज्ञ, विचक्षण।

पुत्र- बेटा, लड़का, आत्मज, सुत, वत्स, तनुज, तनय, नंदन।

पुत्री- बेटी, आत्मजा, तनूजा, दुहिता, नन्दिनी, लड़की, सुता, तनया।

पृथ्वी- धरा, धरती, भू, इला, उर्वी, धरित्री, धरणी, अवनि, मेदिनी, क्षिति, मही, वसुंधरा, वसुधा, जमीन, भूमि।

पुष्प- फूल, सुमन, कुसुम, मंजरी, प्रसून, पुहुप।

पानी- जल, नीर, सलिल, अंबु, अंभ, उदक, तोय, जीवन, वारि, पय, अमृत, मेघपुष्प, सारंग।

पार्वती- अपर्णा, अंबिका, आर्या, उमा, गौरी, गिरिजा, भवानी, रुद्राणी, शिवा।

परिवार- कुटुंब, कुनबा, खानदान, घराना।

परिवर्तन- बदलाव, हेरफेर, तबदीली, फेरबदल।

पत्थर- पाहन, पाषाण, प्रस्तर, उपल।

पथ- मग, मार्ग, राह, पंथ, रास्ता।

पिता- जनक, तात, पितृ, बाप।

प्रकाश- ज्योति, चमक, प्रभा, छवि, द्युति।

पेड़- तरु, द्रुम, वृक्ष, पादप, रुक्ष।

पैर- पाँव, पद, चरण, पाद, पग।

पंक- कीचड़, कीच, कर्दम, चहला।

पंकज- कमल, राजीव, पद्म, सरोज, नलिन, जलज।

पंख- डैना, पक्ष, पर, पखौटा, पाँख।

पंगु- अपाहिज, लंगड़ा, विकलांग, अपंग।

पत्ता- पत्ती, पात, पाती, पल्लव, पर्ण।

पथिक- राही, राहगीर, यात्री, बटोही, मुसाफिर, पंथी।

परवाना- फतिंगा, पतंगा, शलभ, फुनगा, भुनगा।

परिणति- नतीजा, अंजाम, फल, परिणाम।

परिणय- शादी, विवाह, ब्याह, पाणिग्रहण।

परोपकार- परहित, भलाई, नेकी, परकाज, परमार्थ, परार्थ।

पर्जन्य- बादल, मेघ, घनश्याम, नीरद, वारिद, जलद।

पर्याय- समानार्थी, एकार्थी, एकार्थवाची।

पलटन- सेना, आर्मी, लश्कर, चमू, फौज।

पहेली- प्रहेलिका, मुअम्मा, मुकरी, कूटप्रश्न, बुझौवल।

पाठशाला- स्कूल, विद्यापीठ, विद्यालय, मदरसा।

पातक- पाप, गुनाह, अघ, कल्मष।

पावस- वर्षाकाल, वर्षाऋतु, बारिस।

पाशविक- अमानवीय, बर्बर, क्रूर, अमानुषिक, पैशाचिक।

पाहुना- मेहमान, अतिथि, पाहुन, अभ्यागत।

पिक- कोयल, कोकिला, कोयलिया।

पृष्ठ- पेज, वर्क, सफहा, सफा, पन्ना।

पौ- सवेरा, सुबह, भोर, प्रातः।

पौरस्त्य- पूरबी, पूर्वी, प्राच्य, मशरिक़ी।

प्रजा- जनता, रिआया, रैयत, परजा।

प्रतिदिन- रोजाना, हर दिन, हर रोज, रोज, रोज-रोज।

प्रतियोगिता- स्पर्धा, प्रतिस्पर्धा, मुकाबला, होड़।

प्रवाद- अफवाह, किंवदंती, जनश्रुति।

प्रहरी- द्वारपाल, पहरेदार, प्रतिहारी, दरबान, चौकीदार।

प्राज्ञ- विद्वान, महाज्ञानी, बुद्धिमान, चतुर।

प्रासाद- महल, राजमहल, राजनिवास, राजभवन।

प्रेक्षागृह- नाट्यगृह, छविगृह, नाट्यशाला, रंगशाला, रंगभूमि, रंगस्थली।

पवन- वायु, हवा, समीर, वात, मारुत, अनिल, पवमान, समीरण, स्पर्शन।

(फ)

फल- फलम, बीजकोश।

फ़ख- गौरव, नाज, गर्व, अभिमान।

फजर- भोर, सवेरा, प्रभात, सहर, सकार।

फतह- सफलता, विजय, जीत, जफर।

फरमान- हुक्म, राजादेश, राजाज्ञा।

फलक- आसमान, आकाश, गगन, नभ, व्योम।

फसल- शस्य, पैदावार, उपज, खिरमन, कृषि- उत्पाद।

फालिज- पक्षाघात, अर्धांग, अधरंग, अंगघात।

फितरत- स्वभाव, प्रकृति, प्रवृत्ति, मनोवृत्ति, मिजाज।

फूट- मतभेद, मनमुटाव, अनबन, परस्पर, कलह।

फूल- पुष्प, सुमन, कुसुम, गुल, प्रसून।

(ब)

बाण- सर, तीर, सायक, विशिख, आशुग, इषु, शिलीमुख, नाराच।

बिजली- घनप्रिया, इन्द्रवज्र, चंचला, सौदामनी, चपला, बीजुरी, क्षणप्रभा, घनवल्ली, शया, ऐरावती, दामिनी, ताडित, विद्युत।

ब्रह्मा- विधि, विधाता, स्वयंभू, प्रजापति, आत्मभू, लोकेश, पितामह, चतुरानन, विरंचि, अज, कर्तार, कमलासन, नाभिजन्म, हिरण्यगर्भ।

ब्राह्मण- द्विज, भूदेव, विप्र, महीदेव, अग्रजन्मा, द्विजाति, भूसुर, महीसुर, वाडव,

भूमिसुर, भूमिदेव।

बहुत- अनेक, अतीव, अति, बहुल, भूरि, बहु, प्रचुर, अपरिमित, प्रभूत, अपार, अमित, अत्यन्त, असंख्य।

बादल- मेघ, घन, जलधर, जलद, वारिद, नीरद, सारंग, पयोद, पयोधर।

बालू- रेत, बालुका, सैकत।

बन्दर- वानर, कपि, कपीश, मर्कट, कीश, शाखामृग, हरि।

बगीचा- बाग़, वाटिका, उपवन, उद्यान, फुलवारी, बगिया।

बाल- कच, केश, चिकुर, चूल।

बंकिम- बाँका, तिरछा, वक्र, बंक, आड़ा।

बंजर- अनुपजाऊ, अनुर्वर, ऊसर।

बंदीगृह- कारागृह, कारागार, कारावास, कैदखाना, जेल।

बंधु- भ्राता, भाई, सहोदर, अग्रज, अनुज।

बख़ील- कंजूस, मक्खीचूस, कृपण, खसीस, सूम, मत्सर।

बजरंगबली- हनुमान, वायुपुत्र, केसरीनंदन, पवनपुत्र, बज्रांगी, महावीर।

बटमार- डाकू, लुटेरा, राहजन।

बटोही- मुसाफिर, राही, राहगीर, पथिक, पंथी, यात्री।

बहेलिया- आखेटक, अहेरी, शिकारी, आखेटी।

बाँसुरी- वेणु, बंशी, मुरली, बंसुरी।

बाजि- घोड़ा, अश्व, घोटक, तुरंग, तुरग, हय।

बायस- कौआ, कागा, काक, एकाक्ष।

बारिश- चौमासा, बरसात, वर्षा, वर्षाऋतु।

बुड्ढा- बूढ़ा, बुजुर्ग, वृद्ध, जईफ, वयोवृद्ध।

बेगम- महारानी, रानी, राज्ञी, राजमहिषी।

बेमिसाल- बेजोड़, लाजवाब, अनोखा, लासानी, अतुलनीय।

बैल- वृष, वृषभ, ऋषभ, वलीवर्द।

बलदेव- बलराम, बलभद्र, हलायुध, राम, मूसली, रोहिणेय, संकर्षण।

(भ)

भौंरा- अलि, मधुव्रत, शिलीमुख, मधुप, मधुकर, द्विरेप, षट्पद, भृंग, भ्रमर।

भोजन- खाना, भोज्य सामग्री, खाद्यय वस्तु, आहार।

भय- भीति, डर, विभीषिका।

भाई- तात, अनुज, अग्रज, भ्राता, भ्रातृ।

भंगुर- नाशवान, नश्वर, अनित्य, क्षर, मर्त्य, विनश्वर।

भंडारी- रसोइया, खानसामा, महाराज, रसोईदार।

भंवरा- भौंरा, भ्रमर, मधुकर, मधुप, मिलिंद, अलि, अलिंद, भृंग।

भक्त- आराधक, अर्चक, पुजारी, उपासक, पूजक।

भगिनी- बहन, बहना, स्वसा, अग्रजा।

भद्र- शिष्ट, शालीन, कुलीन, सभ्य, सलीकेदार, बासलीक़ा।

भरतखंड- भारतवर्ष, आर्यावर्त, भारत, हिंदुस्तान, हिंदोस्ताँ।

भरोसा- यकीन, विश्वास, ऐतबार, अक़ीदा, आश्वास।

भव- संसार, दुनिया, जग, जहाँ, विश्व, खलक, खल्क।

भविष्य- भावी, अनागत, भविष्यतकाल, मुस्तकबिल, भविष्यद।

भारती- शारदा, सरस्वती, वाग्देवी, वीणावादिनी, विद्या, वागेश्वरी, वागीशा।

भाल- मस्तक, पेशानी, माथा, ललाट।

भाला- बर्छा, बरछा, नेजा, कुंत, शलाका।

भीष्म- गंगापुत्र, शांतनुसुत, भीष्मपितामह, देवव्रत।

भुजा- भुज, बाहु, बाँह, बाजू।

भेद- फर्क, अंतर, भिन्नता, विषमता।

भ्रष्ट- पथभ्रष्ट, पतित, बदचलन, दुश्चरित्र, आचरणहीन।

भ्रू- भौंह, भौं, भृकुटि, भँव, त्यौरी।

भूषण- जेवर, गहना, आभूषण, अलंकार।

(म)

मछली- मीन, मत्स्य, झख, झष, जलजीवन, शफरी, मकर।

महादेव- शम्भु, ईश, पशुपति, शिव, महेश्वर, शंकर, चन्द्रशेखर, भव, भूतेश, गिरीश, हर, त्रिलोचन।

मेघ- घन, जलधर, वारिद, बादल, नीरद, वारिधर, पयोद, अम्बुद, पयोधर।

मुनि- यती, अवधूत, संन्यासी, वैरागी, तापस, सन्त, भिक्षु, महात्मा, साधु, मुक्तपुरुष।

मित्र- सखा, सहचर, स्नेही, स्वजन, सुहृदय, साथी, दोस्त।

मोर- केक, कलापी, नीलकंठ, शिखावल, सारंग, ध्वजी, शिखी, मयूर, नर्तकप्रिय।

मनुष्य- आदमी, नर, मानव, मानुष, जन, मनुज।

मदिरा- शराब, हाला, आसव, मधु, मद्य, वारुणी, सुरा, मद।

मधु- शहद, रसा, शहद, कुसुमासव।

मृग- हिरण, सारंग, कृष्णसार।

माता- जननी, माँ, अंबा, जनयत्री, अम्मा।

मूर्ख- गँवार, अल्पमति, अज्ञानी, अपढ़, जड़।

मृत्यु- देहांत, मौत, अंत, स्वर्गवास, निधन, देहावसान, पंचत्व, इंतकाल, काशीवास, गंगालाभ, निर्वाण, मरण।

माँ- अंबा, अम्बिका, अम्मा, जननी, धात्री, प्रसू।

मुर्गा- तमचूक, अरुणशिखा, ताम्रचूड़, कुक्कुट।

मग- पन्थ, मार्ग, बाट, पथ, राह।

मूढ़- मूर्ख, अज्ञानी, निर्बुद्धि, जड़, गंवार।

मैना- सारी, सारिका, त्रिलोचना, मधुरालाषा, कलहप्रिया।

मूँगा- प्रवाल, रक्तांग, विद्रुम, रक्तमणि।

मंजुल- मोहक, मनोहर, आकर्षक, शोभनीय, सुंदर।

मंजूषा- संदूक, बक्स, पिटारी, पिटक, पेटी, झाँपी।

मंतव्य- अभिमत, सम्मति, राय, सलाह, विचार।

मंसूख- रद्द, निरस्त, ख़ारिज, निरसित।

मकड़ी- मकरी, लूता, लूतिका, लूत।

मकतब- स्कूल, पाठशाला, विद्यालय, विद्यापीठ।

मकर- मगर, मगरमच्छ, घड़ियाल, नक्र, ग्राह, झषराज।

मजार- मकबरा, समाधि, कब्र, इमामबाड़ा।

मटका- कुंभ, झट, घड़ा, कलश।

मत्सर- द्वेष, ईर्ष्या, कुढ़न, जलन, डाह।

मनीषा- मति, बुद्धि, मेधा, प्रज्ञा, विचार।

मयूख- किरन, किरण, रश्मि, अंशु, मरीचि।

मरघट- मसान, मुर्दघाट, श्मशान, श्मशानघाट।

मरहूम- स्वर्गवासी, मृत, गोलोकवासी, दिवंगत।

मराल- हंस, राजहंस, सितपक्ष, धवलपक्ष।

मरुत- पवन, वायु, हवा, वात, समीर, मारुत।

मर्कट- बंदर, कपि, कीश, वानर, शाखामृग।

मशहूर- नामी, प्रसिद्ध, ख्यात, विख्यात, ख्यातिप्राप्त, प्रख्यात।

महक- खुशबू, सुवास, सुगंध, सुगंधि, सौरभ।

महाभारत- भारत, जयकाव्य, पंचमवेद, जय, महायुद्ध।

महावत- हाथीवान, पीलवान, फीलवान, आकुंशिक।

मिथुन- युग्म, युगल, जोड़ा, यमल।

मुकुट- ताज, उष्णीष, किरीट, राजमुकुट।

मुकुल- कलिका, कली, शिगूफा, कोरक, गुंजा।

मुगालता- भ्रांति, भ्रम, गलतफ़हमी, मतिभ्रम।

मुदर्रिस- शिक्षक, अध्यापक, गुरु, आचार्य, उस्ताद।

मृषा- मिथ्या, झूठ, असत्य, अनृत।

मोक्ष- मुक्ति, परधाम, निर्वाण, कैवल्य, सद्गति, निर्वाण, परमपद, अपवर्ग।

(य)

यम- सूर्यपुत्र, जीवितेश, श्राद्धदेव, कृतांत, अन्तक, धर्मराज, दण्डधर, कीनाश, यमराज।

यमुना- कालिन्दी, सूर्यसुता, रवितनया, तरणि-तनूजा, तरणिजा, अर्कजा, भानुजा।

यंत्रणा- व्यथा, तकलीफ, वेदना, यातना, पीड़ा।

यकीन- भरोसा, ऐतबार, आस्था, विश्वास।

यकृत- जिगर, कलेजा, जिगरा, पित्ताशय।

यक्ष्मा- टी.बी., तपेदिक, राजरोग, क्षय।

यज्ञोपवीत- जनेऊ, उपवीत, ब्रह्मसूत्र।

यतीम- बेसहारा, अनाथ, माँ-बापविहीन।

यशस्वी- मशहूर, विख्यात, नामवर, कीर्तिवान, ख्यातिवान।

यशोदा- यशोमति, जसोदा, नंदरानी।

यशोधरा- गौतम-पत्नी, गौतमी, गोपा।

याज्ञसेनी- पांचाली, द्रौपदी, सैरंध्री, द्रुपदसुता, कृष्णा।

याद- स्मृति, स्मरण, स्मरण-शक्ति, सुध, याद्दाश्त।

याम- पहर, प्रहर, बेला, वेला, जून।

यामिनी- रजनी, रात, रात्रि, रैन, राका, निशा।

युग- जुग, दौर, मन्वंतर, काल, कल्प, जमाना।

युद्ध- संग्राम, संघर्ष, समर, लड़ाई, रण, द्वंद्व।

युद्धभूमि- रणक्षेत्र, रणभूमि, समरभूमि, संग्रामभूमि, युद्धस्थल।

युधिष्ठिर- कौन्तेय, धर्मराज, धर्मपुत्र, अजातशत्रु।

योषा- योषिता, नारी, स्त्री, औरत, वनिता, महिला, तिरिया।

योम- दिवस, दिनमान, दिन, अह, सूर्यकाल।

युवति- युवती, सुन्दरी, श्यामा, किशोरी, तरुणी, नवयौवना।

(र)

रात्रि- निशा, क्षया, रैन, रात, यामिनी, रजनी, त्रियामा, क्षणदा, शर्वरी, तमस्विनी, विभावरी।

रात- रात्रि, रैन, रजनी, निशा, यामिनी, तमी, निशि, यामा, विभावरी।

राजा- नृपति, भूपति, नरपति, नृप, महीप, राव, सम्राट, भूप, भूपाल, नरेश, महीपति, अवनीपति।

रवि- सूरज, दिनकर, प्रभाकर, दिवाकर, सविता, भानु, दिनेश, अंशुमाली, सूर्य।

रमा- इन्दिरा, हरिप्रिया, श्री, लक्ष्मी, कमला, पद्मा, पद्मासना, समुद्रजा, श्रीभार्गवी, क्षीरोदतनया।

रामचन्द्र- अवधेश, सीतापति, राघव, रघुपति, रघुवर, रघुनाथ, रघुराज, रघुवीर, रावणारि, जानकीवल्लभ, कमलेन्द्र, कौशल्यानन्दन।

रावण- दशानन, लंकेश, लंकापति, दशशीश, दशकंध, दैत्येन्द्र।

राधिका- राधा, ब्रजरानी, हरिप्रिया, वृषभानुजा।

रक्त- खून, लहू, रुधिर, शोणित, लोहित।

राक्षस- दैत्य, असुर, निशाचर।

(ल)

लक्ष्मी- चंचला, कमला, पद्मा, रमा, हरिप्रिया, श्री, इंदिरा, पद्ममा, सिन्धुसुता, कमलासना।

लड़का- बालक, शिशु, सुत, किशोर, कुमार।

लड़की- बालिका, कुमारी, सुता, किशोरी, बाला, कन्या।

लक्ष्मण- लखन, शेषावतार, सौमित्र, रामानुज, शेष।

लौह- अयस, लोहा, सार।

लता- बल्लरी, बल्ली, बेली।

(व)

वृक्ष- तरू, अगम, पेड़, पादप, विटप, गाछ, दरख्त, शाखी, विटप, द्रुम।

विवाह- शादी, गठबंधन, परिणय, व्याह, पाणिग्रहण।

वायु- हवा, पवन, समीर, अनिल, वात, मारुत।

वसन- अम्बर, वस्त्र, परिधान, पट, चीर।

विधवा- अनाथा, पतिहीना, राँड़।

विष- ज़हर, हलाहल, गरल, कालकूट।

विष्णु- नारायण, दामोदर, पीताम्बर, माधव, केशव, गोविन्द, चतुर्भज, उपेन्द्र, जनार्दन, चक्रपाणि, विश्वम्भर, लक्ष्मीपति, मधुरिपु।

विश्व- जगत, जग, भव, संसार, लोक, दुनिया।

विद्युत- चपला, चंचला, दामिनी, सौदामिनी, तड़ित, बीजुरी, घनवल्ली, क्षणप्रभा, करका।

वारिश- वर्षण, वृष्टि, वर्षा, पावस, बरसात।

वीर्य- जीवन, सार, तेज, शुक्र, बीज।

वज्र- कुलिस, पवि, अशनि, दभोलि।

विशाल- विराट, दीर्घ, वृहत, बड़ा, महा, महान।

वर्षा- पावस, बरसात, वर्षाकाल, चौमासा, वर्षाऋतु।

वसन्त- मधुमास, माधव, कुसुमाकर, ऋतुराज।

वन- कानन, विपिन, अरण्य, कांतार

(श, ष)

शेर-हरि, मृगराज, व्याघ्र, मृगेन्द्र, केहरि, केशरी, वनराज, सिंह, शार्दूल, हरि, मृगराज।

शिव- भोलेनाथ, शम्भू, त्रिलोचन, महादेव, नीलकंठ, शंकर।

शरीर- देह, तनु, काया, कलेवर, वपु, गात्र, अंग, गात।

शत्रु- रिपु, दुश्मन, अमित्र, वैरी, प्रतिपक्षी, अरि, विपक्षी, अराति।

शिक्षक- गुरु, अध्यापक, आचार्य, उपाध्याय।

शेषनाग- अहि, नाग, भुजंग, व्याल, उरग, पन्नग, फणीश, सारंग।

शुभ्र- गौर, श्वेत, अमल, वलक्ष, धवल, शुक्ल, अवदात।

शहद- पुष्परस, मधु, आसव, रस, मकरन्द।

सरस्वती- गिरा, शारदा, भारती, वीणापाणि, विमला, वागीश, वागेश्वरी।

सेना- ऊनी, कटक, दल, चमू, अनीक, अनीकिनी।

साधु- सज्जन, भद्र, सभ्य, शिष्ट, कुलीन।

सलिल- अम्बु, जल नीर, तोय, सलिल, पानी, वारि।

सगर्भ- बंधु, भाई, सजात, सहोदर, भ्राता, सोदर।

सगर्भा- भगिनी, सजाता, सहोदर, बहिन, सोदरा।

षंड- हीजड़ा, नपुंसक, नामर्द।

षडानन- षटमुख, कार्तिकेय, षाण्मातुर।

(स)

समुद्र- सागर, पयोधि, उदधि, पारावार, नदीश, नीरनिधि, अर्णव, पयोनिधि, अब्धि, वारीश, जलधाम, नीरधि, जलधि, सिंधु, रत्नाकर, वारिधि।

समूह- दल, झुड, समुदाय, टोली, जत्था, मण्डली, वृंद, गण, पुंज, संघ, समुच्चय।

सरस्वती- गिरा, भाषा, भारती, शारदा, ब्राह्मी, वाक्, जातरूप, हाटक, वीणापाणि, विमला, वागीश, वागेश्वरी।

सुमन- कुसुम, मंजरी, प्रसून, पुष्प, फूल ।

सीता- वैदेही, जानकी, भूमिजा, जनकतनया, जनकनन्दिनी, रामप्रिया।

सर्प- साँप, अहि, भुजंग, ब्याल, फणी, पत्रग, नाग, विषधर, उरग, पवनासन।

सोना- स्वर्ण, कंचन, कनक, सुवर्ण, हाटक, हिरण्य, जातरूप, हेम, कुंदन।

सूर्य- रवि, सूरज, दिनकर, प्रभाकर, आदित्य, मरीची, दिनेश, भास्कर, दिनकर, दिवाकर, भानु, अर्क, तरणि, पतंग, आदित्य, सविता, हंस, अंशुमाली, मार्तण्ड।

संसार- जग, विश्व, जगत, लोक, दुनिया।

सिंह- केसरी, शेर, महावीर, व्याघ्र, पंचमुख, मृगेन्द्र, केहरी, केशी, ललित, हरि, मृगपति, वनराज, शार्दूल, नाहर, सारंग, मृगराज।

सम- सर्व, समस्त, सम्पूर्ण, पूर्ण, समग्र, अखिल, निखिल।

समीप- सन्निकट, आसन्न, निकट, पास।

सभा- अधिवेशन, संगीति, परिषद, बैठक, महासभा।

सुन्दर- कलित, ललाम, मंजुल, रुचिर, चारु, रम्य, मनोहर, सुहावना, चित्ताकर्षक, रमणीक, कमनीय, उत्कृष्ट, उत्तम, सुरम्य।

सन्ध्या- सायंकाल, शाम, साँझ, प्रदोषकाल, गोधूलि।

स्त्री- सुन्दरी, कान्ता, कलत्र, वनिता, नारी, महिला, अबला, ललना, औरत, कामिनी, रमणी।

सुगंधि- सौरभ, सुरभि, महक, खुशबू।

स्वर्ग- सुरलोक, देवलोक, दिव्यधाम, ब्रह्मधाम, द्यौ, परमधाम, त्रिदिव, दयुलोक।

स्वर्ण- सुवर्ण, कंचन, हेन, हारक, जातरूप, सोना, तामरस, हिरण्य।

सहेली- अलि, भटू, संगिनी, सहचारिणी, आली, सखी, सहचरी, सजनी, सैरन्ध्री।

संसार- लोक, जग, जहान, भूमण्डल, दुनियाँ, भव, जगत, विश्व।

(ह)

हस्त- हाथ, कर, पाणि, बाहु, भुजा।

हिमालय- हिमगिरी, हिमाचल, गिरिराज, पर्वतराज, नगपति, हिमपति, नगराज, हिमाद्रि, नगेश।

हिरण- सुरभी, कुरग, मृग, सारंग, हिरन।

होंठ- अक्षर, ओष्ठ, ओंठ।

हनुमान- पवनसुत, पवनकुमार, महावीर, रामदूत, मारुततनय, अंजनीपुत्र, आंजनेय, कपीश्वर, केशरीनंदन, बजरंगबली, मारुति।

हिमांशु- हिमकर, निशाकर, क्षपानाथ, चन्द्रमा, चन्द्र, निशिपति।

हंस- कलकंठ, मराल, सिपपक्ष, मानसौक।

हृदय- छाती, वक्ष, वक्षस्थल, हिय, उर।

हाथ- हस्त, कर, पाणि।

हाथी- नाग, हस्ती, राज, कुंजर, कूम्भा, मतंग, वारण, गज, द्विप, करी, मदकल।

लोकोक्तियाँ

1 . अपना रख , पराया चख : अपना बचाकर दूसरों का माल हड़प करना

2 . अपनी करनी पार उतरनी : स्वयं का परिश्रम ही काम आता है ।

3 . अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता : अकेला व्यक्ति शक्ति हीन होता है ।

4 . अधजल गगरी छलकत जाय : ओछा आदमी अधिक इतराता है ।

5 . अंधों में काना राजा : मूर्खों में कम ज्ञान वाला भी आदर पाता है ।

6 . अंधे के हाथ बटेर लगना : अयोग्य व्यक्ति को बिना परिश्रम संयोग से अच्छी वस्तु मिलना ।

7 . अंधा पीसे कुत्ता खाय : मूर्खों की मेहनत का लाभ अन्य उठाते हैं /असावधानी से अयोग्य को लाभ ।

8 . अब पछताये होत क्या , जब चिड़िया चुग गई खेत : अवसर निकल जाने पर पछताने से कोई लाभ नहीं ।

9 . अन्धे के आगे रोवै अपने नैना खोवै : निर्दय व्यक्ति या अयोग्य व्यक्ति से सहानुभूति की अपेक्षा करना व्यर्थ है ।

10 . अपनी गली में कुत्ता भी शेर बन जाता है । : अपने क्षेत्र में कमजोर भी बलवान होता है ।

11 . अन्धेर नगरी चौपट राजा : प्रशासन की अयोग्यता से सर्वत्र अराजकता आ जाना ।

12 . अन्धा क्या चाहे दो आँखें : बिना प्रयास वांछित वस्तु का मिल जाना ।

13 . अक्ल बड़ी या भैंस : शारीरिक बल से बुद्धिबल श्रेष्ठ होता है ।

14 . अपना हाथ जगन्नाथ : अपना काम अपने ही हाथों ठीक रहता है ।

15 . अपनी - अपनी डपली अपना - अपना राग : तालमेल का अभाव / सबका अलग - अलग मत होना /एकमत का अभाव ।

16 . अंधा बाँटे रेवड़ी फिर - फिर अपनों को देय : स्वार्थी व्यक्ति अधिकार पाकर अपने लोगों की सहायता करता है ।

17 . अंत भला तो सब भला : कार्य का अन्तिम चरण ही महत्त्वपूर्ण होता है ।

18 . आ बैल मुझे मार : जानबूझ कर मुसीबत में फंसना

19 . आम के आम गुठली के दाम : हर प्रकार का लाभ / एक काम से दो लाभ

20 . आँख का अंधा नाम नयन सुखः गुणों के विपरीत नाम होना ।

21 . आगे कुआँ पीछे खाई : दोनों / सब ओर से विपत्ति में फँसना

22 . आप भला जग भला : अपने अच्छे व्यवहार से सब जगह आदर मिलता है ।

23 . आये थे हरि भजन को ओटन लगे कपास : उद्देश्य से भटक जाना / श्रेष्ठ काम करने की बजाय तुच्छ कार्य करना / कार्य विशेष की उपेक्षा कर किसी अन्य कार्य में लग जाना ।

24 . आधा तीतर आधा बटेर : अनमेल मिश्रण / बेमेल चीजें जिनमें सामंजस्य का अभाव हो ।

25 . इन तिलों में तेल नहीं : किसी लाभ की आशा न होना ।

27 . आठ कनौजिए नौ चूल्हे : फूट होना ।

28 . उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे : अपना अपराध न मानना और पूछने वाले को ही दोषी ठहराना ।

29 . उल्टे बाँस बरेली को : विपरीत कार्य या आचरण करना

30 . ऊधो का न लेना , न माधो का देना : किसी से कोई मतलब न रखना / सबसे अलग ।

31 . ऊँची दुकान फीका पकवान : वास्तविकता से अधिक दिखावा / दिखावा ही दिखावा / केवल बाहरी दिखावा ।

32 . ऊँट के मुँह में जीरा : आवश्यकता की नगण्य पूर्ति

33 . ऊखली में सिर दिया तो मूसल का क्या डर : जब दृढ़ निश्चय कर लिया तो बाधाओं से क्या घबराना ।

34 . ऊँट किस करवट बैठता है : परिणाम में अनिश्चितता होना ।

35 . एक पंथ दो काज : एक काम से दोहरा लाभ / एक तरकीब से दो कार्य करना / एक साधन से दो कार्य करना ।

36 . एक अनार सौ बीमार : वस्तु कम , चाहने वाले अधिक एक स्थान के लिये सैकड़ों प्रत्याशी

37 . एक मछली सारा तालाब गंदा कर देती है : एक की बुराई से साथी भी बदनाम होते हैं ।

38 . एक म्यान में दो तलवारें नहीं समा सकती : दो प्रशासक एक ही जगह एक साथ शासन नहीं कर सकते ।

39 . एक हाथ से ताली नहीं बजती : लड़ाई का कारण दोनों पक्ष होते हैं ।

40 . एक तो करेला दूजे नीम चढ़ा । : बुरे से और अधिक बुरा होना / एक बुराई के साथ दूसरी बुराई का जुड़ जाना ।

41 . कागज की नाव नहीं चलती : बेइमानी से किसी कार्य में सफलता नहीं मिलती ।

42 . काला अक्षर भैंस बराबर : बिल्कुल निरक्षर होना ।

43 . कंगाली में आटा गीला : संकट पर संकट आना ।

44 . कोयले की दलाली में हाथ काले । : बुरे काम का परिणाम भी बुरा होता है / दुष्टों की संगति से कलंकित होते हैं ।

45 . का वर्षा जब कृषि सुखानी : अवसर बीत जाने पर साधन की प्राप्ति बेकार है ।

46 . कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा भानुमति ने कुनबा जोड़ा : अलग - अलग स्वभाव वालों को एक जगह एकत्र करना / इधर - उधर से सामग्री जुटा कर कोई निकृष्ट वस्तु का निर्माण करना ।

47 . कभी नाव गाड़ी पर कभी गाड़ी नाव पर : एक - दूसरे के काम आना परिस्थितियाँ बदलती रहती हैं ।

48 . काबुल में क्या गधे नहीं होते : मूर्ख सब जगह मिलते हैं ।

49 . कहने पर कुम्हार गधे पर नहीं चढ़ता : कहने से जिद्दी व्यक्ति काम नहीं करता ।

50 . कोउ नृप होउ हमें का हानि : अपने काम से मतलब रखना ।

51 . कौवा चला हंस की चाल भूल गया अपनी भी चाल : दूसरों के अनधिकार अनुकरण से अपने रीति रिवाज भूल जाना ।

52 . कभी घी घना तो कभी मुट्ठी चना : परिस्थितियाँ सदा एक सी नहीं रहतीं ।

53 . करले सो काम भजले सो राम : एक निष्ठ होकर कर्म और भक्ति करना

54 . काज परै कछ और काज सरै कछु और : दुनिया बड़ी स्वार्थी है काम निकाल कर मुँह फेर लेते हैं ।

55 . खोदा पहाड़ निकली चुहिया : अधिक परिश्रम से कम लाभ होना

56 . खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है । : स्पर्धावश काम करना / साथी को देखकर दूसरा साथी भी वैसा ही व्यवहार करता है ।

57 . खग जाने खग हीं की : मूर्ख व्यक्ति मूर्ख की बात भाषा समझता है ।

58 . खिसियानी बिल्ली खम्भा नोंचे : शक्तिशाली पर वश न चलने के कारण कमजोर पर क्रोध करना

59 . गागर में सागर भरना : थोड़े में बहुत कुछ कह देना

60 . गुरु तो गुड़ रहे चेले शक्कर हो गये : चेले का गुरु से अधिक ज्ञानवान होना

61 . गवाह चुस्त मुद्दई सुस्त : स्वयं की अपेक्षा दूसरों का उसके लिए अधिक प्रयत्नशील होना

62 . गुड़ खाए और गुलगुलों से परहेज : झूठा ढोंग रचना ।

63 . गाँव का जोगी जोगना , आन गाँव का सिद्ध : अपने स्थान पर सम्मान नहीं होता

64 . गरीब तेरे तीन नाम - झूठा ,पापी , बेईमान । : गरीब पर ही सदैव दोष मढ़े जाते हैं / निर्धनता सदैव अपमानित होती है ।

65 . गुड़ दिये मरे तो जहर क्यों दे : प्रेम से कार्य हो जाये तो फिर दण्ड क्यों ।

66 . गंगा गये गंगादास यमुना गये यमुनादास : अवसरवादी होना ।

67 . गोद में छोरा शहर में ढिंढोरा : पास की वस्तु को दूर खोजना

68 . गरजते बादल बरसते नहीं : कहने वाले (शोर मचाने वाले) कुछ करते नहीं

69 . गुरु कीजै जान , पानी पीवै छान : अच्छी तरह समझ बूझकर काम करना

70 . घर - घर मिट्टी के चूल्हे हैं : सबकी एक सी स्थिति का होना सभी समान रूप से खोखले हैं ।

71 . घोड़ा घास से दोस्ती करे तो क्या खाये ? : मजदूरी लेने में संकोच कैसा

72 . घर का भेदी लंका ढाहे : घरेलू शत्रु प्रबल होता है ।

73 . घर की मुर्गी दाल बराबर : अधिक परिचय से सम्मान कम / घरेलू साधनों का मूल्यहीन होना ।

74 . घर बैठे गंगा आना : बिना प्रयत्न के लाभ , सफलता मिलना

75 . घर में नहीं दाने बुढिया चली भुनाने : झूठा दिखावा करना

76 . घर आये नाग न पूजै , बाँबी पूजन जाय : अवसर का लाभ न उठाकर उसको खोज में जाना

77 . घर का जोगी जोगना ,आन गॉव का सिद्ध : विद्वान को अपने घर की अपेक्षा बाहर अधिक सन्मान / परिचित की अपेक्षा अपरिचित का विशेष आदर

78 . चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाए : बहुत कजूस होना ।

79 चलती का नाम गाड़ी : काम का चलते रहना / बनी बात के सब साथ होते हैं

80 चंदन की चुटकी भली गाड़ी : अच्छी वस्तु तो थोड़ी भी भली ।

81 . चार दिन की चॉदनी फिर अंधेरी रात : सुख का समय थोड़ा ही होता है ।

82 चिकने घडे पर पानी नहीं ठहरता : निर्लज्ज पर किसी बात का असर नहीं होता ।

83 . चिराग तले अंधेरा : दूसरों को उपदेश देना स्वयं अज्ञान में रहना

84 चींटी के पर निकलना : बुरा समय आने से पूर्व बुद्धि का नष्ट होना

85 . चील के घोंसले में मॉस कहाँ ? :भूखे के घर भोजन मिलना असंभव होता है ।

86 . चुपड़ी और दो - दो : लाभ में लाभ होना

87 . चोरी का माल मोरी में : बुरी कमाई बुरे कार्यों में नष्ट होती है ।

88 . चोर की दाढ़ी में तिनका : अपराधी का सशंकित होना / अपराधी के कार्यों से दोष प्रकट हो जाता है ।

89 . चोर - चोर मौसेरे भाई : दुष्ट लोग प्रायः एक जैसे होते हैं एक से स्वभाव वाले लोगों में मित्रता होना

90 . छछुदर के सिर में चमेली का तेल : अयोग्य व्यक्ति के पास अच्छी वस्तु होना

91 . छोटे मुँह बड़ी बात : हैसियत से अधिक बातें करना

92 . जहाँ काम आवै सुई का करै तरवारि : छोटी वस्तु से जहाँ काम निकलता है यहाँ बड़ी वस्तु का उपयोग नहीं होता है ।

93 . जल में रहकर मगर से बैर : बड़े आश्रयदाता से दुश्मनी ठीक नहीं ।

94 . जब तक सॉस तब तक आस : जीवन पर्यन्त आशान्वित रहना ।

95 . जंगल में मोर नाचा किसने देखा : दूसरों के सामने उपस्थित होने पर ही गुणों की क़द्र होती है / गुणों का प्रदर्शन उपयुक्त स्थान पर

96 . जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी : मातृभूमि का महत्व स्वर्ग से भी बढ़कर है ।

97 . जहाँ मुर्गा नहीं बोलता वहाँ क्या सवेरा नहीं होता । : किसी के बिना कोई काम नहीं रुकता कोई अपरिहार्य नहीं है ।

98 . जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि : कवि दूर की बात सोचता है । / सीमातीत कल्पना करना |

99 . जाके पैर न फटी बिवाई , सो क्या जाने पीर पराई :जिसने कभी दुःख नहीं देखा वह दूसरों का दुख क्या अनुभव करे

100 . जाकी रही भावना जैसी , हरि मूरत देखी तिन तैसी : भावनानुकूल (प्राप्ति का होना) औरों को देखना

101 . जान बची और लाखों पाये : प्राण सबसे प्रिय होते हैं ।

102 . जाको राखे साइयाँ मारि सके न कोय : ईश्वर रक्षक हो तो फिर डर किसका , कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता ।

103 . जिस थाली में खाये उसी में छेद करना : विश्वासघात करना / भलाई करने वाले का ही बुरा करना / कृतघ्न होना |

104 . जिसकी लाठी उसकी भैंस : शक्तिशाली की विजय होती है ।

105 . जिन खोजा तिन पाइयों गहरे पानी पैठ : प्रयत्न करने वाले को सफलता / लाभ अवश्य मिलता है ।

106 . जो ताको कॉटा बुवै ताहि बोय तू फूल : अपना बुरा करने वालों के साथ भी भलाई का व्यवहार करो

107 . जादू वही जो सिर चढ़कर बोलेः उपाय वही अच्छा जो कारगर हो

108 . झटपट की घानी आधा तेल आधा पानी : जल्दबाजी का काम खराब ही होता है ।

109 . झूठ कहे सो लड्डू खाय साँच कहे सो मारा जाय : आजकल झूठे का बोल बाला है ।

110 . जैसी बहे बयार पीठ तब वैसी दीजै : समयानुसार कार्य करना ।

111 . टके का सौदा नौ टका विदाई : साधारण वस्तु हेतु खर्च अधिक

112 . टेड़ी उँगली किये बिना घी नहीं निकलता : सीधेपन से काम नहीं (चलता) निकलता ।

113 . टके की हाँडी गई पर कुत्ते की जात पहचान ली : थोड़ा नुकसान उठाकर धोखेबाज को पहचानना ।

114 . डूबते को तिनके का सहारा : संकट में थोड़ी सहायता भी लाभप्रद / पर्याप्त होती है ।

115 . ढाक के तीन पात : सदा एक सी स्थिति बने रहना

116 . ढोल में पोल : बड़े - बड़े भी अन्धेर करते हैं ।

117 . तीन लोक से मथुरा न्यारी : सबसे अलग विचार बनाये रखना

118 . तीर नहीं तो तुक्का ही सहीं : पूरा नहीं तो जो कुछ मिल जाये उसी में संतोष करना ।

119 . तू डाल - डाल मैं पात - पात : चालाक से चालाकी से पेश आना / एक से बढ़कर एक चालाक होना

120 . तेल देखो तेल की धार देखो : नया अनुभव करना धैर्य के साथ सोच समझ कर कार्य करो परिणाम की प्रतीक्षा करो ।

121 . तेली का तेल जले मशालची का दिल जले । : खर्च कोई करे बुरा किसी और को ही लगे ।

122 . तेते पाँव पसारिये जेती लाम्बी सौर : हैसियतानुसार खर्च करना / अपने सामर्थ्य के अनुसार ही कार्य करना

123 . तन पर नहीं लत्ता पान खाये अलबत्ता : अभावग्रस्त होने पर भी ठाठ से रहना / झूठा दिखावा करना ।

124 . तीन बुलाए तेरह आये : अनिमन्त्रित व्यक्ति का आना ।

125 . तीन कनौजिये तेरह चूल्हे : व्यर्थ की नुक्ताचीनी करना / ढोंग करना ।

126 . थोथा चना बाजे घना : गुणहीन व्यक्ति अधिक डींगें मारता है / आडम्बर करता है ।

127 . दूध का दूध पानी का पानी : सही सही न्याय करना ।

128 . दमडी की हॉडी भी ठोक बजाकर लेते हैं : छोटी चीज को भी देखभाल कर लेते हैं ।

129 . दान की बछिया के दाँत नहीं गिने जाते : मुफ्त की वस्तु के गुण नहीं देखे जाते ।

130 . दाल भात में मूसल चंद : किसी के कार्य में व्यर्थ में दखल देना ।

131 . दुविधा में दोनों गये माया मिली न राम : सदेह की स्थिति में कुछ भी हाथ नहीं लगना ।

132 . दूध का जला छाछ को फूंक फूंक कर पीता है : एक बार धोखा खाया व्यक्ति दुबारा सावधानी बरतता है ।

133 . दूर के ढोल सुहाने लगते हैं : दूरवर्ती वस्तुएँ अच्छी मालूम होती हैं दूर से ही वस्तु का अच्छा लगना पास आने पर वास्तविकता का पता लगना ।

134 . दैव दैव आलसी पुकारा : आलसी व्यक्ति भाग्यवादी होता है ।

135 . धोबी का कुत्ता घर का न घाट का : किधर का भी न रहना न इधर का न उधर का

136 . न नौ मन तेल होगा और न राधा नाचेगी : ऐसी अनहोनी शर्त रखना जो पूरी न हो सके / बहाने बनाना ।

137 . न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी : झगड़े को जड़ से ही नष्ट करना

138 . नक्कार खाने में तूती की अवाज : अराजकता में सुनवाई न होना बड़ों के समक्ष छोटों की कोई पूछ नहीं ।

139 . न सावन सूखा न भादों हरा : सदैव एक सी तंग हालत रहना

140 . नाच न जाने आँगन टेढ़ा : अपना दोष दूसरों पर मढ़ना / अपनी अयोग्यता को छिपाने हेतु दूसरों में दोष हूँढना ।

141 . नाम बड़े और दर्शन छोटे : बड़ों में बड़प्पन न होना गुण कम किन्तु प्रशंसा अधिक ।

142 . नीम हकीम खतरे जान , नीम मुल्ला खतरे ईमान : अध कचरे ज्ञान वाला अनुभवहीन व्यक्ति अधिक हानिकारक होता है ।

143 . नेकी और पूछ - पूछ : भलाई करने में भला पूछना क्या ?

144 . नेकी कर कुए में डाल : मलाई कर भूल जाना चाहिये ।

145 . नौ नगद , न तेरह उधार : भविष्य की बड़ी आशा से तत्काल का थोड़ा लाभ अच्छा / व्यापार में उधार की अपेक्षा नगद को महत्व देना ।

146 . नौ दिन चले अढ़ाई कोस : बहुत धीमी गति से कार्य का होना

147 . नौ सौ चूहे खाय बिल्ली हज को चली : बहुत पाप करके पश्चाताप करने का ढोंग करना ।

148 . पढ़े पर गुने नहीं : अनुभवहीन होना ।

149 . पढे फारसी वेचे तेल , देखो यह विधान का खेल : शिक्षित होते हुए भी दुर्भाग्य से निम्न कार्य करना ।

150 . पराधीन सपनेह सुख नाही : परतंत्र व्यक्ति कभी सुखी नहीं होता ।

151 . पॉचों उंगलियाँ बराबर नहीं होती : सभी समान नहीं हो सकते ।

152 . प्रभुता पाय काहि मद नाहीं : अधिकार प्राप्ति पर किसे गर्व नहीं होता ।

153 . पानी में रहकर मगर से वैर : शक्तिशाली आश्रयदाता से वैर करना ।

154 . प्यादे से फरजी भयो टेढो - टेढो जाय : छोटा आदमी बड़े पद पर पहुंचकर इतराकर चलता है ।

155 . फटा मन और फटा दूध फिर नहीं मिलता : एक बार मतभेद होने पर पुनः मेल नहीं हो सकता ।

156 . बारह बरस में घूरे के दिन भी फिरते हैं । : कभी न कभी सबका भाग्योदय होता हैं ।

157 . बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद : मुर्ख को गुण की परख न होना / अज्ञानी किसी के महत्त्व को आंक नहीं सकता ।

158 . बद अच्छा , बदनाम बुरा : कलंकित होना बुरा होने से भी बुरा है ।

159 . बकरे की माँ कब तक खैर मनायेगी : जब संकट आना ही है तो उससे कब तक बचा जा सकता है ।

169 . बावन तोले पाव रत्ती : बिल्कुल ठीक या सही सही होना |

160 . बाप न मारी मेंढकी बेटा तीरंदाजः बहुत अधिक बातूनी या गप्पी होना

161 . बॉबी में हाथ तू डाल मंत्र मैं पढ़ूं : खतरे का कार्य दूसरों को सौंपकर स्वयं अलग रहना ।

162 . बाप बड़ा न भैया , सबसे बड़ा रुपया : आजकल पैसा ही सब कुछ है ।

163 . बिल्ली के भाग छींका टूटना : संयोग से किसी कार्य का अच्छा होना / अनायास अप्रत्याशित वस्तु की प्राप्ति होना ।

164 . बिन मगे मोती मिले मांगे मिले न भीख : भाग्य से स्वतः मिलता है इच्छा से नहीं ।

165 . बिना रोए माँ भी दूध नहीं पिलाती : प्रयत्न के बिना कोई कार्य नहीं होता ।

166 . बैठे से बेगार भली : खाली बैठे रहने से तो किसी का कुछ काम करना अच्छा ।

167 . बोया पेड़ बबूल का आम कहाँ से खाए : बुरे कर्म कर अच्छे फल की इच्छा करना व्यर्थ है ।

168 . भई गति साँप छछंदर जैसी : दुविधा में पड़ना । 169 . भूल गये राग रंग भूल गये छकड़ी तीन चीज याद रही नोन , तेल , लकड़ी : गृहस्थी के जंजाल में फंसना

170 . भूखे भजन न होय गोपाला : भूख लगने पर कुछ भी अच्छा नहीं लगता ।

171 . भागते भूत की लंगोट भली : हाथ पड़े सोई लेना जो बच जाए उसी से संतुष्टि / कुछ नहीं से जो कुछ भी मिल जाए वह अच्छा ।

172 . भैंस के आगे बीन बजाये भैंस खड़ी पगुराय : मूर्ख को उपदेश देना व्यर्थ है ।

173 . बिच्छू का मंत्र न जाने सॉप के बिल में हाथ डाले : योग्यता के अभाव में उलझनदार काम करने का बीड़ा उठा लेना ।

174 . मन चंगा तो कटौती में गंगा : मन पवित्र तो घर में तीर्थ है ।

175 . मरता क्या न करता : मुसीबत में गलत कार्य करने को भी तैयार होना पड़ता है ।

176 . मानो तो देव नहीं तो पत्थर : विश्वास फलदायक होता है ।

177 . मान न मान मैं तैरा मेहमान : जबरदस्ती गले पड़ना ।

178 . मार के आगे भूत भागता है : दण्ड से सभी भयभीत होते हैं ।

179 . मियाँ बीबी राजी तो क्या करेगा काजी ? : यदि आपस में प्रेम है तो तीसरा क्या कर सकता है ?

180 . मुख में राम बगल में छुरी : ऊपर से मित्रता अन्दर शत्रुता धोखेबाजी करना ।

181 . मेरी बिल्ली मुझ से ही म्याऊँ : आश्रयदाता का ही विरोध करना

182 . मेंढ़की को जुकाम होना : नीच आदमियों द्वारा नखरे करना ।

183 . मन के हारे हार है मन के जीते जीत : साहस बनाये रखना आवश्यक है / हतोत्साहित होने पर असफलता व उत्साहपूर्वक कार्य करने से जीत होती है ।

184 . यथा राजा तथा प्रजा : जैसा स्वामी वैसा सेवक

185 : यथा नाम तथा गुण : नाम के अनुसार गुण का होना ।

186 . यह मुँह और मसूर की दाल : योग्यता से अधिक पाने की इच्छाकरना

187 . मुफ्त का चंदन , घिस मेरे नंदनः मुफ्त में मिली वस्तु का दुरुपयोग करना ।

188 . रस्सी जल गई पर ऐंठ न गई : सर्वनाश होने पर भी घमण्ड बने रहना / टेक न छोड़ना ।

189 . रंग में भंग पड़ना : आनन्द में बाधा उत्पन्न होना ।

190 . राम नाम जपना , पराया माल अपना : मक्कारी करना ।

191 . रोग का घर खाँसी , इगड़े का घर हाँसी : हँसी मजाक झगड़े का कारण बन जाती हैं ।

192 . रोज कुआ खोदना रोज पानी पीना : प्रतिदिन कमाकर खाना रोज कमाना रोज खा जाना ।

193 . लकड़ी के बल बन्दरी नाचे : भयवश ही कार्य संभव है ।

194 . लम्बा टीका मधुरी बानी दगेबाजी की यही निशानी : पाखण्डी हमेशा दगाबाज होते हैं ।

195 . लातों के भूत बातों से नहीं मानते : नीच व्यक्ति दण्ड से / भय से कार्य करते हैं कहने से नहीं ।

196 . लोहे को लोहा ही काटता है : बुराई को बुराई से ही जीता जाता है ।

197 . वक्त पड़े जब जानिये को बैरी को मीत : विपत्ति / अवसर पर ही शत्रु व मित्र की पहचान होती है ।

198 . विधिकर लिखा को मेटनहारा : भाग्य को कोई बदल नहीं सकता ।

199 . विनाश काले विपरीत बुद्धि : विपत्ति आने पर बुद्धि भी नष्ट हो जाती है ।

200 . शबरी के बेर : प्रेममय तुच्छ भेंट

201 . शक्कर खोर को शक्कर मिल ही जाती हैं : जरूरतमंद को उसकी वस्तु सुलभ हो ही जाती है ।

202 . शुभस्य शीघ्रम : शुभ कार्य में शीघ्रता करनी चाहिए ।

203 . शठे शाठ्यं समाचरेत : दुष्ट के साथ दुष्टता का व्यवहार करना चाहिये ।

204 . सांच को आँच नहीं : सच्चा व्यक्ति कभी डरता नहीं ।

205 . सब धान बाईस पंसेरी : अविवेकी लोगों की दृष्टि में गुणी और मूर्ख सभी व्यक्ति बराबर होते हैं ।

206 . सब दिन होत न एक समान : जीवन में सुख - दुःख आते रहते हैं , क्योंकि समय परिवर्तनशील होता है ।

207 . सैइयाँ भये कोतवाल अब काहे का डर : अपनों के उच्चपद पर होने से बुरे कार्य बे हिचक करना ।

208 . समरथ को नहीं दोष गुसाईं : गलती होने पर भी सामर्थ्यवान को कोई कुछ नहीं कहता ।

209 . सावन सूखा न भादों हरा : सदैव एक सी स्थिति बने रहना ।

210 . साँप मर जाये और लाठी न टूटे : सुविधापूर्वक कार्य होना / बिना हानि के कार्य का बन जाना ।

211 . सावन के अंधे को हरा ही हरा सूझता है : अपने समान सभी को समझना ।

212 . सीधी अँगुली से घी नहीं निकलताः सीधेपन से कोई कार्य नहीं होता

213 सिर मुंडाते ही ओले पड़ना : कार्य प्रारम्भ करते ही बाधा उत्पन्न होना ।

214 सोने में सुगन्ध : अच्छे में और अच्छा ।

215 . सौ सुनार की एक लुहार की : सैंकड़ों छोटे उपायों से एक बड़ा उपाय अच्छा ।

216 सूप बोले तो बोले छलनी भी : दोषी का बोलना ठीक नहीं

217 . हथेली पर दही नहीं जमता : हर कार्य के होने में समय लगता है ।

218 . हथेली पर सरसों नहीं उगती : कार्य के अनुसार समय भी लगता है ।

219 . हल्दी लगे न फिटकरी रंग : आसानी से काम बन जाना / कम खर्च में अच्छा कार्य ।

220 . हाथ कंगन को आरसी क्या : प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता क्या ?

221 . हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और : कपटपूर्ण व्यवहार / कहे कुछ करे कुछ / कथनी व करनी में अन्तर ।

222 . होनहार बिरवान के होत चीकने पात : महान व्यक्तियों के लक्षण बचपन में ही नजर आ जाते हैं ।

223 . हाथ सुमरिनी बगल कतरनी : कपटपूर्ण व्यवहार करना ।

समास

समास का तात्पर्य होता है – संछिप्तीकरण। इसका शाब्दिक अर्थ होता है छोटा रूप। अथार्त जब दो या दो से अधिक शब्दों से मिलकर जो नया और छोटा शब्द बनता है उस शब्द को समास कहते हैं। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो जहाँ पर कम-से- कम शब्दों में अधिक से अधिक अर्थ को प्रकट किया जाए वह समास कहलाता है।

संस्कृत , जर्मन तथा बहुत सी भारतीय भाषाओँ में समास का बहुत प्रयोग किया जाता है। समास रचना में दो पद होते हैं , पहले पद को 'पूर्वपद ' कहा जाता है और दूसरे पद को 'उत्तरपद ' कहा जाता है। इन दोनों से जो नया शब्द बनता है वो समस्त पद कहलाता है।

जैसे :-

- रसोई के लिए घर = रसोईघर
- हाथ के लिए कड़ी = हथकड़ी
- नील और कमल = नीलकमल
- रजा का पुत्र = राजपुत्र |

सामासिक शब्द क्या होता है :- समास के नियमों से निर्मित शब्द सामासिक शब्द कहलाता है। इसे समस्तपद भी कहा जाता है। समास होने के बाद विभक्तियों के चिन्ह गायब हो जाते हैं।

जैसे :- राजपुत्र |

समास विग्रह :

सामासिक शब्दों के बीच के सम्बन्ध को स्पष्ट करने को समास – विग्रह कहते हैं। विग्रह के बाद सामासिक शब्द गायब हो जाते हैं अथार्त जब समस्त पद के सभी पद अलग – अलग किय जाते हैं उसे समास- विग्रह कहते हैं।

जैसे :- माता-पिता = माता और पिता।

समास और संधि में अंतर :-

संधि का शाब्दिक अर्थ होता है मेल। संधि में उच्चारण के नियमों का विशेष महत्व होता है। इसमें दो वर्ण होते हैं इसमें कहीं पर एक तो कहीं पर दोनों वर्णों में परिवर्तन हो जाता है और कहीं पर तीसरा वर्ण भी आ जाता है। संधि किये हुए शब्दों को तोड़ने की क्रिया विच्छेद कहलाती है। संधि में जिन शब्दों का योग होता है उनका मूल अर्थ नहीं बदलता।

जैसे – पुस्तक +आलय = पुस्तकालय।

समास का शाब्दिक अर्थ होता है संक्षेप। समास में वर्णों के स्थान पर पद का महत्व होता है। इसमें दो या दो से अधिक पद मिलकर एक समस्त पद बनाते हैं और इनके बीच से विभक्तियों का लोप हो जाता है। समस्त पदों को तोडने की प्रक्रिया को विग्रह कहा जाता है। समास में बने हुए शब्दों के मूल अर्थ को परिवर्तित किया भी जा सकता है और परिवर्तित नहीं भी किया जा सकता है।

जैसे :- विषधर = विष को धारण करने वाला अथार्त शिव।

उपमान क्या होता है :- जिससे किसी की उपमा दी जाती है उसे उपमान कहती हैं।

उपमेय क्या होता है :- जिसकी उपमा दी जाती है उसे उपमेय कहते हैं।

समास के भेद :

1. अव्ययीभाव समास
2. तत्पुरुष समास
3. कर्मधारय समास
4. द्विगु समास
5. द्वंद्व समास
6. बहुब्रीहि समास

प्रयोग की दृष्टि से समास के भेद :-

1. संयोगमूलक समास

2. आश्रयमूलक समास

3. वर्णनमूलक समास

1. अव्ययीभाव समास क्या होता है :- इसमें प्रथम पद अव्यय होता है और उसका अर्थ प्रधान होता है उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। इसमें अव्यय पद का प्रारूप लिंग, वचन, कारक, में नहीं बदलता है वो हमेशा एक जैसा रहता है।

दूसरे शब्दों में कहा जाये तो यदि एक शब्द की पुनरावृत्ति हो और दोनों शब्द मिलकर अव्यय की तरह प्रयोग हों वहाँ पर अव्ययीभाव समास होता है संस्कृत में उपसर्ग युक्त पद भी अव्ययीभाव समास ही मने जाते हैं।

जैसे :-

- यथाशक्ति = शक्ति के अनुसार
- यथाक्रम = क्रम के अनुसार
- यथानियम = नियम के अनुसार
- प्रतिदिन = प्रत्येक दिन
- प्रतिवर्ष =हर वर्ष
- आजन्म = जन्म से लेकर
- यथासाध्य = जितना साधा जा सके
- धडाधड = धड-धड की आवाज के साथ

- घर-घर = प्रत्येक घर
- रातों रात = रात ही रात में
- आमरण = म्रत्यु तक
- यथाकाम = इच्छानुसार

2. तत्पुरुष समास क्या होता है :- इस समास में दूसरा पद प्रधान होता है। यह कारक से जुदा समास होता है। इसमें ज्ञातव्य – विग्रह में जो कारक प्रकट होता है उसी कारक वाला वो समास होता है। इसे बनाने में दो पदों के बीच कारक चिन्हों का लोप हो जाता है उसे तत्पुरुष समास कहते हैं।

जैसे :-

- देश के लिए भक्ति = देशभक्ति
- राजा का पुत्र = राजपुत्र
- शर से आहत = शराहत
- राह के लिए खर्च = राहखर्च
- तुलसी द्वारा कृत = तुलसीदासकृत
- राजा का महल = राजमहल

तत्पुरुष समास के भेद :- वैसे तो तत्पुरुष समास के 8 भेद होते हैं किन्तु विग्रह करने की वजह से कर्ता और सम्बोधन दो भेदों को लुप्त रखा गया है। इसलिए विभक्तियों के अनुसार तत्पुरुष समास के 6 भेद होते हैं :-

1. कर्म तत्पुरुष समास

2. करण तत्पुरुष समास

3. सम्प्रदान तत्पुरुष समास

4. अपादान तत्पुरुष समास

5. सम्बन्ध तत्पुरुष समास

6. अधिकरण तत्पुरुष समास

1. कर्म तत्पुरुष समास क्या होता है :- इसमें दो पदों के बीच में कर्मकारक छिपा हुआ होता है। कर्मकारक का चिन्ह 'को' होता है। को' को कर्मकारक की विभक्ति भी कहा जाता है। उसे कर्म तत्पुरुष समास कहते हैं।

जैसे :-

- रथचालक = रथ को चलने वाला
- ग्रामगत = ग्राम को गया हुआ
- माखनचोर =माखन को चुराने वाला
- वनगमन =वन को गमन
- मुंहतोड़ = मुंह को तोड़ने वाला
- स्वर्गप्राप्त = स्वर्ग को प्राप्त
- देशगत = देश को गया हुआ
- जनप्रिय = जन को प्रिय
- मरणासन्न = मरण को आसन्न

2. करण तत्पुरुष समास क्या होता है :- जहाँ पर पहले पद में करण कारक का बोध होता है। इसमें दो पदों के बीच करण कारक छिपा होता है । करण कारक का चिन्ह य विभक्ति ‘ के द्वारा ‘ और ‘ से ‘ होता है। उसे करण तत्पुरुष कहते हैं।

जैसे :-

- स्वरचित =स्व द्वारा रचित
- मनचाहा = मन से चाहा
- शोकग्रस्त = शोक से ग्रस्त
- भुखमरी = भूख से मरी
- धनहीन = धन से हीन
- बाणाहत = बाण से आहत
- ज्वरग्रस्त =ज्वर से ग्रस्त
- मदांध =मद से अँधा
- रसभरा =रस से भरा
- आचारकुशल = आचार से कुशल
- भयाकुल = भय से आकुल
- आँखोंदेखी = आँखों से देखी

3. सम्प्रदान तत्पुरुष समास क्या होता है :- इसमें दो पदों के बीच सम्प्रदान कारक छिपा होता है। सम्प्रदान कारक का चिन्ह या विभक्ति ‘ के लिए ‘ होती है। उसे सम्प्रदान तत्पुरुष समास कहते हैं।

जैसे :-

- विद्यालय =विद्या के लिए आलय
- रसोईघर = रसोई के लिए घर
- सभाभवन = सभा के लिए भवन
- विश्रामगृह = विश्राम के लिए गृह
- गुरुदक्षिणा = गुरु के लिए दक्षिणा
- प्रयोगशाला = प्रयोग के लिए शाला
- देशभक्ति = देश के लिए भक्ति
- स्नानघर = स्नान के लिए घर
- सत्यागृह = सत्य के लिए आग्रह
- यज्ञशाला = यज्ञ के लिए शाला
- डाकगाड़ी = डाक के लिए गाड़ी
- देवालय = देव के लिए आलय
- गौशाला = गौ के लिए शाला

4. अपादान तत्पुरुष समास क्या होता है :- इसमें दो पदों के बीच में अपादान कारक छिपा होता है। अपादान कारक का चिन्ह या विभक्ति ‘ से अलग ‘ होता है। उसे अपादान तत्पुरुष समास कहते हैं।

जैसे :-

- कामचोर = काम से जी चुराने वाला
- दूरागत =दूर से आगत
- रणविमुख = रण से विमुख
- नेत्रहीन = नेत्र से हीन
- पापमुक्त = पाप से मुक्त
- देशनिकाला = देश से निकाला
- पथभ्रष्ट = पथ से भ्रष्ट
- पदच्युत =पद से च्युत
- जन्मरोगी = जन्म से रोगी
- रोगमुक्त = रोग से मुक्त

5.सम्बन्ध तत्पुरुष समास क्या होता है :- इसमें दो पदों के बीच में सम्बन्ध कारक छिपा होता है। सम्बन्ध कारक के चिन्ह या विभक्ति ‘ का ‘,’के’,’की’होती हैं। उसे सम्बन्ध तत्पुरुष समास कहते हैं।

जैसे :-

- राजपुत्र = राजा का पुत्र
- गंगाजल =गंगा का जल
- लोकतंत्र = लोक का तंत्र
- दुर्वादल =दुर्व का दल
- देवपूजा = देव की पूजा

- आमवृक्ष = आम का वृक्ष
- राजकुमारी = राज की कुमारी
- जलधारा = जल की धारा
- राजनीति = राजा की नीति
- सुखयोग = सुख का योग
- मूर्तिपूजा = मूर्ति की पूजा
- श्रधकण = श्रधा के कण
- शिवालय = शिव का आलय
- देशरक्षा = देश की रक्षा
- सीमारेखा = सीमा की रेखा

6. अधिकरण तत्पुरुष समास क्या होता है :- इसमें दो पदों के बीच अधिकरण कारक छिपा होता है। अधिकरण कारक का चिन्ह या विभक्ति ‘ में ‘, ‘पर’ होता है। उसे अधिकरण तत्पुरुष समास कहते हैं।

जैसे :-

- कार्य कुशल =कार्य में कुशल
- वनवास =वन में वास
- ईस्वरभक्ति = ईस्वर में भक्ति
- आत्मविश्वास = आत्मा पर विश्वास
- दीनदयाल = दीनों पर दयाल

- दानवीर = दान देने में वीर
- आचारनिपुण = आचार में निपुण
- जलमग्न =जल में मग्न
- सिरदर्द = सिर में दर्द
- क्लाकुशल = कला में कुशल
- शरणागत = शरण में आगत
- आनन्दमग्न = आनन्द में मग्न
- आपबीती =आप पर बीती

तत्पुरुष समास के प्रकार :-

1.नञ तत्पुरुष समास

1.नञ तत्पुरुष समास क्या होता है :- इसमें पहला पद निषेधात्मक होता है उसे नञ तत्पुरुष समास कहते हैं।

जैसे :-

- असभ्य =न सभ्य
- अनादि =न आदि
- असंभव =न संभव
- अनंत = न अंत

3. कर्मधारय समास क्या होता है :- इस समास का उत्तर पद प्रधान होता है। इस समास में विशेषण -विशेष्य और उपमेय -उपमान से मिलकर बनते हैं उसे कर्मधारय समास कहते हैं।

जैसे :-

- चरणकमल = कमल के समान चरण
- नीलगगन =नीला है जो गगन
- चन्द्रमुख = चन्द्र जैसा मुख
- पीताम्बर =पीत है जो अम्बर
- महात्मा =महान है जो आत्मा
- लालमणि = लाल है जो मणि
- महादेव = महान है जो देव
- देहलता = देह रूपी लता
- नवयुवक = नव है जो युवक

कर्मधारय समास के भेद :-

1.विशेषणपूर्वपद कर्मधारय समास

2. विशेष्यपूर्वपद कर्मधारय समास

3. विशेषणोंभयपद कर्मधारय समास

4. विशेष्योभयपद कर्मधारय समास

1. विशेषणपूर्वपद कर्मधारय समास :- जहाँ पर पहला पद प्रधान होता है वहाँ पर विशेषणपूर्वपद कर्मधारय समास होता है।

जैसे :-

- नीलीगाय = नीलगाय
- पीत अम्बर =पीताम्बर
- प्रिय सखा = प्रियसखा

2. विशेष्यपूर्वपद कर्मधारय समास :- इसमें पहला पद विशेष्य होता है और इस प्रकार के सामासिक पद ज्यादातर संस्कृत में मिलते हैं।

जैसे :- कुमारी श्रमणा = कुमारश्रमणा

3. विशेषणोंभयपद कर्मधारय समास :- इसमें दोनों पद विशेषण होते हैं।

जैसे :- नील – पीत ,सुनी – अनसुनी ,कहनी – अनकहनी

4. विशेष्योभयपद कर्मधारय समास :- इसमें दोनों पद विशेष्य होते है।

जैसे :- आमगाछ ,वायस-दम्पति।

कर्मधारय समास के उपभेद :-

1.उपमानकर्मधारय समास

2. उपमितकर्मधारय समास

3. रूपककर्मधारय समास

1. उपमानकर्मधारय समास :- इसमें उपमानवाचक पद का उपमेयवाचक पद के साथ समास होता है। इस समास में दोनों शब्दों के बीच से ‘ इव’ या ‘जैसा’ अव्यय का लोप हो जाता है और दोनों पद , चूँकि एक ही कर्ता विभक्ति , वचन और लिंग के होते हैं , इसलिए समस्त पद कर्मधारय लक्ष्ण का होता है। उसे उपमानकर्मधारय समास कहते हैं।

जैसे :- विद्युत् जैसी चंचला = विद्युचंचला

2. उपमितकर्मधारय समास :- यह समास उपमानकर्मधारय का उल्टा होता है। इस समास में उपमेय पहला पद होता है और उपमान दूसरा पद होता है। उसे उपमितकर्मधारय समास कहते हैं।

जैसे :- अधरपल्लव के समान = अधर – पल्लव , नर सिंह के समान = नरसिंह।

3. रूपककर्मधारय समास :- जहाँ पर एक का दूसरे पर आरोप होता है वहाँ पर रूपककर्मधारय समास होता है।

जैसे :- मुख ही है चन्द्रमा = मुखचन्द्र।

4.द्विगु समास क्या होता है :- द्विगु समास में पूर्वपद संख्यावाचक होता है और कभी-कभी उत्तरपद भी संख्यावाचक होता हुआ देखा जा सकता है। इस समास में प्रयुक्त संख्या किसी समूह को दर्शाती है किसी अर्थ को नहीं |इससे समूह और समाहार का बोध होता है। उसे द्विगु समास कहते हैं।

जैसे :-

- नवग्रह = नौ ग्रहों का समूह
- दोपहर = दो पहरों का समाहार
- त्रिवेणी = तीन वेणियों का समूह
- पंचतन्त्र = पांच तंत्रों का समूह
- त्रिलोक =तीन लोकों का समाहार
- शताब्दी = सौ अब्दों का समूह
- पंसेरी = पांच सेरों का समूह
- सतसई = सात सौ पदों का समूह
- चौगुनी = चार गुनी
- त्रिभुज = तीन भुजाओं का समाहार

द्विगु समास के भेद :-

1.समाहारद्विगु समास

2. उत्तरपदप्रधानद्विगु समास

1. समाहारद्विगु समास :- समाहार का मतलब होता है समुदाय , इकट्ठा होना , समेटना उसे समाहारद्विगु समास कहते हैं।

जैसे :-

- तीन लोकों का समाहार = त्रिलोक
- पाँचों वटों का समाहार = पंचवटी
- तीन भुवनों का समाहार =त्रिभुवन

2. उत्तरपदप्रधानद्विगु समास :- उत्तरपदप्रधानद्विगु समास दो प्रकार के होते हैं।

(1) बेटा या फिर उत्पत्र के अर्थ में।

जैसे :-

दो माँ का =दुमाता

दो सूतों के मेल का = दुसूती।

(2) जहाँ पर सच में उत्तरपद पर जोर दिया जाता है।

जैसे :- पांच प्रमाण = पंचप्रमाण

पांच हत्थड = पंचहत्थड

5. द्वंद्व समास क्या होता है :- इस समास में दोनों पद ही प्रधान होते हैं इसमें किसी भी पद का गौण नहीं होता है। ये दोनों पद एक-दूसरे पद के विलोम होते हैं लेकिन

ये हमेशा नहीं होता है। इसका विग्रह करने पर और, अथवा, या, एवं का प्रयोग होता है उसे द्वंद्व समास कहते हैं।

जैसे :-

- जलवायु = जल और वायु
- अपना-पराया = अपना या पराया
- पाप-पुण्य = पाप और पुण्य
- राधा-कृष्ण = राधा और कृष्ण
- अन्न-जल = अन्न और जल
- नर-नारी =नर और नारी
- गुण-दोष =गुण और दोष
- देश-विदेश = देश और विदेश
- अमीर-गरीब = अमीर और गरीब

द्वंद्व समास के भेद :-

1. इतरेतरद्वंद्व समास
2. समाहारद्वंद्व समास
3. वैकल्पिकद्वंद्व समास

1. इतरेतरद्वंद्व समास :- वो द्वंद्व जिसमें और शब्द से भी पद जुड़े होते हैं और अलग अस्तित्व रखते हों उसे इतरेतर द्वंद्व समास कहते हैं। इस समास से जो पद बनते हैं

वो हमेशा बहुवचन में प्रयोग होते हैं क्योंकि वे दो या दो से अधिक पदों से मिलकर बने होते हैं।

जैसे :-

- राम और कृष्ण = राम-कृष्ण
- माँ और बाप = माँ-बाप
- अमीर और गरीब = अमीर-गरीब
- गाय और बैल =गाय-बैल
- ऋषि और मुनि = ऋषि-मुनि
- बेटा और बेटी =बेटा-बेटी

2. समाहारद्वंद्व समास :- समाहार का अर्थ होता है समूह। जब द्वंद्व समास के दोनों पद और समुच्चयबोधक से जुड़ा होने पर भी अलग-अलग अस्तिव नहीं रखकर समूह का बोध कराते हैं , तब वह समाहारद्वंद्व समास कहलाता है। इस समास में दो पदों के अलावा तीसरा पद भी छुपा होता है और अपने अर्थ का बोध अप्रत्यक्ष रूप से कराते हैं।

जैसे :-

- दालरोटी = दाल और रोटी
- हाथपाँव = हाथ और पाँव
- आहारनिंद्रा = आहार और निंद्रा

3. वैकल्पिक द्वंद्व समास :- इस द्वंद्व समास में दो पदों के बीच में या,अथवा आदि विकल्पसूचक अव्यय छिपे होते हैं उसे वैकल्पिक द्वंद्व समास कहते हैं। इस समास में ज्यादा से ज्यादा दो विपरीतार्थक शब्दों का योग होता है।

जैसे :-

- पाप-पुण्य =पाप या पुण्य
- भला-बुरा =भला या बुरा
- थोडा-बहुत =थोडा या बहुत

6. बहुब्रीहि समास क्या होता है :- इस समास में कोई भी पद प्रधान नहीं होता। जब दो पद मिलकर तीसरा पद बनाते हैं तब वह तीसरा पद प्रधान होता है। इसका विग्रह करने पर " वाला ,है,जो,जिसका,जिसकी,जिसके,वह " आदि आते हैं वह बहुब्रीहि समास कहलाता है।

जैसे :-

- गजानन = गज का आनन है जिसका (गणेश)
- त्रिनेत्र =तीन नेत्र हैं जिसके (शिव)
- नीलकंठ =नीला है कंठ जिसका (शिव)
- लम्बोदर = लम्बा है उदर जिसका (गणेश)
- दशानन = दश हैं आनन जिसके (रावण)
- चतुर्भुज = चार भुजाओं वाला (विष्णु)

- पीताम्बर = पीले हैं वस्त्र जिसके (कृष्ण)
- चक्रधर=चक्र को धारण करने वाला (विष्णु)
- वीणापाणी = वीणा है जिसके हाथ में (सरस्वती)
- स्वेताम्बर = सफेद वस्त्रों वाली (सरस्वती)

बहुब्रीहि समास के भेद :-

1.समानाधिकरण बहुब्रीहि समास

2. व्यधिकरण बहुब्रीहि समास

3. तुल्ययोग बहुब्रीहि समास

4. व्यतिहार बहुब्रीहि समास

5. प्रादी बहुब्रीहि समास

1. समानाधिकरण बहुब्रीहि समास :- इसमें सभी पद कर्ता कारक की विभक्ति के होते हैं लेकिन समस्त पद के द्वारा जो अन्य उक्त होता है ,वो कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध, अधिकरण आदि विभक्तियों में भी उक्त हो जाता है उसे समानाधिकरण बहुब्रीहि समास कहते हैं।

जैसे :-

- प्राप्त है उदक जिसको = प्रप्तोद्क
- जीती गई इन्द्रियां हैं जिसके द्वारा = जितेंद्रियाँ
- दत्त है भोजन जिसके लिए =दत्तभोजन

- निर्गत है धन जिससे = निर्धन
- नेक है नाम जिसका = नेकनाम
- सात है खण्ड जिसमें = सतखंडा

2. व्यधिकरण बहुब्रीहि समास :- समानाधिकरण बहुब्रीहि समास में दोनों पद कर्ता कारक की विभक्ति के होते हैं लेकिन यहाँ पहला पद तो कर्ता कारक की विभक्ति का होता है लेकिन बाद वाला पद सम्बन्ध या फिर अधिकरण कारक का होता है उसे व्यधिकरण बहुब्रीहि समास कहते हैं।

जैसे :-

- शूल है पाणी में जिसके = शूलपाणी
- वीणा है पाणी में जिसके = वीणापाणी

3. तुल्ययोग बहुब्रीहि समास :- जिसमें पहला पद 'सह' होता है वह तुल्ययोग बहुब्रीहि समास कहलाता है। इसे सहबहुब्रीहि समास भी कहती हैं। सह का अर्थ होता है साथ और समास होने की वजह से सह के स्थान पर केवल स रह जाता है।

इस समास में इस बात पर ध्यान दिया जाता है की विग्रह करते समय जो सह दूसरा वाला शब्द प्रतीत हो वो समास में पहला हो जाता है।

जैसे :-

- जो बल के साथ है = सबल

- जो देह के साथ है = सदेह
- जो परिवार के साथ है = सपरिवार

4. व्यतिहार बहुब्रीहि समास :- जिससे घात या प्रतिघात की सुचना मिले उसे व्यतिहार बहुब्रीहि समास कहते हैं। इस समास में यह प्रतीत होता है की ' इस चीज से और उस चीज से लड़ाई हुई।

जैसे :-

मुक्के-मुक्के से जो लड़ाई हुई = मुक्का-मुक्की
बातों-बातों से जो लड़ाई हुई = बाताबाती

5. प्रादी बहुब्रीहि समास :- जिस बहुब्रीहि समास पूर्वपद उपसर्ग हो वह प्रादी बहुब्रीहि समास कहलाता है।

जैसे :-

- नहीं है रहम जिसमें = बेरहम
- नहीं है जन जहाँ = निर्जन

1. संयोगमूलक समास क्या होता है :- संयोगमूलक समास को संज्ञा समास भी कहते हैं। इस समास में दोनों पद संज्ञा होते हैं अथार्त इसमें दो संज्ञाओं का संयोग होता है।

जैसे :- माँ-बाप, भाई-बहन, दिन-रात, माता-पिता।

2. आश्रयमूलक समास क्या होता है :- आश्रयमूलक समास को विशेषण समास भी कहा जाता है। यह प्राय कर्मधारय समास होता है। इस समास में प्रथम पद विशेषण होता है और दूसरा पद का अर्थ बलवान होता है। यह विशेषण-विशेष्य, विशेष्य-विशेषण, विशेषण,विशेष्य आदि पदों द्वारा सम्पन्न होता है।

जैसे :- कच्चाकेला , शीशमहल , घनस्याम, लाल-पीला, मौलवीसाहब , राजबहादुर।

3. वर्णनमूलक समास क्या होता है :- इसे वर्णनमूलक समास भी कहते हैं। वर्णनमूलक समास के अंतर्गत बहुब्रीहि और अव्ययीभाव समास का निर्माण होता है। इस समास में पहला पद अव्यय होता है और दूसरा पद संज्ञा। उसे वर्णनमूलक समास कहते हैं।

जैसे :- यथाशक्ति , प्रतिमास , घड़ी-घड़ी, प्रत्येक, भरपेट, यथासाध्य।

कर्मधारय समास और बहुब्रीहि समास में अंतर :-

समास के कुछ उदहारण है जो कर्मधारय और बहुब्रीहि समास दोनों में समान रूप से पाए जाते हैं ,इन दोनों में अंतर होता है। कर्मधारय समास में एक पद विशेषण या उपमान होता है और दूसरा पद विशेष्य या उपमेय होता है। इसमें शब्दार्थ प्रधान

होता है। कर्मधारय समास में दूसरा पद प्रधान होता है तथा पहला पद विशेष्य के विशेषण का कार्य करता है।

जैसे :- नीलकंठ =नीला कंठ

OR

बहुब्रीहि समास में दो पद मिलकर तीसरे पद की ओर संकेत करते हैं इसमें तीसरा पद प्रधान होता है।

जैसे :-नीलकंठ = नील+कंठ

द्विगु समास और बहुब्रीहि समास में अंतर :-

द्विगु समास में पहला पद संख्यावाचक विशेषण होता है और दूसरा पद विशेष्य होता है जबकि बहुब्रीहि समास में समस्त पद ही विशेषण का कार्य करता है।

जैसे :-

- चतुर्भुज -चार भुजाओं का समूह
- चतुर्भुज -चार हैं भुजाएं जिसकी

द्विगु और कर्मधारय समास में अंतर :-

(1) द्विगु का पहला पद हमेशा संख्यावाचक विशेषण होता है जो दूसरे पद की गिनती बताता है जबकि कर्मधारय का एक पद विशेषण होने पर भी संख्यावाचक कभी नहीं होता है।

(2) द्विगु का पहला पद्द ही विशेषण बन कर प्रयोग में आता है जबकि कर्मधारय में कोई भी पद दूसरे पद का विशेषण हो सकता है।

जैसे :-

- नवरात्र – नौ रात्रों का समूह
- रक्तोत्पल – रक्त है जो उत्पल

संधि

संधि दो शब्दों से मिलकर बना है – सम् + धि। जिसका अर्थ होता है 'मिलना '। हमारी हिंदी भाषा में संधि के द्वारा पुरे शब्दों को लिखने की परम्परा नहीं है। लेकिन संस्कृत में संधि के बिना कोई काम नहीं चलता। संस्कृत की व्याकरण की परम्परा बहुत पुरानी है। संस्कृत भाषा को अच्छी तरह जानने के लिए व्याकरण को पढना जरूरी है। शब्द रचना में भी संधियाँ काम करती हैं।

जब दो शब्द मिलते हैं तो पहले शब्द की अंतिम ध्वनि और दूसरे शब्द की पहली ध्वनि आपस में मिलकर जो परिवर्तन लाती हैं उसे संधि कहते हैं। अथार्त संधि किये गये शब्दों को अलग-अलग करके पहले की तरह करना ही संधि विच्छेद कहलाता है। अथार्त जब दो शब्द आपस में मिलकर कोई तीसरा शब्द बनती हैं तब जो परिवर्तन होता है , उसे संधि कहते हैं।

उदहारण :- हिमालय = हिम + आलय , सत् + आनंद =सदानंद।

संधि के प्रकार :

संधि तीन प्रकार की होती हैं :-

1. स्वर संधि

2. व्यंजन संधि

3. विसर्ग संधि

1. स्वर संधि क्या होती है :- जब स्वर के साथ स्वर का मेल होता है तब जो परिवर्तन होता है उसे स्वर संधि कहते हैं। हिंदी में स्वरों की संख्या ग्यारह होती है। बाकी के अक्षर व्यंजन होते हैं। जब दो स्वर मिलते हैं जब उससे जो तीसरा स्वर बनता है उसे स्वर संधि कहते हैं।

उदहारण :- विद्या + आलय = विद्यालय।

स्वर संधि पांच प्रकार की होती हैं :-

(क) दीर्घ संधि

(ख) गुण संधि

(ग) वृद्धि संधि

(घ) यण संधि

(ड)अयादि संधि

(क) दीर्घ संधि का होती है :- जब (अ , आ) के साथ (अ , आ) हो तो ' आ ' बनता है , जब (इ , ई) के साथ (इ , ई) हो तो ' ई ' बनता है , जब (उ , ऊ) के

साथ (उ , ऊ) हो तो ' ऊ ' बनता है। अथार्त सूत्र – अकः सवर्ण – दीर्घः मतलब अक प्रत्याहार के बाद अगर सवर्ण हो तो दो मिलकर दीर्घ बनते हैं। दूसरे शब्दों में हम कहें तो जब दो सुजातीय स्वर आस – पास आते हैं तब जो स्वर बनता है उसे सुजातीय दीर्घ स्वर कहते हैं , इसी को स्वर संधि की दीर्घ संधि कहते हैं। इसे ह्रस्व संधि भी कहते हैं।

उदहारण :- धर्म + अर्थ = धर्मार्थ

- पुस्तक + आलय = पुस्तकालय
- विद्या + अर्थी = विद्यार्थी
- रवि + इंद्र = रविन्द्र
- गिरी +ईश = गिरीश
- मुनि + ईश =मुनीश
- मुनि +इंद्र = मुनींद्र
- भानु + उदय = भानूदय
- वधू + ऊर्जा = वधूर्जा
- विधु + उदय = विधूदय
- भू + उर्जित = भुर्जित।

2. गुण संधि क्या होती है :- जब (अ , आ) के साथ (इ , ई) हो तो ' ए ' बनता है , जब (अ , आ)के साथ (उ , ऊ) हो तो ' ओ 'बनता है , जब (अ , आ) के साथ (ऋ) हो तो ' अर ' बनता है। उसे गुण संधि कहते हैं।

उदहारण :-

- नर + इंद्र + नरेंद्र
- सुर + इन्द्र = सुरेन्द्र
- ज्ञान + उपदेश = ज्ञानोपदेश
- भारत + इंदु = भारतेन्दु
- देव + ऋषि = देवर्षि
- सर्व + ईक्षण = सर्वेक्षण

3. वृद्धि संधि क्या होती है :- जब (अ , आ) के साथ (ए , ऐ) हो तो ' ऐ ' बनता है और जब (अ , आ) के साथ (ओ , औ)हो तो ' औ ' बनता है। उसे वृधि संधि कहते हैं।

उदहारण :-

- मत+एकता = मतैकता
- एक +एक =एकैक
- धन + एषणा = धनैषणा
- सदा + एव = सदैव
- महा + ओज = महौज

4. यण संधि क्या होती है :- जब (इ , ई) के साथ कोई अन्य स्वर हो तो ' य ' बन जाता है , जब (उ , ऊ) के साथ कोई अन्य स्वर हो तो ' व् ' बन जाता है , जब (

ऋ) के साथ कोई अन्य स्वर हो तो ‘ र ‘ बन जाता है। यण संधि के तीन प्रकार के संधि युक्त पद होते हैं। (1) य से पूर्व आधा व्यंजन होना चाहिए। (2) व् से पूर्व आधा व्यंजन होना चाहिए। (3) शब्द में त्र होना चाहिए।

यण स्वर संधि में एक शर्त भी दी गयी है कि य और त्र में स्वर होना चाहिए और उसी से बने हुए शुद्ध व् सार्थक स्वर को + के बाद लिखें। उसे यण संधि कहते हैं।

उदहारण :-

- इति + आदि = इत्यादि
- परी + आवरण = पर्यावरण
- अनु + अय = अन्वय
- सु + आगत = स्वागत
- अभी + आगत = अभ्यागत

5. अयादि संधि क्या होती है :- जब (ए , ऐ , ओ , औ) के साथ कोई अन्य स्वर हो तो ‘ ए – अय ‘ में , ‘ ऐ – आय ‘ में , ‘ ओ – अव ‘ में, ‘ औ – आव ‘ ण जाता है। य , व् से पहले व्यंजन पर अ , आ की मात्रा हो तो अयादि संधि हो सकती है लेकिन अगर और कोई विच्छेद न निकलता हो तो + के बाद वाले भाग को वैसा का वैसा लिखना होगा। उसे अयादि संधि कहते हैं।

उदहारण :-

- ने + अन = नयन
- नौ + इक = नाविक
- भो + अन = भवन
- पो + इत्र = पवित्र

2. व्यंजन संधि क्या होती है :- जब व्यंजन को व्यंजन या स्वर के साथ मिलाने से जो परिवर्तन होता है , उसे व्यंजन संधि कहते हैं।

उदहारण :-

- दिक् + अम्बर = दिगम्बर
- अभी + सेक = अभिषेक

व्यंजन संधि के 13 नियम होते हैं :-

(1) जब किसी वर्ग के पहले वर्ण क्, च्, ट्, त्, प् का मिलन किसी वर्ग के तीसरे या चौथे वर्ण से या य्, र्, ल्, व्, ह से या किसी स्वर से हो जाये तो क् को ग् , च् को ज् , ट् को ड् , त् को द् , और प् को ब् में बदल दिया जाता है अगर स्वर मिलता है तो जो स्वर की मात्रा होगी वो हलन्त वर्ण में लग जाएगी लेकिन अगर व्यंजन का मिलन होता है तो वे हलन्त ही रहेंगे।

उदहारण :- क् के ग् में बदलने के उदहारण –

- दिक् + अम्बर = दिगम्बर

- दिक् + गज = दिग्गज
- वाक् +ईश = वागीश

च् के ज् में बदलने के उदहारण :-

- अच् +अन्त = अजन्त
- अच् + आदि =अजादी

ट् के ड् में बदलन के उदहारण :-

- षट् + आनन = षडानन
- षट् + यन्त्र = षड्यन्त्र
- षड्दर्शन = षट् + दर्शन
- षड्विकार = षट् + विकार
- षडंग = षट् + अंग

त् के द् में बदलने के उदहारण :-

- तत् + उपरान्त = तदुपरान्त
- सदाशय = सत् + आशय
- तदनन्तर = तत् + अनन्तर
- उद्घाटन = उत् + घाटन
- जगदम्बा = जगत् + अम्बा

प् के ब् में बदलने के उदहारण :-

- अप् + द = अब्द
- अब्ज = अप् + ज

(2) यदि किसी वर्ग के पहले वर्ण (क्, च्, ट्, त्, प्) का मिलन न या म वर्ण (ङ,ञ ज, ण, न, म) के साथ हो तो क् को ङ्, च् को ज्, ट् को ण्, त् को न्, तथा प् को म् में बदल दिया जाता है।

उदहारण :- क् के ङ् में बदलने के उदहारण :-

- वाक् + मय = वाङ्मय
- दिङ्मण्डल = दिक् + मण्डल
- प्राङ्मुख = प्राक् + मुख

ट् के ण् में बदलने के उदहारण :-

- षट् + मास = षण्मास
- षट् + मूर्ति = षण्मूर्ति
- षण्मुख = षट् + मुख

त् के न् में बदलने के उदहारण :-

- उत् + नति = उन्नति

- जगत् + नाथ = जगन्नाथ
- उत् + मूलन = उन्मूलन

प् के म् में बदलने के उदहारण :-

- अप् + मय = अम्मय

(3) जब त् का मिलन ग, घ, द, ध, ब, भ, य, र, व से या किसी स्वर से हो तो द् बन जाता है। म के साथ क से म तक के किसी भी वर्ण के मिलन पर ‘ म ‘ की जगह पर मिलन वाले वर्ण का अंतिम नासिक वर्ण बन जायेगा।

उदहारण :- म् + क ख ग घ ङ के उदहारण :-

- सम् + कल्प = संकल्प/सटङ्कल्प
- सम् + ख्या = संख्या
- सम् + गम = संगम
- शंकर = शम् + कर

म् + च, छ, ज, झ, ञ के उदहारण :-

- सम् + चय = संचय
- किम् + चित् = किंचित
- सम् + जीवन = संजीवन

म् + ट, ठ, ड, ढ, ण के उदहारण :-

- दम् + ड = दण्ड/दंड
- खम् + ड = खण्ड/खंड

म् + त, थ, द, ध, न के उदहारण :-

- सम् + तोष = सन्तोष/संतोष
- किम् + नर = किन्नर
- सम् + देह = सन्देह

म् + प, फ, ब, भ, म के उदहारण :-

- सम् + पूर्ण = सम्पूर्ण/संपूर्ण
- सम् + भव = सम्भव/संभव

त् + ग , घ , ध , द , ब , भ ,य , र , व् के उदहारण :-

- सत् + भावना = सद्भावना
- जगत् + ईश =जगदीश
- भगवत् + भक्ति = भगवद्भक्ति
- तत् + रूप = तद्रूपत
- सत् + धर्म = सद्धर्म

(4) त् से परे च् या छ् होने पर च, ज् या झ् होने पर ज्, ट् या ठ् होने पर ट्, ड् या ढ् होने पर ड् और ल होने पर ल् बन जाता है। म् के साथ य, र, ल, व, श, ष, स, ह में से किसी भी वर्ण का मिलन होने पर 'म्' की जगह पर अनुस्वार ही लगता है।

उदहारण :- म + य , र , ल , व् , श , ष , स , ह के उदहारण :-

- सम् + रचना = संरचना
- सम् + लग्न = संलग्न
- सम् + वत् = संवत्
- सम् + शय = संशय

त् + च , ज , झ , ट , ड , ल के उदहारण :-

- उत् + चारण = उच्चारण
- सत् + जन = सज्जन
- उत् + झटिका = उज्झटिका
- तत् + टीका =तट्टीका
- उत् + डयन = उड्डयन
- उत् +लास = उल्लास

(5)जब त् का मिलन अगर श् से हो तो त् को च् और श् को छ् में बदल दिया जाता है। जब त् या द् के साथ च या छ का मिलन होता है तो त् या द् की जगह पर च् बन जाता है।

उदहारण :-

- उत् + चारण = उच्चारण
- शरत् + चन्द्र = शरच्चन्द्र
- उत् + छिन्न = उच्छिन्न

त् + श् के उदहारण :-

- उत् + श्वास = उच्छ्वास
- उत् + शिष्ट = उच्छिष्ट
- सत् + शास्त्र = सच्छास्त्र

(6) जब त् का मिलन ह् से हो तो त् को द् और ह् को ध् में बदल दिया जाता है। त् या द् के साथ ज या झ का मिलन होता है तब त् या द् की जगह पर ज् बन जाता है।

उदहारण :-

- सत् + जन = सज्जन
- जगत् + जीवन = जगज्जीवन
- वृहत् + झंकार = वृहज्झंकार

त् + ह के उदहारण :-

- उत् + हार = उद्धार
- उत् + हरण = उद्धरण
- तत् + हित = तद्धित

(7) स्वर के बाद अगर छ् वर्ण आ जाए तो छ् से पहले च् वर्ण बढ़ा दिया जाता है। त् या द् के साथ ट या ठ का मिलन होने पर त् या द् की जगह पर ट् बन जाता है। जब त् या द् के साथ 'ड' या ढ की मिलन होने पर त् या द् की जगह पर'ड्'बन जाता है।

उदहारण :-

- तत् + टीका = तट्टीका
- वृहत् + टीका = वृहट्टीका
- भवत् + डमरू = भवड्डमरू

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, + छ के उदहारण :-

- स्व + छंद = स्वच्छंद
- आ + छादन =आच्छादन
- संधि + छेद = संधिच्छेद
- अनु + छेद =अनुच्छेद

(8) अगर म् के बाद क् से लेकर म् तक कोई व्यंजन हो तो म् अनुस्वार में बदल जाता है। त् या द् के साथ जब ल का मिलन होता है तब त् या द् की जगह पर 'ल्' बन जाता है।

उदहारण :-

- उत् + लास = उल्लास
- तत् + लीन = तल्लीन
- विद्युत् + लेखा = विद्युल्लेखा

म् + च् , क, त, ब , प के उदहारण :-

- किम् + चित = किंचित
- किम् + कर = किंकर
- सम् +कल्प = संकल्प
- सम् + चय = संचयम
- सम +तोष = संतोष
- सम् + बंध = संबंध
- सम् + पूर्ण = संपूर्ण

(9) म् के बाद म का द्वित्व हो जाता है। त् या द् के साथ 'ह' के मिलन पर त् या द् की जगह पर द् तथा ह की जगह पर ध बन जाता है।

उदहारण :-

- उत् + हार = उद्धार/उद्धार
- उत् + हृत = उद्धृत/उद्धृत
- पद् + हति = पद्धति

म् + म के उदहारण :-

- सम् + मति = सम्मति
- सम् + मान = सम्मान

(10) म् के बाद य्, र्, ल्, व्, श्, ष्, स्, ह् में से कोई व्यंजन आने पर म् का अनुस्वार हो जाता है।'त् या द्' के साथ 'श' के मिलन पर त् या द् की जगह पर 'च्' तथा 'श' की जगह पर 'छ' बन जाता है।

उदहारण :-

- उत् + श्वास = उच्छ्वास
- उत् + शृंखल = उच्छृंखल
- शरत् + शशि = शरच्छशि

म् + य, र, व्,श, ल, स, के उदहारण :-

- सम् + योग = संयोग

- सम् + रक्षण = संरक्षण
- सम् + विधान = संविधान
- सम् + शय =संशय
- सम् + लग्न = संलग्न
- सम् + सार = संसार

(11) ऋ, र्, ष् से परे न् का ण् हो जाता है। परन्तु चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, श और स का व्यवधान हो जाने पर न् का ण् नहीं होता। किसी भी स्वर के साथ 'छ' के मिलन पर स्वर तथा 'छ' के बीच 'च्' आ जाता है।

उदहारण :-

- आ + छादन = आच्छादन
- अनु + छेद = अनुच्छेद
- शाला + छादन = शालाच्छादन
- स्व + छन्द = स्वच्छन्द

र् + न, म के उदहारण :-

- परि + नाम = परिणाम
- प्र + मान = प्रमाण

(12) स् से पहले अ, आ से भिन्न कोई स्वर आ जाए तो स् को ष बना दिया जाता है।

उदहारण :-

- वि + सम = विषम
- अभि + सिक्त = अभिषिक्त
- अनु + संग = अनुषंग

भ् + स् के उदहारण :-

- अभि + सेक = अभिषेक
- नि + सिद्ध = निषिद्ध
- वि + सम + विषम

(13)यदि किसी शब्द में कही भी ऋ, र या ष हो एवं उसके साथ मिलने वाले शब्द में कहीं भी 'न' हो तथा उन दोनों के बीच कोई भी स्वर,क, ख ग, घ, प, फ, ब, भ, म, य, र, ल, व में से कोई भी वर्ण हो तो सन्धि होने पर 'न' के स्थान पर 'ण' हो जाता है। जब द् के साथ क, ख, त, थ, प, फ, श, ष, स, ह का मिलन होता है तब द की जगह पर त् बन जाता है।

उदहारण :-

- राम + अयन = रामायण

- परि + नाम = परिणाम
- नार + अयन = नारायण
- संसद् + सदस्य = संसत्सदस्य
- तद् + पर = तत्पर
- सद् + कार = सत्कार

विसर्ग संधि क्या होती है :-

विसर्ग के बाद जब स्वर या व्यंजन आ जाये तब जो परिवर्तन होता है उसे विसर्ग संधि कहते हैं।

उदहारण :-

- मन: + अनुकूल = मनोनुकूल
- नि:+अक्षर = निरक्षर
- नि: + पाप =निष्पाप

विसर्ग संधि के 10 नियम होते हैं :-

(1) विसर्ग के साथ च या छ के मिलन से विसर्ग के जगह पर 'श्'बन जाता है। विसर्ग के पहले अगर 'अ'और बाद में भी 'अ' अथवा वर्गों के तीसरे, चौथे , पाँचवें वर्ण, अथवा य, र, ल, व हो तो विसर्ग का ओ हो जाता है।

उदहारण :-

मनः + अनुकूल = मनोनुकूल ; अधः + गति = अधोगति ; मनः + बल = मनोबल

- निः + चय = निश्चय
- दुः + चरित्र = दुश्चरित्र
- ज्योतिः + चक्र = ज्योतिश्चक्र
- निः + छल = निश्छल

विच्छेद

- तपश्चर्या = तपः + चर्या
- अन्तश्चेतना = अन्तः + चेतना
- हरिश्चन्द्र = हरिः + चन्द्र
- अन्तश्चक्षु = अन्तः + चक्षु

(2) विसर्ग से पहले अ, आ को छोड़कर कोई स्वर हो और बाद में कोई स्वर हो, वर्ग के तीसरे, चौथे, पाँचवें वर्ण अथवा य्, र, ल, व, ह में से कोई हो तो विसर्ग का र या र् हो जाता ह। विसर्ग के साथ 'श' के मेल पर विसर्ग के स्थान पर भी 'श्' बन जाता है।

- दुः + शासन = दुश्शासन
- यशः + शरीर = यशश्शरीर

- निः + शुल्क = निश्शुल्क

विच्छेद

- निश्श्वास = निः + श्वास
- चतुश्श्लोकी = चतुः + श्लोकी
- निश्शंक = निः + शंक
- निः + आहार = निराहार
- निः + आशा = निराशा
- निः + धन = निर्धन

(3) विसर्ग से पहले कोई स्वर हो और बाद में च, छ या श हो तो विसर्ग का श हो जाता है। विसर्ग के साथ ट, ठ या ष के मेल पर विसर्ग के स्थान पर 'ष्' बन जाता है।

- धनुः + टंकार = धनुष्टंकार
- चतुः + टीका = चतुष्टीका
- चतुः + षष्टि = चतुष्षष्टि
- निः + चल = निश्चल
- निः + छल = निश्छल
- दुः + शासन = दुश्शासन

(4)विसर्ग के बाद यदि त या स हो तो विसर्ग स् बन जाता है। यदि विसर्ग के पहले वाले वर्ण में अ या आ के अतिरिक्त अन्य कोई स्वर हो तथा विसर्ग के साथ मिलने वाले शब्द का प्रथम वर्ण क, ख, प, फ में से कोई भी हो तो विसर्ग के स्थान पर 'ष्' बन जायेगा।

- निः + कलंक = निष्कलंक
- दुः + कर = दुष्कर
- आविः + कार = आविष्कार
- चतुः + पथ = चतुष्पथ
- निः + फल = निष्फल

विच्छेद

- निष्काम = निः + काम
- निष्प्रयोजन = निः + प्रयोजन
- बहिष्कार = बहिः + कार
- निष्कपट = निः + कपट
- नमः + ते = नमस्ते
- निः + संतान = निस्संतान
- दुः + साहस = दुस्साहस

(5) विसर्ग से पहले इ, उ और बाद में क, ख, ट, ठ, प, फ में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग का ष हो जाता है। यदि विसर्ग के पहले वाले वर्ण में अ या आ का स्वर हो तथा विसर्ग के बाद क, ख, प, फ हो तो सन्धि होने पर विसर्ग भी ज्यों का त्यों बना रहेगा।

- अधः + पतन = अध: पतन
- प्रातः + काल = प्रात: काल
- अन्तः + पुर = अन्त: पुर
- वय: क्रम = वय: क्रम

विच्छेद

- रज: कण = रज: + कण
- तप: पूत = तप: + पूत
- पय: पान = पय: + पान
- अन्त: करण = अन्त: + करण

अपवाद

- भा: + कर = भास्कर
- नम: + कार = नमस्कार
- पुर: + कार = पुरस्कार
- श्रेय: + कर = श्रेयस्कर

- बृहः + पति = बृहस्पति
- पुरः + कृत = पुरस्कृत
- तिरः + कार = तिरस्कार
- निः + कलंक = निष्कलंक
- चतुः + पाद = चतुष्पाद
- निः + फल = निष्फल

(6) विसर्ग से पहले अ, आ हो और बाद में कोई भिन्न स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है। विसर्ग के साथ त या थ के मेल पर विसर्ग के स्थान पर 'स्' बन जायेगा।

- अन्तः + तल = अन्तस्तल
- निः + ताप = निस्ताप
- दुः + तर = दुस्तर
- निः + तारण = निस्तारण

विच्छेद

- निस्तेज = निः + तेज
- नमस्ते = नमः + ते
- मनस्ताप = मनः + ताप
- बहिस्थल = बहिः + थल
- निः + रोग = निरोग

- निः + रस = नीरस

(7) विसर्ग के बाद क, ख अथवा प, फ होने पर विसर्ग में कोई परिवर्तन नहीं होता। विसर्ग के साथ 'स' के मेल पर विसर्ग के स्थान पर 'स्' बन जाता है।

- निः + सन्देह = निस्सन्देह
- दुः + साहस = दुस्साहस
- निः + स्वार्थ = निस्स्वार्थ
- दुः + स्वप्न = दुस्स्वप्न

विच्छेद

- निस्संतान = निः + संतान
- दुस्साध्य = दुः + साध्य
- मनस्संताप = मनः + संताप
- पुनस्स्मरण = पुनः + स्मरण
- अंतः + करण = अंतःकरण

(8) यदि विसर्ग के पहले वाले वर्ण में 'इ' व 'उ' का स्वर हो तथा विसर्ग के बाद 'र' हो तो सन्धि होने पर विसर्ग का तो लोप हो जायेगा साथ ही 'इ' व 'उ' की मात्रा 'ई' व 'ऊ' की हो जायेगी।

- निः + रस = नीरस

- निः + रव = नीरव
- निः + रोग = नीरोग
- दुः + राज = दूराज

विच्छेद

- नीरज = निः + रज
- नीरन्द्र = निः + रन्द्र
- चक्षूरोग = चक्षुः + रोग
- दूरम्य = दुः + रम्य

(9) विसर्ग के पहले वाले वर्ण में 'अ' का स्वर हो तथा विसर्ग के साथ अ के अतिरिक्त अन्य किसी स्वर के मेल पर विसर्ग का लोप हो जायेगा तथा अन्य कोई परिवर्तन नहीं होगा।

- अतः + एव = अतएव
- मनः + उच्छेद = मनउच्छेद
- पयः + आदि = पयआदि
- ततः + एव = ततएव

(10) विसर्ग के पहले वाले वर्ण में 'अ' का स्वर हो तथा विसर्ग के साथ अ, ग, घ, ङ०, ´, झ, ज, ड, ढ़, ण, द, ध, न, ब, भ, म, य, र, ल, व, ह में से किसी भी वर्ण के मेल पर विसर्ग के स्थान पर 'ओ' बन जायेगा।

- मनः + अभिलाषा = मनोभिलाषा
- सरः + ज = सरोज
- वयः + वृद्ध = वयोवृद्ध
- यशः + धरा = यशोधरा
- मनः + योग = मनोयोग
- अधः + भाग = अधोभाग
- तपः + बल = तपोबल
- मनः + रंजन = मनोरंजन

विच्छेद

- मनोनुकूल = मनः + अनुकूल
- मनोहर = मनः + हर
- तपोभूमि = तपः + भूमि
- पुरोहित = पुरः + हित
- यशोदा = यशः + दा
- अधोवस्त्र = अधः + वस्त्र

अपवाद

- पुनः + अवलोकन = पुनरवलोकन
- पुनः + ईक्षण = पुनरीक्षण

- पुनः + उद्धार = पुनरुद्धार
- पुनः + निर्माण = पुनर्निर्माण
- अन्तः + द्वन्द्व = अन्तर्द्वन्द्व
- अन्तः + देशीय = अन्तर्देशीय
- अन्तः + यामी = अन्तर्यामी

शब्द – विचार

परिभाषा : एक या एक से अधिक वर्णों से बने सार्थक ध्वनि - समूह को शब्द कहते हैं ।

शब्द के भेद : शब्द की उत्पत्ति या स्रोत , रचना या बनावट , प्रयोग तथा अर्थ के आधार पर शब्दों के निम्न भेद किये जाते हैं -

✺ 1 . उत्पत्ति के आधार पर

उत्पत्ति एवं स्रोत के आधार पर हिन्दी भाषा में शब्दों को निम्न 4 उपभेदों में बाँटा गया हैं -

(i) तत्सम शब्द : किसी भाषा में प्रयुक्त उसकी मूल भाषा के शब्दों को तत्सम शब्द कहते हैं । हिन्दी की मूल भाषा (संस्कृत) के ये शब्द , जो हिन्दी में ज्यों के त्यों प्रयुक्त होते हैं , उन्हें तत्सम शब्द कहते हैं ।
जैसे - अट्टालिका , अर्पण , आम्र , उष्ट्र , कर्ण ,गर्दभ , क्षेत्र ।

(ii) तद्भव शब्द : उच्चारण की सुविधानुसार संस्कृत के ये शब्द , जिनका हिन्दी में रूप परिवर्तित हो गया , हिन्दी में तदभव शब्द कहलाते हैं । जैसे - चन्द्र से चाँद , अग्नि से आग , जिह्वा से जीभ आदि बने शब्द तद्भव शब्द कहलाते हैं ।

✺ तत्सम तद्भव शब्दों की सूची

तत्सम - तद्भव	तत्सम - तद्भव

नक्षत्र - नखत

ननंदृपति - नंदोई

नव - नया

नवती - नब्बे

अन्यपरश्व - नरसों

नस्या - नस

नखहरण - नहना

न हि - नहीं

नापित - नाई

लंघन - लांघना

नक्र - नाक

नस्ता - नाथ

अग्नि - आग

अंध - अँधा

अमृत - अमी

अर्ध - आधा

अष्ट - आठ

अश्रु - आँसू

अक्षि - आँख

अज्ञानी - अनजान

आम्र - आम

आद्रक- अदरक

आश्चर्य - अचरज

मत्सर - मच्छर

मत्स्य - मछली

मजिष्ठ - मजीठ

मृत्तिका - मिट्टी

मंडन - मढ़ना

मंत्रकारी - मदारी

शमशान - मसान

मुषल - मूसल

मुख - मुंह

मृत - मुआ

मुख्य - मुखिया

मह्यम - मुझे

मुष्टि - मुट्ठी

मुदग - मूंग

श्मश्रु - मूंछ

मुंड - मूंड

मस्तक - माथा

मृत्यु - मौत

मार्ग - मग

मिष्ठ - मीठा

मित्र - मीत

मुख - मुँह

मुष्टि - मुट्ठी

आच्शारी - आसरा

आशिष - आशीष

ओष्ठ - ओठ

इक्षु - ईख

उलूक- उल्लू

उष्ट्र - ऊँट

एकादश - ग्यारह

कच्छप - कछुआ

कटु - कड़वा

कंदुक - गेंद

कपाट - किवाड़

कपर्दिका - कौड़ी

कर्ण - कान

कर्पूर - कपूर

कार्य - काज

काष्ठ - काठ

कुपुत्र - कपूत

कुब्ज - कुबड़ा

कुम्भकार - कुम्हार

कुमार - कुँवर

कुष्ठ - कोढ़

कूप - कुँवा

कोकिल - कोयल

मूल्य - मोल

मूषक - मूस

मेघ - मेह

यमुना - जमुना

यम - जम

यंत्र - जंत्र

एष - यह

एवम - यों

अत्र - यहाँ

यज्ञोपवीत - जनेऊ

यजमान - जजमान

रक्षण - रखना .

रक्तिका - रत्ती .

रश्मि - रस्सी .

अरघट्ट - रहट.

क्षार - राख .

रक्षासूत - राखी .

रात्रि - रात .

रुदन - रोना

ऋक्ष - रीछ

राशि - रास

अरिष्ठ - रीठा

रिक्त - रीता

कोटि - करोड़

गर्जन - गरज

गर्दभ - गधा

ग्रंथि - गाँठ

ग्राम - गाँव

गोधूम - गेंहू

गौर -गोरा

गृध - गीध

गृह - घर

घटिका - घड़ी

घृत - घी

चंचु - चोंच

चतुर्थ - चौथा

चंद्र - चाँद

चर्मकार - चमार

चित्रकार - चितेरा

चैत्र - चैत

चौर - चोर

छिद्र - छेद

ज्येष्ठ - जेठ

जिह्वा - जीभ

ताम्र - ताँबा

तैल - तेल

ईर्ष्या - रीस

रुक्ष - रुखा

रुष्ट - रूठा

रजनी - रैन

रोम - रोंवा

राक्षस - राकस

राष्ट्र - राज्य

रक्तिका - रत्ती

रात्रि - रात

राशि - रास

रक्षा - राखी

लज्जा - लाज

लौह - लोहा

लम्बक - लम्बा

लीष्ट - लोढ़ा

वेदना - बेदना

वन - बन

वर्तिका - बत्ती

यव - जौ

योगी - जोगी

यूथ - जत्था

युवा - जवान

योवन - जोबन

त्वरित - तुरंत

दंड - डंडा

दधि - दही

दन्त - दांत

द्वादश - बारह

द्विगुण - दुगुना

दुग्ध - दूध

धैर्य - धीरज

धूम - धुवाँ

नग्न - नंगा

निर्गलन - निगलना

नारिकेल - नारियल

नवनवती - निन्नान्वें

नीचैः - नीचे

निष्ठुर - निठुर

निर्दर - निडर

निर्वहण - निभाना

निघाती- निहाई

नीच्य - नीचा

निम्बक - नीबू

निम्ब - नीम

निमंत्रण - नेवता

नियम - नेम

युवा - जवान

राजपुत्र - राजपूत

राज्ञी - रानी

रज्जू - रस्सी

रिक्त - रीता

लौहकार - लुहार

लवंग - लौंग

लवण - नमक

लोमश - लोमड़ी

विवाह - बारात

वरयात्रा - बारात

बिग्रह - बिगाड़

झटिति - झट .

निर्झर - झरना .

जीर्ण - झीना .

जुष्ट - झूठा .

टंकशाला - टंकशाला.

त्रुतयते- टूटना .

टिटटिभी - टिटिहरी .

शीत - ठंडा .

स्थान - ठांव .

दंश - डंक .

दर - डर.

नकुल - नेवला

नयन - नैन

ज्ञातिगृह - नैहर

लुंचन - नोचना

स्नेह - नेह

नयन - नैन

शकुन - सगुन

शालाकिका - सलाई

शत - सौ

शत - सौ

शिक्षा - सीख

श्रावण - सावन

श्रृंगार - सिन्गार

श्वास - साँस

शूकर - सूअर

शप्तशती - सतसई

राजा - राय

रात्रि - रात

रोदन - रोना

लज्जा - लाज

लवंग - लौंग

लक्ष - लाख

लोक - लोग

दंशन - डसना.

दंड - ठंडा .

डाकिनी - डाइन.

दंष्ट्रा - डाह .

दाह - डाह .

विस्टा - बीट

विद्युत् - बिजली

वत्स - बच्चा

व्याघ्र - बाघ

वंश - बांस

वक् - बगुला

वृच्शिक - बिच्छु

वर्धकिन - बढ़ई

वारिद - बादल

वातुलक - बावला

विल्ब - बेल

व्यथा - विधा

वधु - बहू

वट - बरगद

वाणिक - बनिया

वृद्ध - बुढा

वानर - बन्दर

वास्प - भाप

लौहकार - लोहार

वट - बड़

वत्स - बच्चा

वधू - बहू

व्याध - बाघ

वानर - बन्दर

वाष्प - भाप

शत - सौ

शत - सौ

स्तन - थन

सप्त - सात

स्वर्ण - सोना

सूर्य - सूरज

सूत्र - सूत

सौभाग्य - सुहाग

हास्य - हँसी

अस्थि - हड्डी

हस्त - हथोड़ा

हरीतकी - हरड

हरित - हरा

लघुक - हल्का

हरिद्रा - हल्दी

हस्त - हाथ

वर्ष - बरस

व्याख्यान - बखान

वार्ता - बात

वाराणसी - बनारस

विग्रह - बीघा

वेश - भेस

हितेच्छु - हितैषी

हस्त - हाथ

हस्ती - हाथी

हरिद्रा - हल्दी

हास्य - हँसी

क्षार - खार

क्षेत्र - खेत

शिक्षा - सीख

श्रावण - सावन

श्रृंगार - सिंगार

श्वास - साँस

शूकर - सूअर

शप्तशती - सतसई

श्यामल - साँवला

शाप - श्राप

शुन्ठिका - सोंठ

श्रृंगाल - सियार

हस्ती - हाथी

हारि - हार

हीरक - हीरा

अघ : स्थिति - हेठी

ह्रदय - हिया

हिल्लन - हिलना

हिंगू - हींग

ओष्ठ - होंठ

हट्ट - हाट

निद्रा - नींद

निष्ठुर - निठुर

पद - पैर

पश्चाताप - पछतावा

पक्ष - पंख

प्रकट - प्रगट

प्रतिवासी - पडोसी

प्रस्तर - पत्थर

प्रहरी - पहरी

प्रतिवेशी - पडोसी

पठ - पढ़

पिस्थिका - पीठी

पत्र- पत्ता

प्रस्तर - पत्थर

श्रिंग - सींघ

पष्ट - छः

स्फटिक - फटकरी

परशु - फरुआ

पाशिका - फांसी

फाल्गुन - फागुन

स्फूर्ति - फुरती

स्फुटन - फूटना

फुल्ल - फुल्का

फुल्लन - फूलना

स्फोट - फोड़ा

परशु - फरसा

स्कंध - कन्धा

स्कंधभार - कहार

स्तम्भ - खम्भा

स्थानक - ठप्पा

साक्षी - साखी

सूर्य - सूरज

सूची - सूई

सर्सप - सरसों

हास्य - हँसी

हस्तिनी - हथनी

श्यालक - साला

पन्यशालिक - पंसारी

उपरि - पर

परिकूट- परकोटा

प्रतिच्छाया - परछाई

प्रणाल - परनाला

परपौत्र - परपोता

पर्पौत्री - परपोती

परमार्थ - परमारथ

स्पर्श - परस

परीक्षा -परिच्छा

परश्व - परसों

पर्पट- पराठा

पर्यक - पलंग

पटल - पलड़ा

पल्लव - पल्ला

स्वेद - पसीना

प्रत्यभिज्ञान - पहचान

परिधान - पहनना

प्रहर - पहर

प्रथिल - पहला

प्रहरी - पहरूवा

पञ्च - पाँच

पिप्पल - पीपल।

श्वसुर - ससुर

शर्कर - शक्कर

शाक - साग

शुष्क - सूखा

शून्य - सूना

शीतल - सीतल

शुण्ड - सूंड

श्रद्धा - साध

स्फोटक - फूट

स्तन - थान

स्वामी - साईं

सज्जा - साज

संधि - सेंध

सूत्र - सूत

स्वप्न - सपना

संध्या - शाम

हस्ति - हाथी

होलिका - होली

हस्त - हाथ

हत्याकार - होली

हृदय - हिया

श्यालस - साला

शय्या - सेज

पृष्ठ - पीठ

पाद - पाँव

पितृ - पिता

पीत - पीला

पुत्र - पूत

पुराण - पुराना

पौत्र - पोता

फाल्गुन - फागुन

बधिर - बहरा

बालुका - बालू

बिन्दू - बूँद

भक्त - भगत

भल्लूक - भालू

भिक्षा - भीख

मयूर - मोर

मंडप - मंडुवा

मक्षिका - मक्खी

शर्करा - शक्कर

स्वसुर - ससुर

शाक - साग

शृंखला - साँकल

श्रृंगार - सिंगार

श्रृंगाल - सियार

श्रावण - सावन

शिर - सिर

शिला - सिल

शिक्षा - सीख

शीर्ष - सीस

श्रेष्ठी - सेठ

स्कंध - कन्धा

संध्या - साँझ

(iii) देशज शब्द : किसी भाषा में प्रचलित वे शब्द , जो क्षेत्रीय जनता द्वारा आवश्यकतानुसार गढ़ लिए जाते हैं , देशज शब्द कहलाते हैं । अर्थात् भाषा के अपने शब्दों को देशज शब्द कहते हैं । साथ ही ये शब्द भी देशज शब्दों की श्रेणी में आते हैं जिनके स्रोत का कोई पता नहीं हैं तथा हिन्दी में संस्कृतेतर भारतीय भाषाओं से आ गये हैं ।

(अ) अपनी गढन्तु से बने शब्द - ऊटपटाँग , ऊधम , अँगोछा , जङ , खटपट , खर्राटा , खचाखच , खिड़की , खुरपा , गाडी , गड़गड़ाना , गड़बड़ , घेवर , चम्मच , चहचहाना , चिमटा , चाट , चुटकी , चिंघाड़ना , चट्टी , छहरा , छल - छलाना , इण्डा , झगड़ा , टट्टू ठठेरा , डगमगाना , ढक्कन , ढाँचा , डोर , दीदी , पटाखा , परात , पगड़ी , पेट , फटफट , बड़बड़ाना , बटलोई , बाप , बुद्धू , बलबलाना , भोला , मकई , मिमियाना , मुक्का , लपलपाना , लड़की , लुग्दी , लोटपोट , लोटा , हिनहिनाना

(आ) द्रविड़ जातियों की भाषाओं से आये देशज शब्द : अनल , कज्जल , नीर , पंडित , माला , मीन , काच , कटी , चिकना . ताला , लूंगी , डोसा , इडली ।

(इ) कोल संस्थाल आदि जातियों की भाषा से बने हिकी के देशज शब्द : कदली से केला , कर्पास से कपास , सरसों , कोड़ी , ताम्बूल , परवल , बाजरा , भिंड़ी ,

(iv) विदेशी शब्द : राजनीतिक , आर्थिक , धार्मिक एवं सांस्कृतिक कारणों से किसी भाषा में अन्य देशों की भाषाओं से भी शब्द आ जाते हैं , उन्हें विदेशी शब्द कहते हैं । हिन्दी भाषा में प्रयुक्त अंग्रेजी , अरबी , फारसी , पुर्तगाली , तुर्की , फ्रांसीसी , चीनी भाषाओं के अतिरिक्त डच , जर्मनी , जापानी , तिब्बती , रूसी , यूनानी भाषा के भी शब्द प्रयुक्त होते हैं ।

(क) अंग्रेजी भाषा के शब्द जो प्रायः हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं । अण्डरवियर , अल्मारी , अस्पताल , इंजीनियर , एक्स - रे , एजेण्ट , एम . पी . , क्लास , क्लर्क , कलेक्टर , कॉपी , कार , कैमरा , केस , कौट , क्रिकेट , गार्ड , चैक , टायर , ट्यूब , टेलिविजन , टेलर , टीचर , ट्रक , डबल बैड , डॉक्टर , ड्राफ्ट , निब पोस्टकार्ड , पैन , प्लेटफार्म पाउडर , पोलिंग , पार्लियामेन्ट , पंचर , फिल्म , फाइल , फुटबाल , बस , बिल्डिंग , बैंक बैण्ड , ब्रुश , बुश्शर्ट , बैडमिण्टन , मास्टर , मजिस्ट्रेट , मेम्बर , यूनिवर्सिटी , यूनीफार्म , रेडियो , रजिस्टर , रेल , रेडीमेड , लीडरशिप , लाटरी , वारण्ट , वोट , शर्ट , सूट , सिगनल , सिलेण्डर , सीमेण्ट , स्कूटर , स्वैटर ।

(ख) अरबी भाषा के शब्द : अक्ल , अजीब , अदालत , आजाद , आदमी , इज्जत , इलाज , इन्तजार , इनाम , इस्तीफा , औलाद , कमाल , कब्जा , कानून , कुर्सी , किताब , किस्मत , कबीला , कीमत , गरीब , जनाब , जलसा , जवाब , जुर्माना , जिला , तहसील , ताकत , तारीख , तूफान , तराजू , तमाशा , दुनिया , दफ्तर , दौलत , नतीजा , नशा , नकद , फकीर , फैसला , बहस , मदद , मतलब , लिफाफा , वकील , शतरंज , शादी , सुबह , हलवाई , हिम्मत , हिसाब , हुक्म् ।

(ग) फारसी के शब्द : अखबार , अमरूद , आराम , आवारा , आसमान , आतिशबाजी , आमदनी , कमर , कारीगर कमीना , कुश्ती , खराब , खर्च , खजाना , खून , खुश्क , गवाह , गुब्बारा , गुलाब , जानवर , जैब , जगह , जमीन , जलेबी , तनख्वाह , तबाह , दर्जी , दवा , दरवाजा , दीवार , नमक , नेक , बीमार , मजदूर , मलाई , यार , लगाम , शेर , शराब , सूखा , सूद , सेर , सौदागर , सुलान , सुल्पा ।

(घ) पुर्तगाली भाषा से : अचार , अगस्त , आलपिन , आलू , आया , अन्नानास , इस्पात , कनस्तर , कारबन , कमीज , कमर , गमला , गोभी , गोदाम , चाबी , तौल्मित , नीलाम् , पीपा , पादरी , पिस्तौल , फीता , बस्ता , बटन , बाल्टी , पपीता , प्याला , पतलून , मेज , लबादा , संतरा , साबुन ।

(च) तुर्की से : भाका , उर्दू , एलची , काबू , खां , कैंची , काबू , कुर्की , कलंगी , कालीन , खंजर , खॉ , चॉक , चिक , चेचक , चुगली , चोगा , तमगा , तमाशा , तोप , बारूद , बाबर्ची , बीबी , बेगम , बहादुर , मुगल , लाश ।

(छ) फ्रेंच (फ्रांसीसी) से : अंग्रेज , काजू , कारतूस , कूपन , टेबुल , मेयर मार्शल , मीनू , रेस्ट्रॉ . सूप ।

(ज) चीनी से : चाय , लीची , लोकाट , तूफान ।

(झ) डच से : तुरुप , बम , चिडिया , ड्रिल ।

(ट) जर्मनी से : नात्सी , नाजीवाद , किंडर गार्टन ।

(ठ) जापानी से : रिक्सा , सायोनारा ।

(ड) तिब्बती से : लामा , डाँडी ।

(ढ) रुसी से : जार , सोवियत , रूबल , स्पुतनिक , बुर्जुग ।

(त) यूनानी से : एकैडमी , एटम , एटलस , टेलिफोन , बाइबिल ।

(v) संकर शब्द : हिन्दी में वे शब्द जो दो अलग - अलग भाषाओं के शब्दों को मिलाकर बना लिये गये हैं , संकर शब्द कहलाते हैं ।

अग्नि बोट = अग्नि (संस्कृत) + बोट (अंग्रेजी)

टिकिट - घर = टिकिट (अंग्रेजी) + घर (हिन्दी)

तपैदिक = तप (फारसी) + दिक (अरबी)

नेकचलन = नेक (फारसी) + चलन (हिन्दी)

नेक नीयत = नेक (फारसी) + नीयत (अरबी)

बे - आब = बे (फारसी) + आब (अरबी)

बे - ढंगा = बे (फारसी) + ढंगा (हिन्दी)

बे - कायदा = बे (फारसी) + कायदा (अरबी)

विसातखाना = विसात (अरबी) + खाना (फारसी)

सजा प्राप्त = सजा (फारसी) + प्राप्त (हिन्दी)

रेलगाड़ी = रेल (अग्रेजी) + गाड़ी (हिन्दी)

उड़न तश्तरी = उड़न (हिन्दी) + तश्तरी (फारसी)

कवि दर = कवि (हिन्दी) + दरबार (फारसी)

बम वर्षा = बम (अंग्रेजी) + वर्षा (फारसी)

जांचकर्ता = जाँच (फारसी) + कर्ता (हिन्दी)

✺ (ख) रचना के आधार पर

शब्दों की रचना प्रक्रिया के आधार पर हिन्दी भाषा के शब्दों के तीन भेद किये जाते हैं ।

(1) रूढ़ शब्द (2) यौगिक शब्द (3) योग रूढ़ शब्द |

(i) रूढ़ शब्द : वे शब्द जो किसी व्यक्ति , स्थान , प्राणी और वस्तु के लिए वर्षों से प्रयुक्त होने के कारण किसी विशिष्ट अर्थ में प्रचलित हो गए हैं , रूढ़ शब्द ' कहलाते हैं । इन शब्दों की निर्माण प्रक्रिया भी पूर्णतः ज्ञात नहीं होती । इनका अन्य अर्थ भी नहीं होता तथा इन शब्दों के टुकड़े करने पर भी उन टुकड़ों के स्वतन्त्र अर्थ नहीं होते । जैसे - दूध , गाय , रोटी , दीपक, पत्थर , देवता , आकाश , मेंढक , स्त्री ।

(ii) यौगिक शब्द: वे शब्द जो दो या दो से अधिक शब्दों के योग से बने हैं । उन शब्दों का अपना पृथक अर्थ भी होता है , किन्तु वे मिलकर अपने मूल शब्द से सम्बंधित या अन्य किसी नये अर्थ का भी बोध कराते हैं , यौगिक शब्द कहलाते हैं । समस्त संधि , समास , उपसर्ग तभा प्रत्यय से बने शब्द यौगिक शब्द कहलाते हैं । यथा - विद्यालय , प्रेमसागर , प्रतिदिन , दूधवाला , राजमाता , ईश्वर-प्रदत , राष्ट्रपति , महर्षि , कृष्णार्पण , चिड़ीमार ।

(iii) योगरूढ़ शब्द : यौगिक शब्द जिनका निर्माण पृथक - पृथक अर्थ देने वाले शब्दों के योग से होता है , किन्तु वे अपने द्वारा प्रतिपादित अनेक अर्थों में से किसी एक विशेष अर्थ के लिए ही प्रतिपादित होकर रूढ़ हो गये हैं , ऐसे शब्दों को योगरूढ़ शब्द कहते हैं । जैसे - पीताम्बर , शब्द ' पीत ' और ' अम्बर ' के योग से बना है , जो विष्णु के अर्थ में रूढ़ है । इसी प्रकार दशानन , हिमालय , जलज , जलद , गजानन , लम्बोदर , त्रिनेत्र , चतुर्भुज , धनश्याम , रजनीचर , विषधर चक्रधर , षडानन , रावणारि , मुरारि ।

✺ (ग) प्रयोग के आधार पर

प्रयोग के आधार पर हिन्दी में शब्दों के दो भेद किए जाते हैं ।
(i) विकारी (ii) अविकारी या अव्यय शब्द ।

(i) विकारी शब्द : वे शब्द , जिनका रूप लिंग , वचन , कारक और काल के अनुसार परिवर्तित हो जाता है , उन्हें विकारी शब्द कहते हैं । विकारी शब्दों में समस्त संज्ञा , सर्वनाम , विशेषण तथा क्रिया शब्द आते हैं ।

(ii) अविकारी या अव्यय शब्द : वे शब्द जिनके रूप में लिंग , वचन , कारक , काल के अनुसार कोई विकार उत्पन्न नहीं होता अर्थात् इन शब्दों का रूप सदैव वही बना रहता है । ऐसे शब्दों को अविकारी या अव्यय शब्द कहते हैं । अविकारी शब्दों में क्रियाविशेषण , सम्बन्ध - बोधक अव्यय , समुच्चय बोधक अव्यय तथा विस्मयादिबोधक अव्यय आदि शब्द आते हैं ।

✺ (घ) अर्थ के आधार पर

अर्थ के आधार पर शब्दों के निम्न भेद किए जाते हैं -

(i) एकार्थी शब्द : वे शब्द जिनका प्रयोग प्रायः एक ही अर्थ में होता है , एकार्थी शब्द कहलाते हैं। जैसे - दिन , धूप , लड़का , पहाड़ , नदी।

(ii) अनेकार्थी शब्द : वे शब्द , जिनके एक से अधिक अर्थ होते हैं , तथा उनका प्रयोग अलग-अलग अर्थ में किया जा सकता है। जैसे : अज , अमृत , कर , सारंग , हरि आदि अनेकार्थी शब्द हैं।

(iii) पर्यायवाची शब्द : वे शब्द , जिनका अर्थ समान होता है। अर्थात् एक ही शब्द के अनेक समानार्थी शब्द पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं। जैसे सूर्य , भानु , रवि , दिनेश , भास्कर आदि शब्द सूर्य के समानार्थी या पर्यायवाची शब्द हैं।

(iv) विलोम शब्द : ये शब्द जो एक दूसरे का विपरीत अर्थ देते हैं , उन्हें विलोम या विपरीतार्थक शब्द कहते हैं। जैसे दिन - रात , जय - पराजय , आशा - निराशा , सुख दुःख ।

(v) समोच्चारित शब्द या युग्म शब्द : वे शब्द जिनका उच्चारण समान प्रतीत होता है किन्तु अर्थ बिलकुल भिन्न होता है। ऐसे शब्दों को समोच्चारित शब्द ,युग्म – शब्द या समरूपी भिन्नार्थक शब्द कहते हैं। जैसे : अनल अनिल उच्चारण में समान है किन्तु अनल का अर्थ है आग तथा अनिल को अर्थ हैं - हवा।

(vi) शब्द समूह के लिए एक शब्द : वे शब्द जो किसी वाक्य , वाक्यांश या शब्द समूह के लिए एक शब्द बन कर प्रयुक्त होते हैं उन्हें शब्द समूह के लिए प्रयुक्त एक शब्द कहते है। जैसे - जिसका कोई शत्रु न हो - अजातशत्रु।

(vii) समानार्थक प्रतीत होने वाले भिन्नार्थक शब्द : वे शब्द जो मोटे रूप में समान अर्थ वाले प्रतीत होते हैं , किन्तु उनमें अर्थ का इतना सूक्ष्म अन्तर होता है कि उन्हें अलग - अलग संदर्भ में ही प्रयुक्त करना पड़ता है । जैसे अस्त्र - शस्त्र , अस्त्र शब्द उन हथियारों के लिए प्रयुक्त इता है , जिन्हें फेंक कर वार किया जाता है । जैसे - तीर , बम , बन्दूक , आदि ; जबकि शस्त्र उन हथियारों को कहते हैं जिनका प्रयोग पास में रखकर ही किया जाता है जैस - लाठी , तलवार , चाकू , भाला आदि ।

(viii) समूहवाची शब्द : वे शब्द जो किसी एक समूह का बोध कराते हैं उन्हें समूहवाची शब्द कहते हैं | जैसे : गट्ठर (लकड़ी या पुस्तकों का) गुच्छा (चाबियों या अंगूर का) गिरोह (माफिया या डाकुओं का) , जोड़ा जूतों का हंसों का), जत्था (यात्रियों का , सत्याग्रहियों का) , झुण्ड (पशुओं का) टुकड़ी (सेना की) , ढेर (अनाज का) ,भीड़ (मनुष्यों की) , माला (फूलों की , मोतियों की) , श्रृंखला (मानव , लौह) रेवड़ (भेड़ व बकरियों का) समूह (मनुष्यों का) ।

(ix) ध्वन्यार्थक शब्द : वे ध्वन्यात्मक शब्द जिनको अर्थ ध्वनियों पर आधारित होता है । इनको निम्न उपभेदों में बाँट सकते हैं-

(अ) पशुओं की बोलियाँ : किलकिलाना (बन्दर) , गुर्राना , (चीता) दहाड़ना (शेर) भौंकना (कुत्ता) , रेंकना (गधा) , हिनहिनाना (घोड़ा) , डकारना (बैल) , चिंघाड़ना (हाथी) , फूँफकारना (सॉप) , मिमियाना (भेड़ , बकरी) , रंभाना (गाय) , गुंजारना (भौंरा) , टर्राना (मेंढ़क) , म्याऊ (बिल्ली) बलबलाना (ऊँट) , हुआ हुआ (गीदड़)

(आ) पक्षियों की बोलियाँ : कूजना (बतख , कुरजा) , कुकडूकूं (मुर्गा) चीखना (बाज) , हू हू (उल्लू) , काँव - काँव (कौवा), गुटरगूं (कबूतर) , टें - टें (तोता) , कूहकना (कोयल) , चहचहाना (चिड़िया) मेयो , मेयो (मोर)

(ग) जड़ पदार्थों की ध्वनियाँ : कड़कना (बिजली) , खटखटाना (दरवाजा) , छुक - छुक (रलगाड़ी) , टिक - टिक (घड़ी) , गरजना (बादल) , किटकिटाना (दाँत) , खनखनाना (रुपया) टनटनाना (घण्टा) फड़फड़ाना (पंख) , खड़खड़ाना (पत्ते)

(घ) अन्य शब्द : छलछलाना , लहलहाना , दमदमाना , चमचमाना , जगमगाना , फहराना , लपलपाना ।

शब्द - विचार -II

✺ (अ) विकारी शब्द

✸ संज्ञा

परिभाषा : किसी प्राणी , वस्तु , स्थान , भाव , अवस्था , गुण या दशा के नाम को *संज्ञा* कहते हैं । जैसे आलोक , पुस्तक , जोधपुर , दया , बचपन , मिठास , गरीबी आदि ।

प्रकार : संज्ञा मुख्यतः तीन प्रकार की होती है -

(1) व्यक्तिवाचक संज्ञा

(2) जातिवाचक संज्ञा

(3) भाववाचक संज्ञा

(1) व्यक्तिवाचक संज्ञा : व्यक्ति विशेष , वस्तु विशेष अथवा स्थान विशेष के नाम को *व्यक्तिवाचक संज्ञा* कहते हैं । जैसे :

व्यक्ति विशेष : अभिषेक , गुंजन , कविता , कामिनी , लोकेश ।

वस्तु विशेष : रामायण , ऊषापंखा , रीटामशीन ।

स्थान विशेष : जयपुर , गंगा , ताजमहल , हिमालय ।

(2) जातिवाचक संज्ञा : जिस संज्ञा से किसी प्राणी , वस्तु अथवा स्थान की जाति या पूरे वर्ग का बोध होता है , उसे *जातिवाचक संज्ञा* कहते हैं । जैसे -

प्राणी : मनुष्य , लड़की , घोड़ा , मोर , सेना , सभा

वस्तु : पुस्तक , पंखा , मशीन , दूध , साबुन , चाँदी

स्थान : पहाड़ , नदी , भवन , शहर , गाँव , विद्यालय

(3) भाववाचक संज्ञा : किसी भाव , अवस्था , गुण अथवा दशा के नाम को *भाववाचक संज्ञा* कहते हैं । जैसे - सुख , बचपन , सुन्दरता ।

विशेष : कतिपय विद्वान अंग्रेजी व्याकरण की नकल करते हुए हिन्दी में भी (1) समुदायवाचक संज्ञा तथा (2) द्रव्यवाचक संज्ञा दो भेद और बताते हैं किन्तु हिन्दी में उक्त दोनों भेद जाति - वाचक संज्ञा के अन्तर्गत आते हैं ।

✷ भाववाचक संज्ञाएँ बनाना

जातिवाचक संज्ञा , सर्वनाम , विशेषण , क्रिया तथा कुछ अव्यय पदों के साथ प्रत्यय के मेल से भाववाचक संज्ञाएँ बनती हैं । यथा -

1 . जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा -

(अ) ' ता ' प्रत्यय के मेल से मानव - मानवता , मित्र - मित्रता , प्रभु - प्रभुता , पशु - पशुता

(आ) त्व - पशु - पशुत्व , मनुष्य - मनुष्यत्व , कवि - कवित्व , गुरु - गुरुत्व ।

(इ) पन - लड़का - लड़कपन , बच्चा - बचपन ।

(ई) अ - शिशु - शैशव , गुरु - गौरव , विभु – वैभव ।

(उ) ई - भक्त - भक्ति ।

(ऊ) ई - नौकर - नौकरी , चोर - चोरी ।

(ए) आपा - बूढा - बुढ़ापा , बहन - बहनापा ।

2 . सर्वनाम से भाववाचक संज्ञा

(अ) त्व - अपना - अपनत्व , निज - निजत्व , स्व - स्वत्व ।

(आ) पन - अपना - अपनापन , पराया - परायापन ।

(इ) कार - अहं - अहंकार ।

(ई) स्व - सर्व - सर्वस्व ।

3 . विशेषण से भाववाचक संज्ञा

(अ) आई - साफ - सफाई , अच्छा - अच्छाई , बुरा – बुराई ।

(आ) आस - खट्टा - खटास , मीठा - मिठास ।

(इ)ता – उदार - उदारता , वीर – वीरता , सरल - सरलता ।

(ई)य - मधुर - माधुर्य , सुन्दर - सौन्दर्य , स्वस्थ - स्वास्थ्य ।

(उ) पन - खट्टा - खट्टापन , पीला - पीलापन ।

(ऊ) त्व - वीर - वीरत्व ।

(ए) ई - लाल - लाली ।

4 . क्रिया से भाव - वाचक संज्ञा

(अ) अ - खेलना - खेल , लूटना - लूट , जीतना - जीत ।

(आ)ई - हँसना - हँसी

(इ)आई - चढ़ना - चढ़ाई , पढ़ना - पढ़ाई , लिखना - लिखाई ।

(ई)आवट - बनाना - बनावट , थकना - थकावट , लिखना - लिखावट ।

(उ)आव - चुनना - चुनाव ।

(ऊ) आहट - घबराना - घबराहट , गुनगुनाना - गुनगुनाहट ।

(ए)उड़ना - उड़ान ।

(ऐ)न - लेना - देना - लेन - देन , खाना - खान ।

5 . अव्यय से भाववाचक संज्ञा

(अ) ई - भीतर - भीतरी , ऊपर - ऊपरी , दूर - दूरी ।

(आ) य - समीप - सामीप्य ।

(इ) इक - परस्पर - पारस्परिक , व्यवहार - व्यावहारिक ।

(ई) ता - निकट - निकटता , शीघ्र - शीघ्रता ।

✷ सर्वनाम

सर्वनाम शब्द का अर्थ है - सब का नाम। वाक्य में संज्ञा की पुनरुक्ति को दूर करने के लिए संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्दों को *सर्वनाम* कहते हैं।

जैसे - गुंजन विद्यालय जाती है। वह वहाँ पढ़ती है। पहले वाक्य में **' गुंजन '** तथा **'विद्यालय'** शब्द संज्ञाएँ हैं, दूसरे वाक्य में 'गुंजन ' के स्थान पर **'वह'** तथा विद्यालय के स्थान पर **'वहाँ '** शब्द प्रयुक्त हुए हैं। अतः ' वह ' और ' वहाँ 'शब्द संज्ञाओं के स्थान पर प्रयुक्त हुए हैं इसलिए इन्हें सर्वनाम कहते हैं।

प्रकार : सर्वनाम छः प्रकार के होते हैं।

1 . पुरुषवाचक सर्वनाम : जिन सर्वनामों का प्रयोग बोलने वाले, सुननेवाले या अन्य किसी व्यक्ति के स्थान पर किया जाता है, उन्हें *पुरुषवाचक सर्वनाम* कहते हैं।

पुरुषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के होते हैं -

(i) उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम : वे सर्वनाम शब्द जिनका प्रयोग बोलने वाला व्यक्ति स्वयं अपने लिए करता है। जैसे - मैं, हम मुझे, मेरा, हमारा, हमें आदि।

(ii) मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम : वे सर्वनाम शब्द, जो सुनने वाले के लिए प्रयुक्त किये जाते हैं। जैसे - तू, तुम, तुझे तुम्हें तेरा, आप, आपका आपको आदि। हिन्दी में अपने से बड़े या आदरणीय व्यक्ति के लिए तुम की अपेक्षा ' आप ' सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है।

(iii) अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम : वे सर्वनाम, जिनका प्रयोग बोलने तथा सुनने वाले व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति के लिए प्रयुक्त करते हैं। जैसे - वह, वे, उन्हें उसे, इसे, उसका इसका आदि।

2 . निश्चयवाचक सर्वनाम : वे सर्वनाम, जो किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध कराते हैं, उन्हें *निश्चयवाचक सर्वनाम* कहते हैं। जैसे — यह, वह, इस, उस, ये, वे आदि। वह आपकी घड़ी है, वाक्य में वह शब्द निश्चयवाचक सर्वनाम है इसी प्रकार ' यह मेरा घर है ' में ' यह ' शब्द।

3 . अनिश्चयवाचक सर्वनाम : वे सर्वनाम शब्द, जिनसे किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति का बोध नहीं होता बल्कि अनिश्चय की स्थिति बनी रहती हैं, उन्हें *अनिश्चयवाचक सर्वनाम* कहते हैं। जैसे - कोई जा रहा है। वह कुछ खा रहा है। किसी ने कहा था। वाक्यों में कोई कुछ, किसी शब्द अनिश्चयवाचक सर्वनाम हैं।

4 . प्रश्नवाचक सर्वनाम : वे सर्वनाम , जो प्रश्न का बोध कराते हैं या वाक्य को प्रश्नवाचक बना देते हैं , उन्हें *प्रश्नवाचक सर्वनाम* कहते हैं । जैसे - **कौन** गाना गा रहीं है ? वह **क्या** लाया ? **किसकी** पुस्तक पड़ी है ? उक्त वाक्यों में कौन , क्या , किसकी शब्द प्रश्नवाचक सर्वनाम हैं ।

5 . सम्बन्धवाचक सर्वनाम : वे सर्वनाम , जो दो पृथक् - पृथक् बातों के स्पष्ट सम्बन्ध को व्यक्त करते हैं , उन्हें *सम्बन्धवाचक सर्वनाम* कहते हैं । जैसे - जो वह , जो - सो , जिसकी - उसकी , जितना - उतना , आदि सम्बन्ध वाचक सर्वनाम है । उदाहरणार्थ - **जो** पढ़ेगा **सो** पास होगा । **जितना** गुड़ डालोगे **उतना** मीठा होगा ।

6 . निजवाचक सर्वनाम : वे सर्वनाम , जिन्हें बोलनेवाला कर्ता स्वयं अपने लिए प्रयुक्त करता है , उन्हें *निजवाचक सर्वनाम* कहते हैं । आप , अपना , स्वयं , खुद आदि निजवाचक सर्वनाम हैं । मैं अपना खाना बना रहा हूँ । तुम अपनी पुस्तक पढ़ो आदि वाक्यों में अपना , अपनी शब्द निजवाचक सर्वनाम है ।

✷ विशेषण

परिभाषा : वे शब्द , जो किसी संज्ञा या सर्वनाम शब्द को विशेषता बतलाते हैं , उन्हें *विशेषण* कहते हैं । जैसे नीला - आकाश , छोटी लड़की , दुबला आदमी , कुछ पुस्तकें में क्रमशः नीला , छोटी , दुबला , कुछ शब्द विशेषण हैं , जो आकाश , लड़की , आदमी , पुस्तकें आदि संज्ञाओं की विशेषता का बोध कराते हैं ।

अतः विशेषता बतलाने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं वहीं वह विशेषण पद जिस संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाता है उसे ' *विशेष्य* ' कहते हैं । उक्त उदाहरणों में आकाश , लड़की , आदमी , पुस्तकें आदि शब्द विशेष्य कहलायेंगे ।

प्रकार : विशेषण मुख्यतः 5 प्रकार के होते हैं -

1 . गुणवाचक विशेषण : वे शब्द , जो किसी संज्ञा या सर्वनाम के गुण , दोष , रूप , रंग , आकार , स्वभाव , दशा आदि का बोध कराते हैं , उन्हें *गुणवाचक विशेषण* कहते हैं । जैसे - काला , पुराना , भला , छोटा , मीठा , देशी , पापी , धार्मिक आदि ।

2 . संख्यावाचक विशेषण : वे विशेषण , जो किसी संज्ञा या सर्वनाम की निश्चित , अनिश्चित संख्या , क्रम या गणना का बोध कराते हैं उन्हें *संख्यावाचक विशेषण* कहते हैं । ये भी दो प्रकार के होते हैं - एक वे जो **निश्चित संख्या** का बोध कराते हैं तथा दूसरे वे जो **अनिश्चित संख्या** का बोध कराते हैं जैसे -

(i) निश्चित संख्या वाचक

(अ) गणनावाचक - एक , दो , तीन ।

(आ) क्रमवाचक - पहला , दूसरा ।

(इ) आवृत्तिवाचक - दुगुना , चौगुना ।

(द) समुदाय वाचक - दोनों , तीनों , चारों

(ii) अनिश्चय संख्या वाचक - कई , कुछ , सब , बहुत , थोड़े ।

3 . परिमाण वाचक विशेषण : वे विशेषण , जो किसी पदार्थ की निश्चित या अनिश्चित मात्रा , परिमाण , नाप या तौल आदि का बोध कराते हैं , उन्हें *परिमाण वाचक विशेषण* कहते हैं । इसके भी दो उपभेद किए जा सकते हैं यथा

(i) **निश्चित परिमाण वाचक** : दो मीटर , पाँच किलो , सात लीटर ।

(ii) **अनिश्चित परिमाण वाचक** : थोड़ा , बहुत कम , ज्यादा , अधिक , जरा - सा , सब आदि ।

4 . संकेतवाचक विशेषण : वे सर्वनाम शब्द , जो विशेषण के रूप में किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं , उन्हें *संकेतवाचक* या सार्वनामिक विशेषण कहते हैं । जैसे - (i) इस गेंद को मत फेंको । (ii) उस पुस्तक को पढ़ । (iii) वह कौन गा रही है ? वाक्यों में इस , उस , वह आदि शब्द संकेतवाचक विशेषण हैं ।

5 . व्यक्तिवाचक विशेषण : वे विशेषण , जो व्यक्तिवाचक संज्ञाओं से बनकर अन्य संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाते हैं उन्हें *व्यक्तिवाचक विशेषण* कहते हैं । जैसे - जोधपुरी जूती , बनारसी साड़ी , कश्मीरी सेब , बीकानेरी भुजिया । वाक्यों में जोधपुरी , बनारसी , कश्मीरी , बीकानेरी शब्द व्यक्तिवाचक विशेषण है ।

विशेष : कतिपय विद्वान् एक और प्रकार -'विभाग वाचक विशेषण ' का भी उल्लेख करते हैं । जैसे प्रत्येक हर एक आदि ।

विशेषण की अवस्थाएँ - विशेषण की तुलनात्मक स्थिति को अवस्था कहते हैं । अवस्था के तीन प्रकार माने गये हैं -

(i) मूलावस्था : जिसमें किसी संज्ञा या सर्वनाम की सामान्य स्थिति का बोध होता है । जैसे - रहीम अच्छा लड़का है ।

(ii) उत्तरावस्था : जिसमें दो संज्ञा या सर्वनाम की तुलना की जाती है । जैसे - अशोक रहीम से अच्छा है । या प्रशान्त अभिषेक से श्रेष्ठतर है ।

(iii) उत्तमावस्था : जिसमें दो से अधिक संज्ञा या सर्वनामों की तुलना करके , एक को सबसे अच्छा या बुरा बतलाया जाता है वहाँ उत्तमावस्था होती है । जैसे - अकबर सबसे अच्छा है । रजिया कक्षामें श्रेष्ठत्तम छात्रा है ।

अवस्था परिवर्तन : मूलावस्था के शब्दों में ' तर ' तथा 'तम' प्रत्यय लगा कर या शब्द के पूर्व से अधिक , या सबसे अधिक शब्दों का प्रयोग कर क्रमशः उत्तरावस्था एवं उत्तमावस्था में प्रयुक्त किया जाता है , जैसे -

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
उच्च	उच्चतर	उच्चतम
श्रेष्ठ	श्रेष्ठतर	श्रेष्ठतम
तीव्र	तीव्रतर	तीव्रतम
अच्छा	से अच्छा	सबसे अच्छा
ऊँचा	से अधिक ऊँचा	सबसे ऊँचा

✷ विशेषण की रचना

संज्ञा , सर्वनाम क्रिया तथा अव्यय शब्दों के साथ प्रत्यय के मेल से विशेषण पद बन जाता हैं ।

(i) संज्ञा से विशेषण बनना : प्यार - प्यारा , समाज - सामाजिक, पुष्प - पुष्पित , स्वर्ण - स्वर्णिम , जयपुर - जयपुरी , धन - धनी , भारत - भारतीय , रग - रंगीला , श्रद्धा - श्रद्धालु , चाचा - चचेरा , विष – विषैला , बुद्धि - बुद्धिमान , गुण - गुणवान , दूर - दूरस्थ ।

(ii)सर्वनाम से विशेषण : यह - ऐसा , जो - जैसा , मैं - मेरा , तुम - तुम्हारा , वह - वैसा , कौन - कैसा ।

(iii)क्रिया से विशेषण : भागना - भगौडा , लड़ना - लडाकू , लूटना - लुटेरा ।

(iv)अव्यय से विशेषण :आगे - अगला , पीछे - पिछला , बाहर - बाहरी ।

✷ क्रिया

परिभाषा : वे शब्द , जिनके द्वारा किसी कार्य को करना या होना पाया जाता है , उन्हें *क्रिया पद* कहते हैं । संस्कृत में क्रिया रूप को **धातु** कहते हैं | हिन्दी में उन्हीं के साथ ' ना ' लग जाता । है जैसे - लिख से लिखना , हँस से हँसना ।

प्रकार : कर्म , प्रयोग तथा संरचना के आधार पर क्रिया के विभिन्न भेद किए जाते हैं

1 . कर्म के आधार पर

कर्म के आधार पर क्रिया के मुख्यतः दो भेद किए जाते हैं- (i) अकर्मक क्रिया (ii) सकर्मक क्रिया ।

(i) अकर्मक क्रिया : वे क्रियाएँ जिनके साथ कर्म प्रयुक्त नहीं होता तथा क्रिया का प्रभाव वाक्य के प्रयुक्त कर्ता पर पड़ता है , उसे *अकर्मक क्रिया* कहते हैं । जैसे - कुत्ता भौंकता है । कविता हँसती हैं । टीना सोती है । बच्चा रोता है । आदमी बैठा है ।

(ii) सकर्मक क्रिया : वे क्रियाएँ , जिनका प्रभाव वाक्य में प्रयुक्त कर्ता पर न पड़ कर कर्म पर पड़ता है । अर्थात् वाक्य में क्रिया के साथ कर्म भी प्रयुक्त हो , उन्हें *सकर्मक क्रिया* कहते हैं । जैसे - भूपेन्द्र दूध पी रहा है । नीतू खाना बना रही है ।

सकर्मक क्रिया के दो उपभेद किये जाते हैं -

(अ) **एक कर्मक क्रिया :** जब वाक्य में क्रिया के साथ एक कर्म प्रयुक्त हो तो उसे एक कर्मक क्रिया कहते हैं । जैसे - दुष्यन्त भोजन कर रहा है ।

(आ) **द्विकर्मक क्रिया :** जब वाक्य में क्रिया के साथ दो कर्म प्रयुक्त हुए हों तो उसे द्विकर्मक क्रिया कहते हैं । जैसे - अध्यापक जी छात्रों को भूगोल पढ़ा रहे हैं । इस वाक्य में '**पढ़ा रहे हैं** ' क्रिया के साथ ' **छात्रों** ' एवम् ' **भूगोल** ' दो कर्म प्रयुक्त हुए हैं । अतः ' पढ़ा रहे हैं '। द्विकर्मक क्रिया है ।

2 . प्रयोग तथा संरचना के आधार पर

वाक्य में क्रियाओं का प्रयोग कहाँ किया जा रहा है , किस रूप में किया जा रहा है , इसके आधार पर भी क्रिया के निम्न भेद होते हैं |

(i) सामान्य क्रिया : जब किसी वाक्य में एक ही क्रिया का प्रयोग हुआ हो , उसे सामान्य क्रिया कहते हैं । जैसे - महेन्द्र जाता है । सन्तोष आई ।

(ii) संयुक्त क्रिया : जो क्रिया दो या दो से अधिक भिन्नार्थक क्रियाओं के मेल से बनती हैं , उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं । जैसे जया ने खाना बना लिया । हेमराज ने खाना खा लिया ।

(iii) प्रेरणार्थक क्रिया : ये क्रियाएँ , जिन्हें कर्ता स्वयं न करके दूसरों को क्रिया करने के लिए प्रेरित करता है , उन क्रियाओं को प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं । जैसे - दुष्यन्त हेमन्त से पत्र लिखवाता है । कविता सविता से पत्र पढवाती है ।

(iv) पूर्वकालिक क्रिया : जय किसी वाक्य में दो क्रियाएँ प्रयुक्त हुई हों तथा उनमें से एक क्रिया दूसरी क्रिया से पहले सम्पन्न हुई हो तो पहले सम्पन्न होने वाली क्रिया पूर्व कालिक क्रिया कहलाती हैं । जैसे - धर्मेन्द्र पढ़कर सो गया । यहाँ सोने से पूर्व पढ़ने का कार्य हो गया अतः पढ़कर क्रिया पूर्वकालिक क्रिया कहलाएगी । (किसी मूल धातु के साथ **'कर'** या **'करके'** लगाने से पूर्वकालिक क्रिया बनती है ।)

(v) नाम धातु क्रिया : वे क्रिया पद , जो संज्ञा , सर्वनाम , विशेषण आदि से बनते हैं , उन्हें नामधातु क्रिया कहते हैं । जैसे - रंगना , लजाना , अपनाना , गरमाना , चमकाना गुदगुदाना ।

(vi) कृदन्त क्रिया : वे क्रिया पद जो क्रिया शब्दों के साथ प्रत्यय लगने पर बनते हैं , उन्हें कृदन्त क्रिया पद कहते हैं । जैसे - चल से चलना , चलता , चलकर । लिख से लिखना , लिखता , लिखकर ।

(vii) सजातीय क्रिया : ये क्रियाएँ , जहाँ कर्म तथा क्रिया दोनों एक ही धातु से बनकर साथ प्रयुक्त होती है । जैसे भारत ने लड़ाई लड़ी ।

(viii) सहायक क्रिया : किसी भी वाक्य में मूल क्रिया की सहायता करने वाले पद को सहायक क्रिया कहते हैं । जैसे - अरविन्द पढता है । भानु ने अपनी पुस्तक मेज पर रख दी है ।
उक्त वाक्यों में ' है 'तथा 'दी ' हैं सहायक क्रियाएँ हैं ।

3 . काल के अनुसार

जिस काल में कोई क्रिया होती है , उस काल के नाम के आधार पर क्रिया का भी नाम रख देते हैं । अतः काल के अनुसार क्रिया तीन प्रकार की होती है -

(i) भूतकालिक क्रिया : क्रिया का वह रूप , जिसके द्वारा बीते समय में (भूतकाल में) कार्य के सम्पन्न होने का बोध होता है । जैन - सरोज गयी । सलीम पुस्तक पढ़ रहा था ।

(ii) वर्तमान कालिक क्रिया : क्रिया का वह रूप , जिसके द्वारा वर्तमान समय में कार्य के सम्पन्न होने का बोध होता है । जैसे - कमला गाना गाती है । विमला खाना बना रही है ।

(iii) भविष्यत् कालिक क्रिया : क्रिया का वह रूप , जिसके द्वारा आने वाले समय में कार्य के सम्पन्न होने का बोध होता है । जैसे - नीलम कल जोधपुर जायेगी । अशोक पत्र लिखेगा ।

✺ अविकारी / अव्यय शब्द

✷ क्रिया - विशेषण

वे अविकारी या अव्यय शब्द , जो क्रिया की विशेषता बतलाते हैं , उन्हें *क्रिया विशेषण* कहते हैं ।

प्रकार : क्रिया विशेषण शब्द मुख्यतः 4 प्रकार के होते हैं , जबकि कतिपय विद्वान् इसके भेद निम्नानुसार करते हैं |

(i) कालबोधक क्रियाविशेषण : वे अव्यय शब्द जो क्रिया के होने या करने के समय का बोध कराते हैं । जैसे - कब , जब , कल , आज , प्रतिदिन , प्रायः , सायं , अभी - अभी , लगातार अब , तब , पहले , बाद में ।

(ii) स्थानबोधक क्रिया विशेषण : वे अव्यय शब्द जो क्रिया के स्थान या दिशा का बोध कराते हैं । जैसे - ऊपर , नीचे , पास , दूर , इधर , उधर यहाँ , वहाँ , जहाँ , तहाँ , दाएँ , बाएँ , निकट , सामने , अन्दर , बाहर ।

(iii) परिमाण बोधक क्रिया - विशेषण : वे अव्यय शब्द , जो क्रिया के होने की मात्रा या परिमाण का बोध कराते हैं । जैसे - बहुत , अति , सर्वथा , कुछ , थोड़ा , बराबर , ठीक , कम , अधिक , बढ़कर , थोड़ा - थोड़ा , उतना , जितना , खूब ।

(iv) रीतिबोधक क्रिया - विशेषण : वे अव्यय शब्द , जो क्रिया के होने की रीति या ढंग का बोध कराते हैं । जैसे - धीरे - धीरे , सहसा , शीघ्र , तेज , मीठा , शायद , मानो , ऐसे , अचानक , स्वयं , यथाशक्ति , निःसन्देह ।

(v) कारण बोधक क्रियाविशेषण : वे अव्यय शब्द , जो क्रिया के कारण को प्रकट करते हैं । जैसे - इस तरह , अतः , किस प्रकार ।

(vi) स्वीकारबोधक क्रिया विशेषण : वे अव्यय , शब्द , जो क्रिया की स्वीकृति को प्रकट करते हैं । जैसे - अवश्य , बहुत अच्छा ।

(vii) निषेधबोधक क्रियाविशेषण : वे अव्यय शब्द , जो क्रिया के निषेध को प्रकट करते हैं । जैसे - न , नहीं , मत ।

(vii) प्रश्न वाचक क्रियाविशेषण : वे अव्यय शब्द , जो क्रिया के प्रश्न को प्रकट करते है । जैसे - कहाँ , कब ।

(ix) निश्चयबोधक क्रियाविशेषण : वे अव्यय शब्द , जो क्रिया के निश्चय को प्रकट करते हैं । जैसे - वास्तव में , मुख्यतः ।

(x) अनिश्चयबोधक क्रियाविशेषण : वे अव्यय शब्द , जो क्रिया के अनिश्चय को प्रकट करते हैं । जैसे - शायद , संभवतः ।

(क्रिया - विशेषण और संबंध - बोधक में अन्तर - आगे , पीछे , नीचे आदि शब्द ऐसे हैं जो क्रिया विशेषण भी हैं तथा संबंध बोधक अव्यय भी । यदि इन शब्दों का प्रयोग क्रिया की विशेषता प्रकट करने के लिए होगा , तो वे क्रिया विशेषण कहलायेंगे , किन्तु जब वे संज्ञा या सर्वनाम का संबंध वाक्य के अन्य शब्दों के साथ बताएँगे , तब इन्हें सम्बन्ध बोधक अव्यय कहेंगे ।)

✷ समुच्चय बोधक अव्यय

अव्यय शब्द , जो दो शब्दों , वाक्यांशों या वाक्यों को जोड़ते हैं , उन्हें *समुच्चय बोधक अव्यय* या संयोजक शब्द कहते हैं ।

प्रकार : समुच्चय बोधक अव्यय मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं । (i) संयोजक(ii) विभाजक

(i) संयोजक : वे अव्यय शब्द , जो दो शब्दों , वाक्यांशों या वाक्यों को जोड़ते हैं । जैसे - और , तथा , एवं , तो , जो , फिर , यथा , यदि , पुनः , इसलिए , कि , मानो आदि ।

(ii) विभाजक : वे अव्यय शब्द , जो दो शब्दों , वाक्यांशों या वाक्यों में विभाजन का बोध कराते हैं । जैसे - किन्तु , परन्तु , पर , वरना , बल्कि , अपितु , क्योंकि , या , चाहे , ताकि यद्यपि , अन्यथा आदि ।

✸ सम्बन्ध बोधक अव्यय

वे अव्यय शब्द , जो किसी संज्ञा या सर्वनाम शब्द के साथ लगकर उसका सम्बन्ध वाक्य में प्रयुक्त अन्य शब्द से बताते हैं , उन्हें सम्बन्ध बोधक अव्यय कहते हैं ।

प्रकार : सम्बन्ध बोधक अव्यय निम्न 10 प्रकार के होते हैं -

(i) काल वाचक : पहले , पीछे , उपरान्त , आगे ।

(ii) स्थानवाचक : सामने , भीतर , निकट , यहाँ ।

(iii) दिशावाचक : आसपास , ओर , पार , तरफ ।

(iv) समतावाचक : भाँति , समान , तुल्य , योग ।

(v) साधनवाचक : द्वारा , सहारे , माध्यम ।

(vi) विषयवाचक : विषय , भरोसे , बाबत , नाम ।

(vii) विरुद्धवाचक : विपरीत , विरुद्ध , खिलाफ , उलटे ।

(viii) संग वाचक : साथ , संग , सहचर ।

(ix) हेतु वाचक : सिवा , लिए , कारण , वास्ते ।

(x) तुलनावाचक : अपेक्षा , आगे , सामने ।

✸ विस्मयादिबोधक अव्यय

वे अव्यय शब्द , जो आश्चर्य , विस्मय , शोक , घृणा , प्रशंसा , प्रसन्नता , भय आदि भावों का बोध कराते हैं , उन्हें *विस्मयादिबोधक अव्यय* कहते हैं ।

प्रकार : उक्तभावों के अनुसार इनके निम्न भेद किए जाते हैं :

(i) आश्चर्य बोधक : क्या , अरे , अहो , हैं , सच , ओह , ओहो , ऐं ।

(ii) शोक बोधक : उफ , आह , हाय , हेराम , राम - राम ।

(iii) हर्ष बोधक : वाह , धन्य , अहा ।

(iv) प्रशंसा बोधक : शाबाश , वाह , अति सुन्दर ।

(v) क्रोध बोधक : अरे , चुप ।

(vi) भय बोधक : हाय , बाप रे ।

(vii) चेतावनी बोधक : खबरदार , बचो , सावधान ।

(viii) घृणा बोधक : छिः छिः , धिक्कार , उफ् , धत् , थू - थू ।

(ix) इच्छा बोधक : काश , हाय ।

(s) सम्बोधन बोधक : अजी , हे , अरे , सुनते हो ।

(ii) अनुमोदन बोधक : अच्छा , हाँ , हाँ - हाँ , ठीक ।

(iii) आशीर्वाद बोधक : शाबाश , जीते रहो , खुश रहो ।

सभी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए
राजस्थान क्लासेज

Download More Pdf-
www.rajasthanclasses.in

10:31
55%
सभी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए
राजस्थान क्लासेज
Editable JavaScript TreeGrid
Universal and fully featured web component to display and edit data in grid and tree view.
Open
TreeGrid.com
HOME
राजस्थान GK
INDIA GK QUIZ
SSC PORTAL
LATEST JOB ALERT
SCIENCE GK
LATEST POST
MORE
RAJASTHAN GK
INDIA GK
SCIENCE
MATHS
HINDI
COMPUTER
QUIZ'S
Best Platform For All Govt Exam's
Rajasthan Classes
Test Series,Quiz & Result
E-Notes, PDF, Job News
प्रिय विद्यार्थियों राजस्थान क्लासेज के इस website प्लेटफार्म पर हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन है , आपको सूचित करते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि यहाँ पर आपके परीक्षा से सम्बन्धित निशुल्क स्टडी मटेरियल उपलब्ध करवाया जाता है! जैसे आगामी भर्ती परीक्षाओ हेतु सभी विषयों के गुणवतायुक्त वीडियो लेक्चर,नवीनतम पाठ्यक्रम, जीके क्विज, PDF नोट्स, करेंट अफेयर्स,एग्जाम अपडेट,इत्यादि निशुल्क कटेंट आप तक पहुचाया जायेगा जो आपकी तैयारी को नई दिशा दे सके!
राजस्थान पुलिस कांस्टेबल
Complete Course
301/- Now Free
राजस्थान सामान्य ज्ञान
All Test Quiz
For AlL Exam's
राजस्थान सामान्य ज्ञान
हस्तलिखित नोट्स
निशुल्क डाउनलोड
SSC Exam's
CGL-CHSL-MTS-GD
Top Questions
Latest Job's Update
See All Update
Exam Date News
हमारे इतिहास के अनसुने किस्से कहानियां
भारत सामान्य ज्ञान
सम्पूर्ण टेस्ट क्विज
अपनी तैयारी को परखें
सम्पूर्ण नोट्स PDF
विषयवार ई-बुक
सभी PDF यहां से डाउनलोड करें
Amazing Fact
रोचक तथ्य
किस्से कहानियां